MAULANA WAHIDUDDIN KHAN
BIG BIRDS OF THE STORM

गणि राजेन्द्र विजय
क्या है स्वस्थ सामाजिकता

www.sukhiparivar.com

₹25

समृद्ध सुखी परिवार

फरवरी 2011

भारत निर्माण में आध्यात्मिक मूल्यों की भूमिका

जरूरी है परिवार में सामंजस्य

आत्मीयता की पराकाष्ठा होती हैं बेटियां

वसंत पर विशेष

प्रातहि जगावत गुलाब

हम अपने जीवन में मधुमास लाएं

वसंत को उसकी संपूर्णता में जीएं

VASU CREATION

B-4/1626,RAI BAHADUR ROAD,LUDHIANA - 141 008

Phone No. 0161-2740154, 98142-62392

Mfrs. of PREMIUM RANGE OF GIRLS, LADIES & GENTS NIGHT WEARS,

-: SPECIALISTS IN :-

❖LONG KURTA ❖3PC SET ❖MATERNITY WEAR ❖JIM WEAR ❖CAPRI SET & SLEX SUIT.

समृद्ध सुखी परिवार

सुखी और समृद्ध परिवार का मुखपत्र

वर्ष : 2 अंक : 1

फरवरी 2011, मूल्य : 25 रु.

मार्गदर्शक
गणि राजेन्द्र विजय

परामर्शक
मनीष जैन
अध्यक्ष: सुखी परिवार फाउंडेशन

संपादक
ललित गर्ग
(9811051133)

लेआउट आर्टिस्ट
एम एस बोरा
(9910406059)

संपादक मंडल
दीपक रथ, मितेश जैन, चेतन आर. जैन,
दीपक जैन-भायंदर,
श्रेणिक एम. जैन-मुंबई, निकेश जैन,
चंदू वी. सोलंकी-बैंगलोर,
राजू वी. देसाई-अहमदाबाद,
मुकेश अग्रवाल-दिल्ली

विज्ञापन प्रतिनिधि
जसवंत परमार

: शुल्क :
वार्षिक: 300 रु.
दस वर्षीय: 2100 रु.
पंद्रह वर्षीय: 3100 रु.

कार्यालय
ई-253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट
25 आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज
दिल्ली-110092
फोन: 011-22727486, 43057823
E-mail : lalitgarg11@gmail.com

क्या है स्वस्थ सामाजिकता

बंधन और बेड़ियों को तोड़ने तुड़वाने वाला व्यक्तित्व बलवान, संयमी और वीर होगा तो अवश्य तोड़ देगा–तुड़वा देगा। क्षणिक उत्साह में आकर भावुकता की उथल पुथल में जो प्रयत्न किये जाते हैं, वे सागर की लहरों की तरह केवल क्षण भर उछल कर, उफन कर नष्ट होने की तरह ही–नष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार के सुधारकों के पीछे ठोस चिंतन का बल नहीं होता। अपितु भावना का उफान होता है, जो दूध की तरह उफन कर नष्ट हो जाता है। महावीर के युग में समाज सुधार के प्रयत्न इसीलिए असफल हुए। उन सुधारकों में भी केवल उफान था। उफान से क्रांति या उद्धार नहीं होता। उफान से उद्धार नहीं, नाश होता है।

–गणि राजेन्द्र विजय

6	अहिंसा जीवन का अमृत है	वल्लभ उवाच
6	सही काम के लिए हर वक्त होता है सही	मार्टिन लूथर किंग
8	पर्यावरण शुद्धिकरण है हवन-क्रिया	शिवेन्द्र कुमार पांडे
9	धर्म-ज्ञान-ध्यान से बढ़कर है आचरण	प्रो. चांदमल कर्णावट
10	स्वागत वीणापाणि का	गणेश मुनि शास्त्री
11	हम अपने जीवन में मधुमास लाएं	जयशंकर मिश्र 'सव्यसाची'
12	समग्र विकास एवं जीवन विकास का समन्वय	रामसिंहभाई राठवा
13	भारत निर्माण में आध्यात्मिक मूल्यों की भूमिका	श्री श्री रविशंकर
14	वैवाहिक जीवन में सुखी रहने के सरल सूत्र	बालकवि बैरागी
15	माया से मुक्ति	स्वामी विवेकानंद
15	धर्म को समझें	आचार्य तुलसी
16	प्रातहि जगावत गुलाब	प्रेमकुमारी कटियार
17	वसंत को उसकी संपूर्णता में जीएं	शारदा शुक्ला
18	एक होते भी अनेक रूप वाले हैं शिव	संदीप कपूर
19	यह कैसी विडंबना है जो छूटती नहीं	संत श्री आशाराम बापू
20	सत्यं-शिवं की प्रतीक नारी	डॉ. विद्या विनोद गुप्त
21	पारिवारिक सौहार्द का प्रशिक्षण	साध्वी कल्पप्रसाश्री
22	बर्तनों के ब्रह्मदेव	दीपक जैन
23	न्यूमरोलॉजी में नंबर-1 का महत्व	नीता बोकाड़िया
26	यों टपक पड़ता है जीवन-रस	राजमल डांगी
27	आदिवासी जीवन में उतरती रोशनी	ललित गर्ग
28	अहिंसा ही मनुष्यत्व है	यशवंत कोठारी
29	नमस्कार से होता है उन्नति का मार्ग प्रशस्त	संदीप फाफरिया 'सुमन'
29	गुरु द्रोणाचार्य पुरस्कार क्यों?	रूपनारायण काबरा
30	धर्म की आत्मा	संत मुरारी बापू
31	शाकाहार और स्वास्थ्य	रामनिवास लखोटिया
31	श्रद्धा, अश्रद्धा व अंध श्रद्धा	शिवचरण मंत्री
32	महादेवी पद्मावती	आचार्य विजय वीरेन्द्र सूरी
32	टमाटर और स्वास्थ्य	वैद्य देवदत्त ओझा
33	व्रत कथाओं का सच और स्त्री अधिकार	डॉ. (सुश्री) शरद सिंह
34	मानव जीवन और ज्योतिष	मुरली कांठेड़
35	बच्चों के सपने मत छीनो	सत्य नारायण पंवार
36	ज्ञान का अधिकारी कौन?	आचार्य सम्राट श्री देवेन्द्र मुनिजी
37	ईश्वर व्यक्ति नहीं, शक्ति है	हिम्मत लाल ठक्कर
38	Surrender Yourself for a Peaceful Life	Gani Rajendra Vijay
38	Big Birds of the Storms	Maulana Wahiduddin Khan
39	Be Aware Embrace Life	Acharya Mahaprajna
39	All Reality is Relative	Pranav Khullar
40	गजल के बहाने	सुरेश पंडित
41	जरूरी है परिवार में सामंजस्य	मंजुला जैन
42	जनआस्थाओं पर खरी उतरती कृति	डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी
42	ज्वलंत मुद्दे की संवेदनशील प्रस्तुति	बरुण कुमार सिंह
43	बेटियां आत्मीयता की पराकाष्ठा हैं	साध्वी कनकश्री
44	जैसा चाहो वैसा बन जाओ	डॉ. हीरालाल छाजेड़ 'जैन'
45	खाद्य पदार्थों की पौष्टिकता बचाएं	डॉ. अनामिका प्रकाश
46	नयी सोच के ढर्रे में ढलें	मनीष जैन

Published, Printed, Edited and owned by Lalit Garg from E-253, Saraswati Kunj Appartment, 25 I.P. Extn. Patparganj, Delhi-110092. Printed at : Bookman Printers, A-121, Vikas Marg, Shakarpur, Delhi-110092.
Editor : Lalit Garg

समृद्ध सुखी परिवार पत्रिका सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक एवं मानवीय मनोवैज्ञानिक समस्या समाधान सभी कुछ प्रस्तुत करती हुई एक संपूर्ण पत्रिका है। यह आपके सुसंपादन एवं साहित्यिक कलात्मक विशिष्ट ज्ञान के साथ प्रस्तुत हो रही है। सर्वत्र स्वागत योग्य है। लगभग सभी रचनाएं उपयोगी एवं संदेश लिये होती है।

–पी. डी. सिंह
निदेशक टैगोर स्कूल, जयपुर

समृद्ध सुखी परिवार पत्रिका के दिसम्बर अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका का आवरण, पेपर और मुद्रण तो आकर्षक है ही, हर लेख व विचारों से संबद्ध चित्र बहुत अनुकूल और प्रभावशाली है। पुस्तक से रोगोपचार एक अनूठा विषय है। सहिष्णुता तथा अहंकार की चर्चा अंतर्मन की सीख है। 'स्वयं के प्रति जागरूक बनें' 'बच्चा बनें', पारिवारिक शांति का महामंत्र, थोड़े में बहुत कुछ सिखाती है। कटते पेड़.... वाला लेख वर्तमान समस्या पर एक दृष्टिपात है। कुल मिलाकर अंक पठनीय, उपयोगी, हितकारी लगा। बधाई एवं नववर्ष की शुभकामना स्वीकारें।

–शुभदा पांडेय
असम विश्वविद्यालय, सिलचर-788011

समृद्ध सुखी परिवार पत्रिका का दिसम्बर-2010 अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका पढ़कर मन प्रफुल्लित हो उठा। निरंतर उत्कृष्टता के नये सोपान चढ़ते हुए इस बार भी पत्रिका के कलेवर में जो कुछ संजोया है, वह श्रेष्ठ संपादन का उदाहरण है। यह पत्रिका न केवल अंतरंग व बहिरंग दोनों दृष्टि से चिताकर्षक है अपितु सामग्री की दृष्टि से भी परिपूर्ण है। उत्तरोत्तर प्रगति एवं स्वर्णिम भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

–श्याम सुंदर गर्ग
10 पी 23, आर.सी.व्यास कॉलोनी
भीलवाड़ा-311001 (राजस्थान)

समृद्ध सुखी परिवार मासिक पत्रिका प्राप्त हुई। अर्से के बाद एक उम्दा पत्रिका पढ़ने को मिली। बहुत-बहुत धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित समग्र सामग्री जीवन बाबत बड़ी उपयोगी लगी तथापि संपादकीय, गणि राजेन्द्र विजय का आलेख एवं योगेश चंद्र शर्मा, विवेक शुक्ल भारद्वाज, मनीष जैन के आलेख भी अधिक सुंदर लगे। पत्रिका पत्रकारिता के धर्म का सार लगी।

–किशन धीरज
सूरजपोल, कांकरोली, राजसमंद

समृद्ध सुखी परिवार प्यारी-सी पत्रिका मिली, विनम्र आभार। इतनी उत्कृष्ट, आकर्षक, ज्ञान-विज्ञान से सराबोर पत्रिका, क्या कहने, आनंद आ गया। वाकई, इसकी जितनी प्रशंसा की जाए,, कम है। शब्द-शब्द पठनीय, मननीय है। पूरी पत्रिका संग्रहणीय भी है। आपको ढेर सारा साधुवाद।

–कृष्णा कुमारी 'कमसिन'
कोटा (राज.)

समृद्ध सुखी परिवार मासिक पत्रिका का दिसम्बर-2010 अंक पढ़ने का सौभाग्य मिला। अध्यात्म, ज्ञान और सामाजिक सरोकार की त्रिवेणी पाकर मन गद्‌गद् हो उठा। इतने कम समय में ऐसी स्तरीय पत्रिका के लिए मेरी ओर से समस्त संपादक मंडल एवं स्नेहीजनों को हार्दिक बधाई। 'समृद्ध सुखी परिवार' के लिए उत्तरोत्तर समृद्धि और सुख की कामनाओं के साथ।

–कमलेश व्यास 'कमल'
20/7, कांकरिया परिसर, अंकपात मार्ग
उज्जैन-456006 (म.प्र.)

समृद्ध सुखी परिवार पत्रिका दिसम्बर-2010 अंक मिला। अध्यात्म, दर्शन, चिकित्सा, संस्कृति एवं ज्योतिष के आलेख, गीत, गजलों

पूज्य गणि राजेन्द्र विजय महाराज के मार्गदर्शन में प्रकाशित पत्रिका अति सुंदर, नैतिक, चारित्रिक तथा आध्यात्मिक विषय के लेखों से परिपूर्ण है जो समाज में 'समृद्ध सुखी परिवार' के संस्कारों से सद्‌प्रवृत्तियों का का विकास करेगी। पत्रिका प्रकाशन के उद्देश्यों की सफलता के लिए प्रभु श्रीराम के चरणों में विनम्र प्रार्थना है।

–अशोक सिंघल
अध्यक्ष : विश्व हिन्दू परिषद
संकट मोचन आश्रम (हनुमान मंदिर),
सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-110022

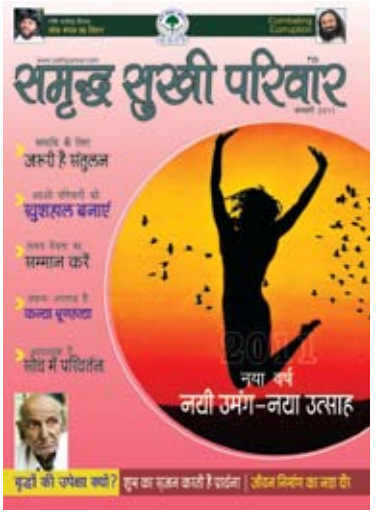

आदि से परिपूर्ण पत्रिका पढ़कर मैं प्रभावित हुआ। मैं चौंक गया, सुखद अनुभूति हुई, पत्रिका का गेटअप ही नहीं, सामग्री को देखकर।

ईश्वर से प्रार्थना है कि आप जिस स्तरीय मासिक पत्रिका का संपादन कर रहे हैं, उसकी महत्ता दिनोंदिन बढ़ती रहे। प्रो. योगेश चंद्र शर्मा, विवेक शुक्ल 'भारद्वाज', जे. एल. अग्रवाल, आचार्य कृष्णदत्त शर्मा को साधुवाद। इसी प्रकार से 'समृद्ध सुखी परिवार' मासिक पत्रिका द्वारा अनेक सुधी पाठकों व रचनाकारों का मार्ग प्रशस्त करेंगे व प्राणमयी प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

–ओम प्रकाश 'दार्शनिक'
ए.डी.ए. फ्लैट नं. 2/2ए अलोपीबाग
प्रयागराज-211006 (उ.प्र.)

वर्तमान समय में पत्र-पत्रिकाओं की बाढ़ आ रही है। प्रत्येक पंथ, सम्प्रदाय और अनेकानेक संत अपने-अपने विचारों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए साप्ताहिक, पाक्षिक एवं मासिक पत्रों का प्रकाशन अपने-अपने समूह से प्रकाशित करा रहे हैं। ऐसे पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से अपना, अपने गच्छ-सम्प्रदाय या फिर अपने आचार्य की कीर्ति पताका फहराने का प्रयास करते हैं, ऐसे में आपका यह अंक उन सबसे हट कर एक अलग पहचान बनाने वाला लगा, व्यापक सोच एवं परिवेश लिए है यह प्रयास स्वागत योग्य ही नहीं, अभिनंदनीय भी है और अनुकरणीय भी है।

मैंने अंक के प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित पूज्य गणि राजेन्द्र विजयजी के विचारों से लेकर पुस्तक समीक्षा तक को एक बार में ही बैठकर पढ़ा और प्रत्येक रचना का सूक्ष्म अवलोकन भी किया है। अनेक प्रकार की पठनीय सामग्री और वर्तमान के अनेक जीवंत पहलुओं पर भी बहुत कुछ पढ़ने को मिला, यह एक शुभ संकेत हैं। आशा है आप और आपका प्रकाशन मंडल इस प्रतिष्ठा को बनाये रखेगा। प्राचीन साहित्य, कला, संस्कृति को छूते हुए आलेख दीजिए, आपका प्रयास और पत्रिका और ज्यादा मुखरित होगा।

–फतहसिंह लोढ़ा
सरस्वती विहार, सेशन कोर्ट के सामने
भीलवाड़ा-311001 (राजस्थान)

संपादकीय

हर समर्थ आदमी अपने से कमजोर का सहायक बने

सबसे बड़े धनाढ्यों में शुमार होने वाले मुकेश अंबानी ने पांच प्राणियों के रहने के लिये पांच हजार करोड़ की लागत से घर बनाकर क्या जताना चाहा है। वे इतनी बड़ी रकम से कोई आदर्श उदाहरण प्रस्तुत कर सकते थे, जैसा कि अमेरीका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन, वॉरेन बफेट, कम्प्यूटर जगत के बादशाह बिल गेट्स, अजीम प्रेमजी आदि ने किया है। इन लोगों ने दुनिया से गरीबी दूर करने, सेवा एवं जनकल्याण के लिये, शिक्षा और चिकित्सा के लिये अपने अर्जित ध्न का विसर्जन किया है। संतुलित समाज निर्माण के सपने को आकार देने की दिशा में कदम बढ़ाये हैं।

धन के बढ़ते प्रवाह में दो तरह की स्थितियां देखने को मिल रही है। एक स्थिति में अर्थ के सर्वोच्च शिखरों पर पहुंचे कुछ लोगों ने जनसेवा एवं जन-कल्याण के लिये अपनी तिजोरियां खोल रहे हैं तो दूसरी स्थिति में जरूरत से ज्यादा अर्जित धन का बेहूदा एवं भोंडा प्रदर्शन कर रहे हैं। जहां कुछ वैभवसम्पन्न घराने आदर्श बन रहे हैं तो वहीं कुछ तिरस्कार की दृष्टि से देखे जा रहे हैं। अर्थ एवं विकास के असन्तुलन से अनेक समस्याएं पैदा की है और उन्हीं से आतंकवाद, नक्सलवाद, माओवाद पैदा होते हैं।

भारत में प्रति व्यक्ति सालाना औसत आय पैंतालीस हजार बताई जाती है। गरीबी की रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले लगभग कुल आबादी के पैतीस प्रतिशत लोगों की सालाना आय पांच हजार रूपये से अधिक नहीं है। हाल ही में हमने नयेवर्ष का स्वागत करते हुए महानगरों ही नहीं छोटे कस्बों तक मे जो जश्न मनाये उनमें बड़े लोगों की बात छोड़ दे तो एक सामान्य आय वाले बड़े वर्ग ने भी हजारों रूपये खर्च किए। मुंबई में सहारा परिवार के आंबी वैली में जो जश्न हुआ उसमें प्रत्येक जोड़े से पचास हजार रूपये प्रवेश शुल्क लिया गया। करोडों रूपये फिल्मी हस्तियां को दिया गया। कहां गया सहारा परिवार का आदर्श भारत निर्माण का सपना। सबसे बड़े धनाढ्यों में शुमार होने वाले मुकेश अंबानी ने पांच प्राणियों के रहने के लिये पांच हजार करोड़ की लागत से घर बनाकर क्या जताना चाहा है। वे इतनी बड़ी रकम से कोई आदर्श उदाहरण प्रस्तुत कर सकते थे, जैसा कि अमेरीका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन, वॉरेन बफेट, कम्प्यूटर जगत के बादशाह बिल गेट्स, अजीम प्रेमजी आदि ने किया है। इन लोगों ने दुनिया से गरीबी दूर करने, सेवा एवं जनकल्याण के लिये, शिक्षा और चिकित्सा के लिये अपने अर्जित धन का विसर्जन किया है। संतुलित समाज निर्माण के सपने को आकार देने की दिशा में कदम बढ़ाये है।

'वैष्णव जन तो तेने कहिए' भजन में नरसी मेहता ने एक बात अच्छी प्रकार से कह दी है। 'पर दु:खे उपकार करे' कह कर वे रुक गए होते, तो वैष्णव जनों की संख्या बहुत बढ़ जाती है। 'पर दु:खे उपकार करे तोए मन अभिमान न आणे रे' कह कर नरसी मेहता ने हम सब में छिपे सूक्ष्म अहं को विगलित करने की चेतावनी दी है। पैसे का अहं तो शैतान से भी ज्यादा खतरनाक होता है। विषमता गरीबी को बढ़ा कर ही बढ़ सकती है और साथ ही जब हाथ में एकाएक जरूरत से ज्यादा पैसा आता है तो भोंडापन एवं अहं अपने आप बढ़ता है। इस प्रकार के पैसे और उसके कारण जो चरित्र निर्माण होता है उससे देश मजबूत नहीं बल्कि कमजोर होता है। इस प्रकार बढ़ते नव-धनाढ्यों की लम्बी सूची और उनके भोंडेपन को किसी भी शक्ल में विकास तो कहां ही नहीं जा सकता।

भगवान महावीर ने कहा था कि संसार में लोक कल्याण, विश्वशांति, सद्भाव और समभाव के लिये अपरिग्रह का भाव जरूरी है। यही अहिंसा का मूल आधार है। परिग्रह की प्रवृत्ति अपने मन को अशांत बनाती है और हर प्रकार से दूसरों की शांति को भंग करती है। लेकिन आज बड़ा राष्ट्र छोटे राष्ट्र को हड़पना चाहता है, हर बड़ी मछली छोटी मछली को निगल रही है। धनवान व्यक्ति परिग्रह और अहं प्रदर्शन के द्वारा असहायों एवं कमजोरों के लिये समस्याएं पैदा करता है। यह संसाधनों पर कब्जा ही नहीं करता बल्कि उसका बेहूदा प्रदर्शन करता है, जिससे मानसिक क्रोध बढ़ता है और हिंसा को बढ़ावा मिलता है। महावीर ने इसलिये एक-दूसरे के सहायक बनने की बात कही। उन्हीं के दिये उपदेशों से निकला शब्द है 'विसर्जन'। समतामूलक समाज निर्माण के लिये जरूरी है कि कोई भी कितना ही बड़ा व्यवसायी बने, लेकिन साथ में अपरिग्रहवादी भी बने। अर्जन के साथ विसर्जन की राह पर कदम बढ़ाये। डा. अच्यूता सामंता ने कलिंगा विश्वविद्यालय के रूप में उच्च शिक्षा के बड़े गढ़ स्थापित किये तो उससे होने वाली आय को आदिवासी गरीब बच्चों के कल्याण में विसर्जित किया। 12 हजार से अधिक गरीब बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा देने वाले सामंता आज भी एक चट्टाई पर सोते हैं, उनका कोई आशियाना नहीं है। इसी भांति गणि राजेन्द्र विजयजी अपनी संतता को सार्थक करते हुए आदिवासी कल्याण के लिये अनेक योजनाएं संचालित कर रहे हैं, उनका भी कोई भव्य आश्रम नहीं है। ऐसे ही प्रयत्नों से हम भारत को विकसित होते हुए देख सकते हैं।

गांधीजी ने अहमदाबाद में आश्रम शुरू किया, तब एक समय आर्थिक तंगी के कारण आश्रम बन्द करने की नौबत आयी। गांधीजी मंथन कर रहे थे और आश्रम बन्द होगा, यह बात निश्चित लग रही थी। एक शाम एक सर्वथा अनजाना व्यक्ति आया और रुपयों की एक थैली देकर, साबरमती के अन्धकार में अदृश्य हो गया। आज तक यह पता नहीं लग सका कि 'व्यक्ति' कौन था। आश्रम अगर चालू रह सका, तो उस व्यक्ति के कारण। नि:स्वार्थ, सहज, सात्विक उपकार ऐसा होता है। सही रूप में विसर्जन, बिना किसी अपेक्षा के। ऐसा उपकार मनुष्य पर प्रकृति पल-पल करती रहती है। सूर्य, पृथ्वी, वायु, आकाश एवं जंगलों की तरफ से सतत् होता रहता है--तभी हमारा जीवन है/हम जिन्दा हैं।

उपकार का आनन्द अनुभव करना है तो आपने जो किया उसे जितनी जल्दी ही भूल जाएं और आपके लिए किसी ने कुछ किया, उसे कभी न भूलें। आज जरूरत है हर समर्थ आदमी अपने से कमजोर का सहायक बने। तकलीफ तब होती है जब इसका उल्टा होता है।

वल्लभ उवाच

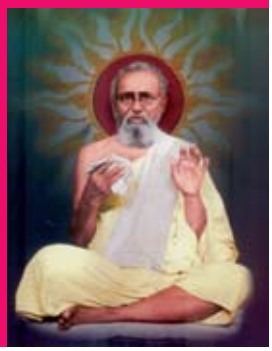

अहिंसा जीवन का अमृत है

अहिंसा का अर्थ इतना ही नहीं कि किसी जीव को न मारो, यह तो अहिंसा का एक निषेध पक्ष है। इस शब्द का आशय बहुत व्यापक है।

यदि विचार किया जाए तो किसी को कष्ट देना, मारना, दुखित करना, या कष्ट उठाने पर बाधित करने का अधिकार किसी को नहीं। जब आप किसी को जीवन दे नहीं सकते, तो उसके जीवन को लेने का अधिकार ही क्या है आपको?

मन, वचन, काया द्वारा किसी को हानि पहुंचाना भी हिंसा की श्रेणी में आता है, क्योंकि इसके द्वारा दूसरे के मन, तन पर एक आघात लगता है, चोट पहुंचती है। चाहे वह कोई जीव हो या प्राणी, मानव या वनस्पति इस सिद्धांत को तो आज का विज्ञान भी नहीं मानता है। सर जगदीशचन्द्र बोस पेड़ों की टहनियों को तोड़ना देखकर रोने लगते थे।

पेड़ पौधे, पशु-पक्षी, जीव सब में रूदन, हंसी, अनुभव, सुख, दु:ख समझने की शक्ति को आज नास्तिक विज्ञान भी मानता है।

फिर अपने किसी कृत्य द्वारा, किसी भी वस्तु को हानि पहुंचाने का विचार करना या पहुंचाना भी हिंसा ही तो है।

आप अपने ऊपर ही घटित कीजिये इस तथ्य को, एक अंगुली के बदले तीन अंगुलियां उठ जाती हैं।

आपको एक कांटा लग जाए क्या अनुभव होगा?

आपको मारने की धमकी दे दी जाए कैसा लगेगा आपको।

आपको यदि किसी भावी आघात की शंका करा दी जाए तो क्या होगी आपकी मानसिक स्थिति?

स्वयं पर इन परिस्थितियों को घटाइये।

क्या आप पीड़ा, दु:ख, कष्ट, डर को सहने की शक्ति रखते हैं। जब नहीं, तो फिर किसी को देने का अधिकार भी नहीं रखते।

आप दूसरों पर यही घटित होने या करने की आशा क्यों करते हैं?

हिंसा से द्वेषभाव पैदा होता है, और यही शत्रुता तथा अन्याय और पाप को जन्म देती है।

अत: अहिंसा का मुख्य उद्देश्य प्राणी मात्र पर मन, वचन, काया द्वारा दयाभाव रखना, उन्हें अपना रूप समझना है।

द्वेष, क्रोध, आवेश, ईर्ष्या को कम करना, प्रत्येक प्राणी का भला चाहना, कल्याण की भावना को जागृत करना है।

परिवार, समाज एवं राष्ट्र व विश्व को एक रूप समझकर न्याय की दृष्टि पैदा करना-अहिंसा का प्रथम लक्ष्य है। हर जीव में जान है-

जैसे हम अपनी जान को प्यार करते हैं, उसी प्रकार हर जीव करता है। जब हममें अपनी सुरक्षा की भावना है तो हर प्राणी मात्र में वही भावना है और अपनी सुरक्षा हेतु वे अपना प्रतिकार भी करते हैं।

एक छोटी सी चींटी दब जाने पर कैसे काटती है?

एक क्षुद्र कांटा चुभने पर कैसा दर्द देता है?

परन्तु यही कांटे फूलों को जन्म देते हैं।

यहीं चींटिया मानव को परिश्रम और एकता का पाठ सिखाती है, फिर क्या कारण है कि-

''मानव में हिंसा की प्रवृत्ति दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। अपनी जिह्वा के स्वाद और शरीर के लिए वह इन प्राणियों को अपना भोजन बनाने से भी नहीं चूकता। यह पाशविकता मानव को मानवता से दूर पतन की ओर खींच रही है। इसलिए अहिंसा का ज्ञान इसके तत्त्वों को समझने का ज्ञान मानव में उत्पन्न होना आवश्यक है। तभी यह विश्व एक कल्याण मय रणभूमि बन सकता है।''

अहिंसा जीवनामृत है। इसका पान ऐसे कीजिए कि इसकी खुमारी से जीवन आलोकित हो उठे।

फिर ज्योति से ज्योति जलती चली जाएगी। ■

सही काम के लिए हर वक्त होता है सही

■■ मार्टिन लूथर किंग

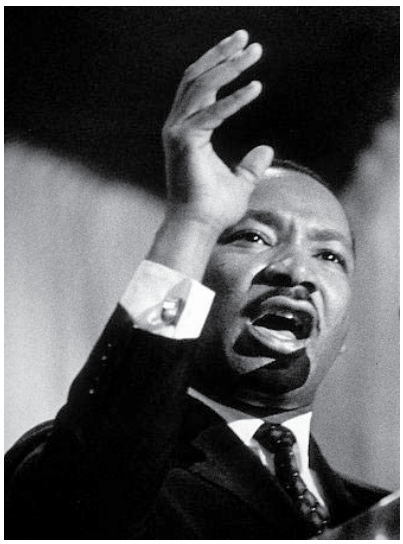

मार्टिन लूथर किंग जूनियर का जन्म 15 जनवरी 1929 को अमेरिका के अटलांटा में हुआ। उन्होंने रंगभेद और नस्लभेद के खिलाफ लंबी लड़ाई लड़ी। वह गांधीजी से प्रेरित थे और उन्हीं के नक्शेकदम पर चलते हुए अहिंसक आंदोलन चलाया। उन्हें अमेरिका का गांधी या जूनियर गांधी भी कहा जाता है। 1964 में उन्हें शांति के लिए नोबल पुरस्कार से नवाजा गया। 4 अप्रैल 1964 को गोली मारकर उनकी हत्या कर दी गई।

- झूठ हमेशा जिंदा नहीं रह सकता।
- आपकी पीठ पर कोई सवारी नहीं कर सकता, अगर वह झुकी हुई न हो।
- अधिकार अगर देर से मिलता है, तो वह अधिकार न मिलने जैसा ही है।
- जो भी चीज हमें दिखती है, वह उस चीज की परछाई है, जो नजर नहीं आती है।
- ऐसा इंसान, जो किसी जीवन मूल्य के लिए जान नहीं दे सकता, वह जीने लायक नहीं है।
- ऐसा देश, जो हल्के विचारों वाले आदमियों को पालता-पोसता है, खुद अपनी आध्यात्मिक मौत की कहानी लिख रहा होता है।
- अहिंसा के केन्द्र में प्यार होता है।
- अंधेरा अंधेरे को खत्म नहीं कर सकता, सिर्फ रोशनी अंधेरे को खत्म कर सकती है। नफरत नफरत को खत्म नहीं कर सकती, सिर्फ प्यार नफरत को खत्म कर सकता है।
- आपको पूरी सीढ़ियां नजर नहीं आ रही हों, तब भी आगे कदम बढ़ाना ही भरोसा कहलाता है।
- दबानेवाला कभी भी अपनी मर्जी से आजादी नहीं देता, बल्कि वंचित के मजबूर किये जाने पर ही वह आजादी मिलती है।
- मेरा सपना है कि दासों के बेटे और उन्हें दास बनाने वालों के बेटे एक दिन एक साथ बैठें।
- आखिर में हमें अपने दुश्मनों के बोल नहीं, बल्कि दोस्तों की चुप्पी याद आती है।
- कहीं भी हो रही नाइंसाफी हर जगह इंसाफ के लिए खतरा है।

दिशाबोध

गणि राजेन्द्र विजय

क्या है स्वस्थ सामाजिकता ?

आडम्बर और जीवन मूल्य दो विपरीत दिशाएं हैं, लेकिन तथाकथित वर्तमान के सामाजिक नेतृत्व ने उन्हें एक करने की कोशिश करते हुए स्वयं को समाज सुधारक बना डाला है। इस नये उभरे सामाजिक नेतृत्व की कथनी और करनी में जमीन–आसमान का अंतर है।

जिस युग में जो परम्परा व विश्वास चल पड़ते हैं उन्हें उखाड़ फेंकना आसान तो नहीं होता है। हम जानते हैं कि समाज में अमुक प्रकार की प्रथा स्वयं सामाजिकों के लिए ही हानिप्रद है अमुक प्रकार की बुराइयां मानव समाज के लिए जान लेवा सिद्ध हो रही हैं–इतना सब कुछ होने पर भी वे बुराइयां समाज के पैरों की बेड़ियां क्यों बनी हुई हैं? प्रयत्न करने पर भी वे क्यों नहीं तोड़ी जा रही हैं।

बंधन और बेड़ियों को तोड़ने तुड़वाने वाला व्यक्तित्व बलवान, संयमी और वीर होगा तो अवश्य तोड़ देगा–तुड़वा देगा। क्षणिक उत्साह में आकर भावुकता की उथल पुथल में जो प्रयत्न किये जाते हैं, वे सागर की लहरों की तरह केवल क्षण भर उछल कर, उफन कर नष्ट होने की तरह ही–नष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार के सुधारकों के पीछे ठोस चिंतन का बल नहीं होता। अपितु भावना का उफान होता है, जो दूध की तरह उफन कर नष्ट हो जाता है। महावीर के युग में समाज सुधार के प्रयत्न इसीलिए असफल हुए। उन सुधारकों में भी केवल उफान था। उफान से क्रांति या उद्धार नहीं होता। उफान से उद्धार नहीं, नाश होता है।

महावीर के अनुयायियों ने उनके दर्शन को जितना ऊंचा बताया, अपने जीवन स्तर को उतना ही नीचे गिरा दिया। यों तो यह असामंजस्य सभी धर्मों में मिलता है पर जितना जैनों में अन्यत्र नहीं। अहिंसा और अपरिग्रह के बारे में उन्होंने जितनी बाते की है, उतनी औरों ने नहीं की। विडम्बना यह है कि उनका आचरण और उनकी जीवन शैली ठीक इसके विपरीत है।

महावीर द्वारा कहा गया हर शब्द उनकी अनुभूतियों से जन्मा सच है। वह केवल उपदेश नहीं है बल्कि पवित्र जीवन जीने की सीढ़ी है। महावीर ने कहा– चल और अचल संपत्ति, धन-धान्य और गृहोपकरण–ये सभी पदार्थ कर्मों से दुख पाते हुए प्राणी को दुख से मुक्त करने में समर्थ नहीं होते हैं। महावीर ने स्वस्थ समाज निर्माण के लिए संयम, सादगी, त्याग के सूत्र दिए जिन्हें अपनाकर हम अपने सामाजिक और पारिवारिक जीवन में अनेक आडम्बरों, प्रदर्शनों, अनावश्यक हिंसा के उपक्रमों को नियंत्रित कर सकते हैं। आज जैन समाज को ज्यादा जरूरत है- महावीर के उपदेशों को अपनाने की। क्योंकि जैन समाज में जिस तरह शादी-विवाह, जन्म संस्कार और ऐसे अन्य मांगलिक अवसरों पर जो भव्य प्रदर्शन और आडम्बर चल रहे हैं वे किसी न किसी रूप में हिंसा के ही कारण हैं।

अहंकार व प्रतिस्पर्धा भरी अपप्रवृत्तियां व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक समरसीकरण में असमानता का विष घोलकर ऐसा अनर्थ घटित करती हैं, जैसा गला काटने वाला शत्रु भी नहीं कर सकता, अहं के नशे में मदहोश और प्रतिस्पर्धा के दूषित प्रवाह में प्रवहमान स्नेह रस से नीरस व्यक्ति, परिवार व समाज से कट जाता है, स्वस्थ जीवन की साख खो बैठता है, पद, यश, सम्मान को शून्य पर ला छोड़ता है, वह अपने अहं पोषण के गर्त में औंधे मुंह ऐसे गिरता है कि– उठाए भी उठ नहीं सकता। लगता है–मानव अस्मिता से जुड़े जीवन्त प्रश्नों को समाहित करने की मानवीय चेतना कुंठित हो चुकी है, सौहार्द और साम्यभाव सो चुका है। शेष रह गया है–दया, करुणा, सहानुभूति व सहयोग-दान के नाम पर अहं का पोषण, बड़प्पन-प्रदर्शन का नंगा नाच और धन-वैभव का भौंड़ा प्रदर्शन। सर्वत्र उन्माद,आतंक एवं अत्याचार! तभी तो साहित्यकार जयशंकर प्रसाद ने 'विजया' कहानी में कहा - अत्याचारी समाज पाप कह कर कानों पर हाथ रखकर चिल्लाता है, वह पाप का शब्द दूसरों को सुनाई पड़ता है, पर वह स्वयं नहीं सुनता।' आज समाज की लगभग यही त्रासद स्थिति बनी हुई है।

विवाह एवं अन्य अवसरों पर बढ़ रहे आडम्बरों एवं प्रदर्शनों के बीच कभी-कभी सुधार की कुछ आवाजें भी सुनने में आ जाती है। विभिन्न मंचों से विवाह सुधार या ऐसे अन्य मांगलिक अवसरों पर बढ़ रहे भौंडे प्रदर्शनों पर नियंत्रण की चर्चा और उससे जुड़े प्रस्ताव–आचार संहिताएं बन रही हैं, पारित हो रही है और एक बड़ी सामाजिक क्रांति जैसा माहौल निर्मित किया जा रहा है लेकिन इन सबकी विडम्बना यह है कि इनको नेतृत्व देने वाला वर्ग स्वयं इन विसंगतियों में आकंठ डूबा हुआ है। इन मंचों पर भी वह पैसे के प्रभाव से अग्रिम पंक्ति, कुर्सी और मंच तो हासिल कर लेता है और लिखे लिखाये भाषण भी पढ़ देता है, यही लोग नियम बनाते भी हैं, तोड़ते भी हैं और नियम बनाने और तोड़नेवाले दोनों की आलोचना भी करते हैं। लेकिन ऐसे नेतृत्व से भला क्या परिवर्तन संभव है? यह तो पीड़ित लोगों पर दोहरी मार प्रतीत होती है। मान-सम्मान और आदर के मूल्य अब आडम्बर रचने में बनते जा रहे हैं। क्योंकि वे ही तथाकथित बड़े लोग भगवान की रथयात्रा में माता-पिता बनने का गौरव पाते हैं, मंदिर के अधिष्ठायक का पद पाते हैं, आचार्य का अभिषेक करते हुए या फिर मंदिर की अंजल शलाका प्रतिष्ठा महोत्सव के मुख्य सूत्रधार बनकर जय-जयकार करवाते हैं। ये सब स्थितियां महावीर के अनुयायियों के लिए शोभनीय नहीं है। महावीर ने इस संदर्भ में कहा- जिस प्रकार ससूत्र (धागे में पिरोई हुई) सुई गिरने पर भी गुम नहीं होती, उसी प्रकार ससूत्र (श्रुत सहित) जीव संसार में रहने पर भी विनष्ट नहीं होता।

आडम्बर और जीवन मूल्य दो विपरीत दिशाएं हैं, लेकिन तथाकथित वर्तमान के सामाजिक नेतृत्व ने उन्हें एक करने की कोशिश करते हुए स्वयं को समाज सुधारक बना डाला है। इस नये उभरे सामाजिक नेतृत्व की कथनी और करनी में जमीन-आसमान का अंतर है। यह नया नेतृत्व बात तो आडम्बर और प्रदर्शन पर नियंत्रण की करता है और स्वयं सबसे आगे आडम्बर और प्रदर्शन की होड़ में शामिल होता है। आडम्बर और मूल्य को एक करने से जो स्थिति बन रही है उसमें आत्मीयता नहीं, औपचारिकता अधिक है। उत्साह नहीं उमड़ता, प्रदर्शन छा जाता है। तृप्ति, खुशी और शांति नहीं मिलती बल्कि मंदता, ईर्ष्या और अशांति बढ़ने लगती है। खाना-खिलाना, आना-जाना, स्वागत-विदाई, देना-लेना–जब सब कुछ औपचारिक रस्म भर हो जाते हैं, तो वहां चीजों का अम्बार तो लगाया जा सकता है, लेकिन अपनापन, ममता और शालीनता नहीं उड़ेले जा सकते।

जन्म, विवाह, सालगिरह, जन्मदिन और मृत्यु जीवन के अनिवार्य कर्म भी रस्मों रिवाज के चक्र में फंसते जा रहे हैं। न जाने क्यों? पर मानव तन की एक दुर्बलता होती है कि वह औरों से स्वयं को अधिक दिखाने का मोह त्याग नहीं सकता, भीतर में कुल-बुलाते अहं को दबा नहीं सकता,

फलतः वह धन-वैभव तथा सत्ता की शक्ति का भौंड़ा प्रदर्शन कर समाज में प्रतिष्ठित होना चाहता है। वह ऐसे किसी अवसर को खोना नहीं चाहता, जिसमें वैभव और शक्ति का प्रदर्शन किया जा सके। विवाह समारोह तो प्रदर्शन का सर्वाधिक उपयुक्त प्रसंग है ही, इसके अतिरिक्त जन्मदिन पुत्र-पौत्र के जन्म प्रसंग, शादी की रजत जयंतियों के समारोह जैसे और भी अनेक प्रसंग आविष्कृत कर लिए गए। किंतु मद में मदमस्त वह अहं का पुतला नहीं सोचता कि–ये भौंडे प्रदर्शन हिंसा को खुला आमंत्रण है, पर्यवेक्षकों के अंतर्मन में पलते दुर्भाव-ज्वालामुखी को फटने का सुलभ अवसर है। एमर्सन ने सटीक कहा है कि समाज सर्वत्र अपने ही सदस्यों में से प्रत्येक के मानवत्व के विरुद्ध षडयंत्ररत है।

आज लेन-देन का रक्तशोषी इकरार, भारी भरकम खर्चीली व्यवस्था का बढ़ता प्रभाव, बारात-भोज में खाद्य पदार्थों का अंबार–सौ– सवा सौ खाद्य–आइटमों का आडम्बर, विवाह मंडपों की चाकचिक्य भरी साज सज्जा का प्रदर्शन, क्या सामाजिक समानता को खंडित नहीं करता है? निश्छल प्रेम-पायस में विष नहीं घोलता है? विवाह-जुलूस में बजने वाले बैंडबाजों के आगे फुहड़ नृत्य करना, नाचने वालों पर नोट बरसाना, शराब का खुला दौर और लाइटिंग शो व हजारों लाखों फूलों की सजावट पर पैसों का भद्दा प्रदर्शन, सामाजिक समरसता के इन समारोहों की आत्मा को ही समाप्त नहीं कर देता है? अनाप शनाप बारूद का प्रयोग बाहरी तथा सामाजिक पर्यावरण प्रदूषण का प्रमुख पर्याय नहीं बनता है? रूप-सौंदर्य व सत्संस्कारों को नजरअंदाज कर व्यक्ति व्यापार और वैभव प्रदर्शन का मंच नहीं बन रहा है? याद रहे, आने वाली पीढ़ी के यथार्थ जीवन के प्रवेश-द्वार-विवाह संस्कार की शुरूआत, शराब व भौतिकता के नशे में मदहोश होकर करेंगे तो आने वाली पीढ़ियां इसी रंग में रंगी जाएगी।

सगे भाई का परिवार या पड़ोसी के नन्हें-नन्हें बच्चे भूख से तड़फ रहे हों या कुपोषण के कारण काल के गाल में समा रहे हों तो भी नहीं जागते सहानुभूति के भाव, नहीं होता रूखे-सूखे अन्नदान का रूख, नहीं होता मेधावी गरीब छात्र के शिक्षा-दान में अवदान, जानलेखा भयंकर व्याधियों से जूझते व्यक्ति को सेवा भरा औषध-दान तो दूर परंतु नहीं कराया जाता आत्मीय भाव भरा मधुर वचन का सुधापान, इधर जन्मदिन मनाने या पुत्र पौत्र के जन्मोत्सव की खुशियों का इजहार करने के उत्सवों में दो-दो हजार लोगों को पिस्ता बरफी, राजभोग एवं अन्य पकवान खिलाये जाते हैं, हंसी-खुशी के माहौल में दिखाया जाता है–फूहड एवं अश्लील नृत्यांगनाओं का नंगा नाच। होता है–कीमती उपहारों- गिफ्टों का आदान प्रदान, क्या यही है स्वस्थ सामाजिकता? क्या यही है–मानवीय संवेदना भरी दयालुता? इसी क्रूर सोच ने जन्म दिया है–विषमता एवं विसंगति को, इसी से फल-फूल रहा है–असंतुलन एवं अस्वस्थ मानसिकता का साम्राज्य। जिसकी निष्पतियां है- ईर्ष्या, घृणा, प्रतिस्पर्धा, लूट-खसोट, हत्या का डरावना-भयावना जंगल। सूख रहा है–शांति, सुखी, संतुष्ट व आनंदमय जीवन का नंदनवन।

भारतीय संस्कृति में विवाह को एक पवित्र संस्कार तथा दो आत्माओं का दूध-मिश्री का मधुर मिलन माना गया है। स्वस्थ समाज रचना का सोचा विचारा सोपान स्नेह सूत्र था विवाह, जिसमें न उन्मुक्त भोग को प्रश्रय था, न सर्वथा दमन जनित कुंठा को अवकाश ही था। विवाह था–समाज संतुलन का सेतु। स्वस्थ सेतु बंधन के हंसी-खुशी भरे पवित्र प्रसंग पर सबके सहभोगी बनने की प्रथा रही है, सर्व सुलभ सीमित पकवानों के सहभोज में समाज के सभी लोग सम्मिलित होते थे, न हीनता को स्थान था और न प्रदर्शन को अवकाश ही था, थी एक सामाजिक शालीन परपंरा, किंतु आज विवाह एक आतंक का पर्याय बन गया है, असामाजिकता एवं अमानवीयता की हद तक हर व्यक्ति इस आतंक को फैला रहा है और राग यह अलाप रहा है कि हम पीड़ित है, दुःखी है।

महावीर ने कहा मनुष्य दो स्थितियों में दूसरों के अस्तित्व पर प्रहार करता है। उनमें पहली है अनिवार्यता और दूसरी है विस्तार की आकांक्षा। आज शादी-विवाह के नाम पर जो वैभव प्रदर्शन हो रहा है वह इसी दूसरी श्रेणी में आता है। हिंसा का मूल यही विस्तार की आकांक्षा है। इस पर नियंत्रण करने के लिए महावीर ने संयम का सूत्र दिया। ■

पर्यावरण शुद्धिकारक है हवन क्रिया

■ शिवेन्द्र कुमार पांडे

यज्ञ क्रिया से रोग व प्रदूषण नियंत्रण के उपायों की स्पष्ट व्याख्या वैदिक ग्रंथों में प्रचुर रूप में उपलब्ध है, इनका प्रमुख आधार है-''जब मादक द्रवों की गंध अग्नि के प्रभाव में तीव्र होकर जीवन-स्वरूपों व पर्यावरण को हानि पहुंचाकर नये विकार उत्पन्न करती है तो रोगनाशक व पौष्टिक द्रव अग्नि के प्रभाव से विखंडित हो सभी जीवधारियों के शरीर व उनके आसपास के पर्यावरण को आरोग्यता प्रदान कर परिस्थितिकीय तंत्र को प्राकृतिक रूप में शुद्धता प्रदान कर सकता है।''

आज आवश्यकता है कि तात्कालिक वैज्ञानिक ज्ञान से डबजोड़ द्वारा आधुनिक प्रयोगशैलियों का निर्माण कर इस वैदिक ज्ञान का लाभ उठाया जाए।

आई.आई.टी. मुम्बई के स्कूल ऑफ बायोमेडिकल इंजीनियरिंग में कार्यरत एसोशिएट प्रोफेसर डॉ. रजनी जोशी द्वारा वर्ष 2000 में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार, वेदों में निर्दिष्ट हवन-सामग्री का विधिवत प्रयोग करने पर यज्ञ-क्रिया भौतिक तत्वों में विद्यमान अतिसूक्ष्म ऊर्जा उपयोग की एक उच्चस्तरीय विधि है। हवन-सामग्री को अग्नि में अर्पित करने पर दहन व आसवन क्रिया साथ-साथ होती है और उससे उत्पन्न/प्रसारित धुआं यज्ञस्थल के आसपास के पर्यावरण को शुद्ध करने की क्षमता रखता है।

धीमी हवन-क्रिया के दौरान वायुमंडलीय ऑक्सीजन का शोषण बहुत कम होता है और कार्बन डाइऑक्साइड का निष्कासन स्तर इतना ही होता है कि उसे आसपास की वनस्पतियां आसानी से ग्रहण करते हुए कार्बन डाइऑक्साइड चक्र को समृद्धता प्रदान करती रहें।''

डॉ. जोशी का कहना है कि हवन-क्रिया एक पारिस्थितिक अनुकूल विधि है जिसे सभी आसानी से अपना सकते हैं, क्योंकि एक व्यक्ति के द्वारा इसे प्रतिदिन करने पर मात्र 200 रुपये एक महीने में खर्च करने होंगे।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वेद-पुराण में प्रस्तुत कार्यविधियां 'एक जाग्रत वैज्ञानिक आधार' पर निर्मित है जिन्हें वर्तमान में भी अपना कर बिना प्रदूषण फैलाये आर्थिक लाभ उठाया जा सकता है। तथापि, इन पद्धतियों को विश्वस्तरीय मान्यता दिलाने के लिए भारतीय वैज्ञानिकों को शोध द्वारा इन्हें आधुनिक वैज्ञानिक-मापदण्डों के अनुरूप परखी हुई कारगर विधि के रूप में प्रस्तुत करना होगा अन्यथा नीम, हल्दी, बासमती आदि के समान विदेशी कंपनियां इनका भी पेटेंट प्राप्त कर आर्थिक लाभ उठाने का प्रयास कर सकती हैं। ■

प्रो. चांदमल कर्णावट

धर्म–ज्ञान–ध्यान से बढ़कर है आचरण

धर्म क्या है? मात्र क्रियाएं धर्म नहीं कही जा सकती। वे भी हमें धर्म के अभिमुख करने वाली हैं। वास्तव में धर्म आचरण है। अहिंसा, संयम, तप उत्कृष्ट धर्म है, संवर निर्जरा धर्म है, समता धर्म है, क्षमा, सरलता, संतोष, विनय धर्म है। सम्यक्ज्ञानादि चतुष्टय धर्म है। धर्म पतनोन्मुख आत्मा का उत्थान करता है। इन सभी सद्गुणों का ज्ञान ही नहीं, आचरण करना धर्म है।

आज धर्म का अर्थ बदलता प्रतीत होता है। आज ज्ञान सीखने को ही धर्म माना जा रहा है। ज्ञान सीखने पर ही जोर दिया जा रहा है। यह तर्क दिया जाता है कि वस्तु-स्वरूप को जाने बिना उसका आचरण कैसे होगा। यह ठीक है परंतु इसका परिणाम यह देखने में आ रहा है कि व्यक्ति ज्ञानवान बन जाता है, वह विद्वान बन जाता है परन्तु वस्तु क्रियावान से एवं विद्वान के अनुसार क्रियावान नहीं बनता, उसका जीवन नहीं बदलता। वह ज्ञान के अनुसार क्रिया और आचरण नहीं करता। उसकी कथनी और करणी में आकाश-पाताल का अंतर दिखाई देता है।

आज आवश्यकता है धैर्य के ऊंचे सिद्धांतों के जीवन में आचरण की। वस्तुतः धर्म आचरण की वस्तु है। वस्तु स्वरूप का कितना ही ज्ञान हो जाए, उस पर श्रद्धा हो जाए परन्तु उसके अनुसार आचरण न हो तो ज्ञान व्यर्थ ही माना जायेगा। वह माथे का बोझ बनकर ही रह जायेगा।

नाणस्स फलं विरतिः शास्त्र का कथन है कि ज्ञान प्राप्ति का फल विरति या त्याग है- हिंसादि पापों का त्याग करना है। ज्ञान की सार्थकता तभी मानी गई है। यदि ज्ञान का फल विरति या पापों का त्याग अथवा व्रत ग्रहण नहीं हुआ तो वह ज्ञान इस अपेक्षा से निष्फल ही माना जायेगा। असदाचरण का त्याग और सदाचरण का धारण ही तो धर्म है।

शास्त्र सूत्रकृतांग का कथन है एवं खु नाणिणो सारं, जं न हिसइ किंचषां अर्थात ज्ञानियों के ज्ञान का सार है कि किसी भी जीव को कष्ट नहीं पहुंचावे। हिंसा में सभी पापों का समावेश हो जाता है और अहिंसा में सभी धर्मों का। अर्थात् ज्ञानियों के ज्ञान का सार यही है कि वे सभी सद्गुणों का आचरण करें, उससे जीवन की दिशा और दशा बदल जाए।

सम्यगदर्शन और आचरणः कहा गया कि सम्यगदर्शन के बिना सारी साधना 1 अंक बिना शून्य के समान है। पूज्य आचार्य आत्मारामजी म.सा. के जैन प्रकाश में प्रकाशित एक लेख में बताया गया कि सम्यग दर्शन होने पर भी यदि पंचम गुणस्थान के अनुसार व्रत ग्रहण नहीं किया गया तो दर्शन मोहनीय के क्षयोपशम होने पर भी चारित्र मोह के क्षयोपशम के बिना श्रद्धा से केवल निर्जरा का लाभ परन्तु संवर नहीं। कर्मबंध की सततता बनी रहेगी। वह हस्ती स्नानवत् होगी।

जघन्य ज्ञान 5 समिति 3 गुप्ति का- शास्त्र भगवती में आराधना के शतक 8 में बताया गया है कि ज्ञान की जघन्य आराधना 5 समिति तीन गुप्ति ही है। यदि इसका सम्यक् आचरण किया जाए, जीवन में आचरण किया जाए तो जीवन का कल्याण हो सकता है। 7-8-15 भवों में उस जीव की भी मुक्ति संभव है। इससे स्पष्ट होता है कि जीवन में ज्ञान थोड़ा भी हो परन्तु उसका सम्यक पालन हो तो वह आत्मोत्थान करने में सक्षम होता है।

दृष्टि पसार कर देखें तो हमें ज्ञात होगा कि अच्छे-अच्छे शास्त्रों के ज्ञाता, बोल, थोकड़ों के जानकार सभी दर्शनों, धर्मों के विद्वान का जीवन कैसा है। उसमें कोई बदलाव नहीं आया है। हिंसा, झूठ, अप्रामाणिकता, मिलावट, रिश्वतखोरी, झूठा नापतौल, व्यसन सेवन, अनेक दुर्गुणों के वे शिकार बने हुए हैं। धन आज धर्म पर हावी हो रहा है। धर्म जाए पर धन नहीं जावे की उक्ति आज हमारे जीवन में चरितार्थ हो रही है।

चारित्र में तप संयम का समोवशः मोक्ष मार्ग का चयन करते हुए तत्वार्थ सूत्र का कथन है सम्यग दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः अर्थात् सम्यग्दर्शनादिनाय मोक्ष मार्ग है। यहां चारित्र में संयम के साथ तप का भी समावेश हुआ है। चारित्र संयम रूप में नवीन कर्मों के बंध को रोकता है, वह संवर है तो चयितरित्तं अर्थात् पूर्वसंचित कर्मों का नाश भी करता है। इस प्रकार वह तप भी है। इस प्रकार चारित्र एवं निर्जरा दोनों का समन्वय है। वह दोनों कार्य करता है।

ज्ञान की सार्थकताः ज्ञान की सार्थकता आचरण से होती है। यदि कोई व्यक्ति स्वयं क्रोध करता हो वह यदि औरों को क्रोध त्याग करने का उपदेश दे तो उसका क्या प्रभाव होगा, यह हर कोई जानता है। इसी प्रकार व्यक्ति चिकित्सक है अनेक औषधियों का ज्ञाता है उसके घर में औषधियां रखी है परन्तु वह औषधि का सेवन नहीं करे तो निरोग कैसे हो सकेगा। संतुलित आहार की जानकारी हो, परन्तु संतुलित आहार करे नहीं तो स्वस्थ कैसे होगा। यात्रा मार्ग की पूर्ण जानकारी हो नियमों उपनियमों का ज्ञान हो परन्तु कोई यात्रा नहीं करे तो गंतव्य स्थान पर पहुंच नहीं सकेगा।

नाणी नवं न बंधईः ज्ञानी के लिए शास्त्र कहता है कि वह नये कर्म नहीं बांधता। इसका अभिप्राय यह हुआ कि वह शुभाशुभ का हिताहित का ज्ञान रखने वाला ज्ञानी ऐसे अशुभ अहितकारी कर्म करता ही नहीं जिससे उसकी आत्मा कर्मफल से मलिन बने। ज्ञानी का लक्ष्य और उसकी पहचान है कि वह नये कर्म नहीं बांधता अर्थात ऐसे कार्यों से बचता है, ऐसे कार्य नहीं करता जिससे अशुभ कर्मों का बंध हो।

विद्वान से अधिक आदरणीय चारित्रवानः भले ही कोई अधिक जानकारी न रखता हो, विद्वान न हो परन्तु चारित्रवान हो तो उसके प्रति श्रद्धा से सबके मस्तक झुक जाते हैं। इसके विपरीत विद्वान हो परन्तु कथनी-करनी में अंतर हो, चारित्रवान न हो तो उसे वह आदर प्राप्त नहीं होता। कहा भी गया है चरित्र चला गया तो सब कुछ चला गया। जन-जन में आस्था का केन्द्र बनता है चारित्रवान।

ज्ञान की महिमा है परन्तु वह ज्ञानी के चरित्र से है। ज्ञान की सार्थकता भी तदनुसार आचरण करने में है। ज्ञान प्राप्ति का सार भी चरित्र में ही है। आवश्यकता है कि हम अपने जीवन में चरित्र को महत्व दे और चरित्रवान बनने का प्रयास करें। हमारी कथनी-करनी एक हो।

-प्लाट नं. 35, अहिंसापुरी, फतहपुरा,
उदयपुर (राज.)-313001

अर्चना

गणेश मुनि शास्त्री

स्वागत वीणापाणि का

वसंत-पंचमी प्रकृति परिवर्तन, उल्लास और उमंग का पर्व है। सारा देश इस पर्व को हर्षोल्लस-उत्स के साथ मनाता है। चारों ओर नये और पीले-ही-पीले वस्त्र-परिधान दिखाई देते हैं। इस दिन तो प्रकृति भी वसंती परिधान पहने ऋतुराज वसंत के स्वागत में खड़ी दिखाई देती है। प्रकृति के इस सजे-धजे रूप की, गांव-खेतों, वन-उपवनों की छटा तो निराली ही है। खेतों में दूर-दूर तक सरसों के पीले-ही-पीले फूल परिलक्षित होते हैं। वसंत के स्वागत में फूल उठी पीत वसना सरसों का दृश्य कितना मोहक और मनोहारी है, जो देखने वालों को अपनी ओर खींचकर ही मानता है। मेरा कवि-स्वर इस प्रकार मुखरित हो उठा है–

खेतों में चहुं ओर ही, सरसों फूली आज।
पीले फूलों से करे, स्वागत वह ऋतुराज।।

वसंत-आगमन के पूर्व उसके स्वागत की तिथि वसंत-पंचमी हमें यह संदेश देती प्रतीत होती है कि हम अपने जीवन के उपवन में सु-मन रूपी सुमन सतत-निरंतर खिलाते रहें, महकाते रहें, क्योंकि सु-मन की सुवास बांटना ही तो जीवन का सत्य-शिव और सौन्दर्य है।

सरस्वती पूजन का पर्व–वसंत

मलिन-उदास प्रकृति के सौन्दर्य परिवर्तन के लिए वसंत पंचमी का पर्व है ही, विद्या की अधिष्ठाती देवी वीणापाणि-सरस्वती के पूजन का पर्व भी है। हमारे देश में देवियों की मान्यता है। भारतीय संस्कृति नारी मात्र को लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा देवी के रूप में देखती है। इन तीन देवियों की अपनी-अपनी अलग उपयोगिता और महत्ता है। जैन परम्परा में भी चक्रेश्वरी देवी, पद्मावती देवी और शासन देवी अपनी-अपनी महत्ता लिए हुए है। इन सभी देवियों में वसंत पंचमी को विद्या की देवी सरस्वती पूजन का क्या इतिहास है, इस पर भी कुछ चर्चा करें।

वैदिक परम्परा में ऐसी मान्यता है कि वसंत पंचमी को सरस्वती का अवतरण हुआ था। इसी दिन मानव ने लिपि, अक्षर और अंकों को पहली बार सीखा और जाना था। जैन परम्परा के अनुसार लिपि-अक्षर और अंकों का ज्ञान पहली बार आदिनाथ भगवान ऋषभदेव ने ब्राह्मी-सुन्दरी अपनी दोनों पुत्रियों को दिया था। ब्राह्मी-सुन्दरी से मानव ने पहली बार लिपि अंक का ज्ञान सीखा और जाना तो कदाचित वह दिन भी वसंत पंचमी का ही रहा होगा। इसलिए जैन समाज में भी वसंत पंचमी को ज्ञान के अधिष्ठाता देव की आराधना की जाती है। इस तरह दोनों परम्पराओं में वसंत पंचमी का पर्व विद्या-ज्ञान की महत्ता के स्मरण, आराधना का पर्व मान्य है।

शास्त्र रचना अथवा श्रुत लेखन से पूर्व गणधरों में भी 'णमो सुय देवस्य' अर्थात श्रुत देवता को नमस्कार है, कहकर ज्ञानदेव की आराधना की है। वसंत पंचमी के अलावा जैन परम्परा में 'ज्ञान-पंचमी' तथा वैदिक परम्परा में 'ऋषि-पंचमी' विद्या-ज्ञान की आराधना के विशिष्ट पर्व हैं।

सरस्वती पूजन या श्रुतदेव के स्मरण-आराधना का प्रतीकार्थ अभिप्राय: यही समझना चाहिए कि हम विद्या की उपलब्धि अथवा ज्ञानार्जन की ओर बढ़ें और निरंतर बढ़ते रहें, क्योंकि शिक्षा कभी पूर्ण नहीं होती। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में– शिक्षा वस्तु सदैव अधूरी। विद्याहीन मनुष्य, मनुष्य होकर भी पशु तुल्य ही है। 'ऋषिभाषित' में कहा गया है–

जेण बंध च मोक्खं च, जीवाणं गतिरागतिं।
भआयाभावं च जाणंति, साविज्जा दुक्खमोयणी।।

अर्थात जिसके द्वारा बंध-मोक्ष, गति-अगति एवं निजस्वरूप अथवा आत्मस्वरूप का ज्ञान हो, वही विद्या दु:खों से मुक्त करती है।

इतना ही नहीं विद्या निर्धनों का धन और कुरूपों का रूप भी है- विद्यानमधनानाम्, विद्या रूपं कुरूपाणाम्।' यही कारण है कि राजा की पूजा, उसका मान-सम्मान केवल उसके अपने ही देश में होता है, जबकि विद्वान जहां भी जाता है, वहीं, सर्वत्र उसकी पूजा होती है– स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान सर्वत्र पूज्यते। इतना ही नहीं, राजाओं तक के सिर भी ज्ञानियों-विद्व ानों के चरणों में झुका करते हैं। इसलिए मेरा यही कहना है कि आज के वसंत पंचमी के दिन ज्ञानार्जन का संकल्प करके विद्याधन की समृद्धि करते रहें। विद्या धन ऐसा धन है कि खर्च करने से बढ़ता है और इसे कोई न तो आपसे छीन सकता है और न चुरा सकता है।

अंतिम प्रतीक–कामदेव की पूजा

पर्वों पर किसी की पूजा-आराधना द्रव्य रूप से अलग होकर हमें इनके प्रतीकार्थ अभिप्राय: को समझकर इन्हें जीवन में अपनाना चाहिए। वसंत पंचमी पर्व पर कामदेव की पूजा की परम्परा भी है। वस्तुत: यह दिन काम को संयमित-मर्यादित करने का दिन है, काम के भोग-परायण और कल्याण परक रूप के अन्तर को समझना ही काम-पूजा है।

भगवान महावीर का भी यही संदेश है कि काम-भोग निश्चित ही अनर्थों की जड़ और साक्षात् तालपुट विष के समान है। अत: काम-भोगों में आसक्त प्राणी शांति नहीं पा सकते।

ईंधन से न तो कभी अग्नि तृप्त होती है, न नदियों के निरंतर गिरने से लवण समुद्र शांत होता है और न भोगों के ईंधन से काम की ही तृप्ति होती है। अत: वसंत पंचमी के इस पावन पर्व का ज्ञानाराधना और काम-शमन की प्रेरणा लेकर मनाएं, तभी यह पर्व सार्थक होगा। अब अधिक न कहकर दो पंक्तियों मं अपनी बात समेट रहा हूं–

स्वागत वीणापाणि का, वसंत पंचमी आज।
जन-जन-मन कहता यही, स्वागत है ऋतुराज।।

वसंत पर विशेष

वसंतोत्सव

जयशंकर मिश्र 'सव्यसाची'

हम अपने जीवन में मधुमास लायें

सरस्वती की पूजा भौतिक बुद्धि, विचार शक्ति, ज्ञान तथा आत्म–प्रकाश के लिए है। सरस्वती पूजन में किसी व्रत का विधान नहीं है। यह तो भूख से मुक्त भोग का त्योहार है।

रंग-बिरंगे फूलों से शृंगारकर सज-धजकर क्यारियों ने नवविवाहिता बाला के समान अपने प्राणेश के स्वागत में पलकें बिछाये लम्बे समय से इंतजार कर रही थी। उसके अंग-अंग में अनंग की शोभा व्याप्त है। पलाश के वनों में भी आग लग गयी है। सरसों भी प्राणेश के आगमन में फूली नहीं समायी। खास को कौन कहे आम भी बौरा गये। सारा माहौल मस्ती की आलम में अलसाया हुआ है। प्रतिक्षण परिवर्तित प्रकृति वेश मधु बिखेरने लगा। आखिर यह कौन है जिसकी आगवानी में पूरी प्रकृति पलकें बिछाये खड़ी है। 'ऋतुराज बसंत' आ गया।

एक कथा है कि शेष पांच ऋतुओं ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत और शिशिर ने अपने में से आठ-आठ मधुर एवं सिक्त दिवस निकालकर चालीस दिनों की एक नयी और मादक ऋतु बनाया। यही ऋतुओं का राजा बसंत है।

क्या हम अपने जीवन के मधुर क्षण निकालकर एकत्र कर सकते हैं या फिर किसी दूसरे को सौंप सकते हैं। क्या हममें यह समर्पण की भावना है। शायद नहीं, इसीलिए कि हम 'मानव' हैं। हमने खुद को घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, वैमनस्यता की कड़ी दीवारों के बीच अपने को कैद कर रखा है। हम अपने जिन्दगी में 'मधुमास' नहीं बना सकते।

कहने को तो हम देवताओं के वंशधर हैं। पर देवता तो दानवों के अत्याचार से जब से त्रस्त हुए तब देवों ने अपने तेज को एकत्रित कर एक शक्तिपुंज की अवधारणा की। यही मंगलकारी 'महाशक्ति' कहलायी। इसे हिमालय ने वाहन हेतु सिंह प्रदान किया, इन्द्र ने व्रज दिया, यम ने पाश दिया और शिव ने त्रिशूल दिया। हम भी समाज की विद्रूपताओं को दूर करने के लिए संगठित हो जायें।

हर आपत्ति, अत्याचार और अनाचार का सामना अपनी शक्तियों को समन्वित करके करना चाहिए। रावण महान शक्तिशाली था वह 'शक्तिपुंज' था लेकिन अपनी शक्ति का प्रयोग सबको सताने में करता था। इसलिए वह नराधम कहलाया। राघवेन्द्र राम उदार नीति को स्थापित करने, मर्यादा को स्थापित करने के लिए लड़े इसीलिए तो वह 'मर्यादा-पुरुषोत्तम' कहलाये।

हम अपनी अच्छाइयां दूसरों को क्यों नहीं सौंपते इसलिए कि हम 'देना' नहीं चाहते। इतने दिनों से यह पगली प्रकृति, ऋतुराज के आगमन की प्रतीक्षा में सूखकर ठूठी हो गयी थी। क्योंकि उनकी वह वियोगावस्था थी। परन्तु उनकी प्रियतम (बसंत) के आगमन का दिन ज्यों-ज्यों करीब आता गया त्यों-त्यों वह जवानी में उन्मादित होती गयी, फूलती-फलती गयी। तभी तो मां वाणी को यह ऋतु भा गयी।

यह मां सरस्वती कौन हैं, इनका उत्सव क्या है? सृष्टि में जब हम नहीं थे, हमारा अस्तित्व भी नहीं था, मात्र ज्वलित पिण्ड था। अध्यात्म में इसी ज्वलित पिण्ड को 'आदिशक्ति' के नाम से जाना गया।

सृष्टि की अवधारणा इसी आदि शक्ति के मूल में थी। पिण्ड विभाजित होता गया और सूर्य, चंद्र, ग्रह और नक्षत्र आदि बन गये। सृष्टि के विकास के क्रम के साथ ही आदि शक्ति भी कई रूपों में विभाजित हो गयी।

सरस्वती का तात्पर्य भौतिक वृद्धि और ज्ञान से है अतएव सरस्वती की पूजा भौतिक बुद्धि, विचार शक्ति, ज्ञान तथा आत्म प्रकाश के लिए है। सरस्वती पूजन में किसी व्रत का विधान नहीं है। यह तो भूख से मुक्त भोग का त्योहार है। 'भोग' कहते ही 'काम' और 'रति' की याद आती है। इसलिए 'बसंत पंचमी' को 'श्री पंचमी' भी कहते हैं। आज के दिन 'काम और 'रति' पूज्य होते हैं।

भगवान शंकर की समाधि डिगाने की काम की अहंकार भावना जब उसे भस्म कर देती है तब 'रति' की अमन्य स्तुति पर भगवान शिव ने उसे 'अनंग' कर जीवों के अंगों में प्रवेश करा दिया। कामदेव मारा गया। अनंग जीवित है क्योंकि प्राणी मात्र जीवित है।

लक्ष्मी में चंचलता है और सरस्वती में फिसलन, बुद्धि को न फिसलते देर लगती है और न संभलते। सरस्वती वैदिक देवी हैं, ब्राह्मण ग्रन्थों में उन्हें देवी के नाम से पुकारा जाता है। सरस्वती वैदिक हिन्दुओं की ही उपास्य नहीं हैं। चीनी लोग 'नील सरस्वती', तिब्बत वाले 'वीणा सरस्वती' के रूप में इनकी उपासना करते हैं

सरस्वती का संबंध मानवीय विवेक से है, वही मानवीय करुणा से उनके 'बीजमंत्र' का जन्म होता है तभी तो वधिक द्वारा क्रोंच के मारे जाने पर वाल्मीकि की 'वाणी' फूट पड़ती है। एक अच्छे समाज की परिकल्पना एवं संरचना ही 'वाग्देवी' की सच्ची पूजा होगी जिसमें हिंसा के स्थान पर अहिंसा, बैर के स्थान पर दोस्ती, घृणा के स्थान पर प्रेम, और क्रूरता के स्थान पर करुणा, अज्ञान के स्थान पर ज्ञान हो और अविवेक के स्थान पर विवेक हो।

योग से व्यक्तिगत तथा वैश्विक स्तर पर लोगों के शारीरिक तथा मानसिक व्याधियों को दूर कर जीवन में 'मधुमास' ला सकते हैं तब सम्पूर्ण जीवन ही रूपान्तरित होकर उत्सव बन जायेगा।

–सहसंपादक/ विभागाध्यक्ष-योग संदेश
पतंजलि योगपीठ (हरिद्वार)

रामसिंह भाई राठवा

समग्र विकास एवं जीवन विकास का समन्वय

गणि राजेन्द्र विजयजी ने आदिवासी लोगों के बीच में ज्ञान ज्योति अभ्युदय यात्रा आयोजित की, जिसके दो उद्देश्य हैं– पहला श्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा घोषित 'गुजरात पढ़ो' अभियान को बल देते हुए गणि राजेन्द्र विजयजी ने आदिवासी लोगों में ज्ञान ज्योति एवं शिक्षा के प्रसार की दृष्टि से प्रेरित किया। दूसरा लक्ष्य इस यात्रा के माध्यम से उन्होंने आदिवासी क्षेत्र के करीब चार लाख लोगों से संपर्क स्थापित कर उन्हें आदिवासी क्षेत्र में दस प्राथमिक विद्यालय स्थापित करने के लिये सहयोग हेतु तत्पर होने को प्रेरित किया।

काफी समय से गुजरात के छोटा उदयपुर एवं वडोदरा जिले के आदिवासी अंचल नसवाडी, रंगपुर, बोडेली, कवांट, बलद गांव आदि से मैं लम्बे समय से जुड़ा रहा हूं। रंगपुर में हरिभाई का आश्रम इस क्षेत्र के विकास का एक सशक्त माध्यम रहा है। एक तरह से हरिभाई 'भैयाजी' के बहुमुखी व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व से अनेक राष्ट्रीय हस्तियां एवं राजनीतिज्ञ व्यक्तित्वों का इस क्षेत्र में आना जाना रहा। गुजरात की राजनीतिक बुनावट तो इसी आश्रम से तय होती रही है। इस क्षेत्र की समस्याओं के समाधान का यह आश्रम बहुत बड़ा आधार रहा है। साथ ही साथ इस क्षेत्र को परमार क्षत्रियोद्धारक आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरिजी म.सा. ने अपनी कर्मभूमि बनाकर यहां की जनता का उत्थान और उन्नयन किया। उन्होंने न केवल विकास की अनेक योजनाएं प्रारंभ की बल्कि इस क्षेत्र की जनता को आदर्श जीवनशैली भी प्रदत्त की। आज जबकि देश के अनेक हिस्सों में आदिवासी जन-जीवन हिंसा, अलगाव और आतंक का प्रतीक बना हुआ है और यह क्षेत्र भी इन सब स्थितियों से उपरत नहीं है। लेकिन आचार्यजी के प्रयासों से इस क्षेत्र के जन-जीवन में अहिंसा का प्रभावी प्रस्तुतीकरण हुआ है। जिससे यह क्षेत्र हिंसा से बचा रहा है। भैयाजी के निधन के बाद विगत लम्बे समय से अपने गुरु इन्द्रदिन्न सूरिजी द्वारा प्रारंभ किये गए उपक्रमों को गणि राजेन्द्र विजयजी सुखी परिवार अभियान के माध्यम से आगे बढ़ा रहे हैं। उन्होंने इस क्षेत्र के समग्र विकास को अपने जीवन का ध्येय बना रखा है। इसकी एक सार्थक निष्पत्ति है-आधुनिक सर्वसुविधायुक्त एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय का निर्माण, जिसका लोकार्पण समारोह सुखी परिवार अभियान के प्रणेता गणि राजेन्द्र विजयजी म.सा. के नेतृत्व में एवं जैन आचार्यों की पावन निश्रा में 6 फरवरी 2011 को कवांट, जिला-वडोदरा (गुजरात) में आयोजित होने जा रहा है। इसी अवसर पर विशाल आदिवासी जन-जागृति सम्मेलन, आदिवासी कन्या की जैन दीक्षा, गणि राजेन्द्र विजयजी के 500 आयंबिल का पारणा, प्राथमिक विद्यालय का शिलान्यास आदि विविध आयोजन हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त कवांट तहसील के ग्रामों में निर्मल एवं पवित्र जल आपूर्ति, कवांट से जोड़ने वाला ब्रिज एवं एपीएमसी की बिल्डिंग का लोकार्पण समारोह भी आयोजित होना संभव है। ये आदिवासी उत्थान और उन्नयन की विशिष्ट योजनाएं लोकनायक एवं लोकप्रिय मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सहयोग से ही निर्मित हो पायी है।

कवांट में श्री नरेन्द्र मोदी के कर-कमलों से आचार्य भगवंतों एवं गणिजी की पावन निश्रा में भव्य रूप में एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय का शिलान्यास समारोह 11 मार्च 2007 को संपन्न हुआ था। जिसमें गणि राजेन्द्र विजय के प्रभाव से करीब डेढ़ लाख आदिवासी लोगों ने भाग लिया था। इस अवसर पर श्री मोदी ने सुखी परिवार अभियान की बहुआयामी योजना में वनबंधु कल्याण योजना के अन्तर्गत गुजरात सरकार की ओर से हर संभव सहयोग देने की घोषणा की थी। इसी अवसर पर आपने कवांट से जोड़ने वाले ब्रिज, एग्रीकल्चर प्रोडक्ट मार्केटिंग कॉरपोरेशन की बिल्डिंग एवं कवांट तहसील के ग्रामों को नर्मदा का पवित्र एवं निर्मल जल उपलब्ध हो, इस हेतु घोषणाएं की थी। श्री मोदी ने अपने द्वारा की गई घोषणाओं को तत्परता से क्रियान्वित कर इस क्षेत्र के लोगों के उत्साह में अभिवृद्धि की है। मैं कह सकता हूँ कि इस आदिवासी अंचल को विकास की ओर अग्रसर होते हुए देखने के लिए गणिजी जुटे हैं, मुख्यमंत्रीजी अपना हरसंभव सहयोग प्रदत्त किया है और क्षेत्रीय प्रतिनिधि के रूप में मैं भी अपना हरसंभव सहयोग देता रहा हूं, यहां की जनता भी इसमें सहयोगी बनी है, हम सबकी मिलजुली शक्ति एवं सहयोग से जो तस्वीर बनी है, वह न केवल गुजरात के लिए बल्कि समूचे राष्ट्र के लिए एक आदर्श मॉडल के रूप में एक विशिष्ट उपलब्धि बन कर प्रस्तुत हो रही है।

इस क्षेत्र के लोगों का सौभाग्य ही माना जायेगा कि उन्हें राजनीति एवं धर्म की मिलीजुली शक्तियों का योग मिल रहा है। उनके सौभाग्य का इससे बड़ा उदाहरण क्या होगा कि उनके लिये गणि राजेन्द्र विजयजी ने 500 आयंबिल का संकल्प लिया। यह संकल्प उन्होंने एकलव्य

आवासीय मॉडल विद्यालय के निर्माण कार्य की सफलतापूर्वक संपन्नता के लिए लिया था। अब जबकि यह विद्यालय निर्मित हो चुका है तो वे अपने इस संकल्प की पूर्णता को भी इसी अवसर पर आयोजित करेंगे। इसी अवसर पर इसी क्षेत्र की आदिवासी कन्या द्वारा जैन दीक्षा ग्रहण करने का ऐतिहासिक कार्यक्रम भी आयोजित होगा। जनवरी 2011 माह में गणि राजेन्द्र विजयजी ने आदिवासी लोगों के बीच में ज्ञान ज्योति अभ्युदय यात्रा आयोजित की, जिसके दो उद्देश्य हैं- पहला श्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा घोषित 'गुजरात पढ़ो' अभियान को बल देते हुए गणि राजेन्द्र विजयजी ने आदिवासी लोगों में ज्ञान ज्योति एवं शिक्षा के प्रसार की दृष्टि से प्रेरित किया। दूसरा लक्ष्य इस यात्रा के माध्यम से उन्होंने आदिवासी क्षेत्र के करीब चार लाख लोगों से संपर्क स्थापित कर उन्हें आदिवासी क्षेत्र में दस प्राथमिक विद्यालय स्थापित करने के लिये सहयोग हेतु तत्पर होने को प्रेरित किया।

गुजरात सरकार के सहयोग से नर्मदा नदी से होपेशवर ग्राम से कवांट तहसील की ग्रामों तक निर्मल एवं पवित्र जल देने की लिफ्ट योजना करीब सौ करोड़ की लागत से फलीभूत हुई हैं। इसी भांति वर्षों से कवांट आने के लिए ब्रिज की अपेक्षा थी। बरसात के दिनों में इस ब्रिज के अभाव में इस क्षेत्र के लोगों को करीब 25-30 किलोमीटर लम्बा चक्कर खाकर आना पड़ता था। यह ब्रिज भी बनकर तैयार हो चुका है। इसी भांति आदिवासी क्षेत्र की एक उपयोगी एवं विकासमूलक योजना एग्रीकल्चर प्रोडक्ट मार्केटिंग कॉरपोरेशन की बिल्डिंग का बनना भी है। ये बातें जाहिर करती हैं कि संतों के चरण जहां पड़ते है, वहां मंगल ही मंगल है। इक्कीसवीं सदी का पहला दशक इस आदिवासी क्षेत्र के विकास एवं उत्थान के लिये शुभ रहा है। इसी तरह का स्वस्थ एवं समतामूलक विकास आदिवासी या पिछड़े क्षेत्रों में होता रहा तो मेरा मानना है कि इस देश में आतंकवाद, नक्सलवाद, माओवाद जैसी समस्याएं सिर उठाने का नाम नहीं लेंगी। मेरी दृष्टि में सुखी परिवार अभियान और उसके प्रणेता गणि राजेन्द्र विजयजी ने सैकड़ों जीवन बचाने, हजारों बेघर लोगों का जीवन बेहतर बनाने, हजारों-हजारों आदिवासी बच्चों को शिक्षा प्रदान करने एवं आदिवासी कन्याओं को उच्चशिक्षा के लिये प्रोत्साहित करने के लिये सहायता के जो उपक्रम चलाये हैं, वे परोपकार, सेवा एवं जनकल्याण के प्रेरक उदाहरण हैं। सबसे बड़ा काम मेरी दृष्टि में जो हुआ है वह इस क्षेत्र के लोगों को नशामुक्त बनाना, आडम्बर एवं रूढ़िमुक्त बनाना एवं अहिंसा के मार्ग पर अग्रसर करना है। विशेषतः युवाओं, महिलाओं, बच्चों एवं वृद्धों को ऐसी प्रगाढ़ता एवं भावनात्मक नजदीकी मिली तथा ऐसा स्नेह, आपसी सौहार्द एवं सुरक्षा प्राप्त हुई जो उनके जीवन से बहुत दूर जा चुके थे।

-लेखक सांसद हैं

48, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली-1

विरासत

श्री श्री रविशंकर

भारत निर्माण में आध्यात्मिक मूल्यों की भूमिका

धार्मिक आतंकवाद, नक्सलवाद तथा प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती त्रासदियों के बीच भी भारत प्रगतिशील है। भारत की इस दृढ़ता का राज क्या है? भारत का जन्म धार्मिक टकराव, हिंसा तथा अवसाद के बीच हुआ। संसार में धर्म कभी भी एकीकरण की शक्ति नहीं रहा है। फिर इन धार्मिक तथा सांस्कृतिक विभिन्नताओं के बीच भी भारत की निरंतर बढ़ती शक्ति का क्या कारण है।

इस शताब्दी में चीन बलपूर्वक एकीकृत रहा है जबकि भारत के संगठित रहने का कारण उसके सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक बंधन है। निश्चय ही पिछले कुछ दशकों में धार्मिक कट्टरता, जातीय हिंसा, नक्सलवाद तथा प्राकृतिक आपदाओं ने भारत को उद्वेलित किया है, अपने आध्यात्मिक मूल्यों में स्थापित देश की सहिष्णुता और भी प्रखरता से परिलक्षित हुई है।

स्वतंत्रता, अध्यात्म तथा सभी का सम्मान करने वाली राष्ट्रीयता के मूल्य से सदैव ही भारत का गठबंधन रहा है। यह संसार की प्राचीनतम सभ्यता है। बीती हुई शताब्दियों में भारत ने बहुत सी चुनौतियों का सामना किया है तथा उन पर विजय पायी है। एक ओर भारत से न्याय तथा समानता के शिखर को छुआ है तथा एक ओर दलितों का दमन भी हुआ है। भारत अहिंसक तथा सौम्य लोगों का देश रहा है और यहां सती जैसी प्रथाएं भी प्रचलित रही हैं। कोई मध्यम स्थिति नहीं है, भारत के बारे में लोगों की या तो बहुत श्रेष्ठ राय है अथवा बहुत निकृष्ट क्योंकि यह विपरीत से भरा हुआ है।

शताब्दियों से भारत के सकारात्मक पहलुओं की अपेक्षा नकारात्मक स्वरूप को अधिक प्रसारित किया गया है। सौभाग्य से अब यह बदल रहा है। अनेक भाषाओं तथा जातियों में विभाजित तथा शताब्दियों के दमन से प्रभावित यह देश आत्म संशय में लिप्त रहा है। जैसे कि कोई हाथी जो बड़े से बड़ा पेड़ तो उखाड़ सकता है, किन्तु महावत के अंकुश से संशयित है, भारत को थोड़ी देर के लिए रोका जा सकता है। पश्चिम ने भी भारत को एक सोया हुआ महाकाय बताया है।

आतंक तथा अन्य सामाजिक कुरीतियों से लड़ने के लिए और अपने युवा मन को हिंसा की ओर बढ़ने से रोकने के लिए हमें अपने आध्यात्मिक मूल्यों को प्रसारित तथा पोषित करना होगा। नक्सलवाद के मूल कारणों को सम्बोधित करना होगा तथा भ्रमित युवाओं को मुख्य धारा में लाना होगा। पश्चिमी उपभोगवाद एवं भौतिकता के अंधानुकरण की अपेक्षा हमें सीखने तथा नवीनता के लिए खुला मस्तिष्क रखना होगा।

आज हमें-

- रोजगारमूलक शिक्षा देनी होगी।
- राजनीति से भ्रष्टाचार तथा कदाचार मिटाने होंगे।
- युवाओं को सामाजिक विकास में रुचि लेने के लिए शिक्षित तथा प्रोत्साहित करना होगा।
- कृषि क्षेत्र की ओर ध्यान देना होगा, जहां एक ओर औद्योगिक विकास हुआ है वहीं कृषि पूर्णतः उपेक्षित रही है।
- मूल स्वच्छता बढ़ानी होगी।
- एड्स के प्रति जागरूकता बढ़ानी होगी।
- कन्या भ्रूण हत्या रोकनी होगी।
- जल संसाधनों का उचित उपयोग करने की ओर अपने कदम बढ़ाने होंगे।

जिस प्रकार जनसंख्या बढ़ रही है, इन समस्याओं का समाधान अब भी बहुत दूर है। ज्ञान जो भारत का मान रहा है लगभग भुलाया जा चुका है तथा उसके पुनर्स्थापना की आवश्यकता है।

हमें उस भारत के लिए कार्य करना होगा जिसमें हिंसा, आतंक की कोई जगह नहीं हो, निर्धन को सहयोग तथा न्याय दोनों हो, मध्यवर्ग, भय तथा असंतोष से मुक्त हो, सपने देख सके तथा निर्भय हो और प्रभावशाली वर्ग सामाजिक उत्तरदायित्व लें तथा मानवीय मूल्यों को धारण करें। ■

बालकवि बैरागी

वैवाहिक जीवन में सुखी रहने के सरल सूत्र

यह कपास खुद मेरा बोया, धुना और काता हुआ है। इस खेती का खेत भी मेरा ही जीवन है। कोई उपदेश जैसा मामला भी नहीं है। सब कुछ अनुभव पर आधारित है। अनुभव भी मेरा अपना ही अपना जिया और अपना ही फटा सिया। बात आपको लगे या नहीं, इसमें मेरी कोई दिलचस्पी भी नहीं है। बाल-बच्चे पढ़ लें तो अपने माता-पिता को दिखावें और माता-पिता पढ़ लें तो अपने बाल-बच्चों को पढ़वा दें। बस।

संसार में जिसे आप हिन्दू धर्म कहते हैं वह धर्म ही ऐसा धर्म है जिसमें विवाह को सोलह संस्कारों में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। 'हिन्दू धर्म' ऐसा शब्द है जो विवादास्पद बहस और वाद-विवाद में पता नहीं कब से फंसा हुआ है। अपनी-अपनी समझ का मामला है। एक पगडंडी यह भी मिली कि 'हिन्दू धर्म' कोई धर्म हो या नहीं हो पर एक 'जीवनशैली' जरूर है। जीवनशैली मानने का लाभ यह मिला कि कई- और कई क्या लाखों करोड़ों गैर हिन्दुओं ने भी इस शैली की कई बातों को स्वीकार कर लिया। धर्म से विवाद हुआ, शैली को स्वीकृति मिली।

मूल बात है हमारा विवाह संस्कार। हमारे यहां मान्य बात यह है कि जोड़ा तो ईश्वर बनाता है पर जोड़ीदार उसे निबाहते हैं। एक बार के सात फेरे अगले सात जन्मों तक की सप्तपदियों के बंधन कस देते हैं। यह भी एक कारण है कि जो हम 'सुखी वैवाहिक जीवन' की साधना में पूरा जीवन बिता देते हैं। धर्म, कर्म, दान, पुण्य, अनुष्ठान, व्रत, उपवास, टोने-टोटके, गण्डे, ताबीज, रोली, मौली यानी कि न जाने क्या-क्या होता रहता है, हमारे अपने घरों में इस 'सुखी वैवाहिक जीवन' के लिए। अब यदि आप भी इस झमेले में कहीं फंस पड़े हैं तो दो बातें मेरी मान लें।

मेरे वैवाहिक जीवन का यह 57वां वर्ष चल रहा है। 17 मई 1954 से 17 मई 2010 तक चले आइए। घनघोर विपन्नता और अभावों के बावजूद यह समूचा जीवनकाल इस दोनों जीवों का बहुत सुखी जीवनकाल है। हम लोग आज भी सुखी हैं। वैसे सुख की इस चादर में ताने-बाने के पचासों सूत्र हैं, पर दो सूत्र बहुत सरल किन्तु प्रमुख हैं। आज से ही उन्हें काम में लें। सुखी रहेंगे।

पहला सूत्र है- आप कृपा करके अपने रसोईघर, अपने चूल्हे चौके में कोई हस्तक्षेप न करे। कोई निर्देश नहीं दें। अपने किचन को कभी डिक्टेट नहीं करें। आज ये बनेगा, कल वो क्यों बना था। सब्जी में नमक कम क्यों हैं? करेले क्यों बने? भिण्डी क्यों नहीं बनी? कढ़ी इतनी खट्टी क्यों है? मिर्ची सोच समझ कर क्यों नहीं डाली। या कि पूरी बनेगी कि परांठे? आपकी गृहिणी को यह किचकिच मानसिक तनाव, दबाव और तबाही दे देती है। उसकी सहजता और एकाग्रता तथा परिवार पूजा को यह दादागिरी नष्ट कर देती है। आपके जीवन से जुड़ने के बाद उसने इतना अध्ययन तो तत्काल कर लिया है कि आपकी और आपके परिवार वालों की भोजन के मामलों में सूचियां कैसी-कैसी हैं। वह इतनी मूढ़ और मतिमंद नहीं है कि सात जन्म तक साथ निबाहनेवाले अपने जीवनसाथी की रूचियों से भी अपरिचित हो। किचकिच होना ही हो तो इस बात पर होने दो कि साल छह महीनों में वह खुद ही एकाध बार झल्ला पड़े कि- ''कभी तो कुछ कह दिया करो कि आज ये बना।'' जिस दिन वो ऐसा बोले उस दिन आप मुस्कराकर उसकी बलैयां ले लो। सुख सौ गुना हो जायेगा। उसका मंगलसूत्र निहाल हो जायेगा। याद रखिए, वह आपकी रूचियों से भी अधिक जानकारी रखती है आपकी जेब और परिवार की हैसियत और क्षमता की। उससे कुछ भी छिपा नहीं। वह आपके धन और ईंधन सब से वाकिफ है। आपकी गृहस्थी की चुनौतियों और मनौतियों से वह खूब परिचित है। बेशक आटा दाल आप खरीदते हैं पर आटे दाल का भाव आपसे ज्यादा वो जानती हैं। अपना डिक्टेशन और निर्देशन और कहीं भी दे पर उसकी रसोई, उसके चूल्हे चौके में अपनी सूचियों का कोई हस्तक्षेप नहीं करे। सर्वोपरि सत्य यह है कि आपकी थाली में वही और वैसा ही आयेगा जैसा कि परमपिता परमेश्वर ने तय कर रखा है। आपका एक-एक निवाला उसके नियंत्रण में है। मुंह तक आये निवाले आपने छूटते देखे हैं। आप मुक्तभोगी हैं। आपकी जबान का स्वाद आपकी गृहस्थी को चौपट भी कर सकता है और उसे परिमल पराग वाले मधुवन में भी बदल सकता है।

मैं अपने वैवाहिक जीवन के 57वें वर्ष तक इस सूत्र का पूरा निर्वाह कर रहा हूं। कोई खटपट नहीं। कोई हल्ला नहीं। जो ऊपरवाले ने दिया वो नीचेवाला ने परोसा और जैसा सामने आया वह खुशी से खा लिया। अन्नपूर्णा इसी का नाम है।

दूसरा सूत्र है- सवेरे उठते ही अपनी दिनचर्या आपस की बातचीत से शुरू नहीं करें। कम से कम दस बीस मिनिट या घड़ी अधघड़ी पहले अपने भीतर बैठे अपने ही अंतर्यामी से बात करें। घर-आंगन या दीवार मुंडेर पर कोई अमला गमला हो तो उसे पानी दें। पूर्वजों की तस्वीरें हों तो उसे प्रणाम करें। सोये हुए बच्चे हों तो उन्हें सहलाए। कम से कम चार-पांच बार पूरी मुस्कराहट के साथ खुद को आईने में देखें। जागे हुए सदस्यों का हंसते-मुस्कराते यथा उम्र अभिवादन करें या अभिवादन लें। अपने इष्टदेव का स्मरण करें। अपने देवी-देवताओं को सिर झुकाएं। माता-पिता, भाई हो तो उनका हाथ स्वयं थाम कर अपने माथे पर रखें। अखबार आ गया हो तो तह करके रख लें।

मैं अपने अनुभवगत सरल सूत्रों को व्यक्त कर रहा हूं। आप इन दोनों सूत्रों को अपनायें या खारिज करें इससे मेरी सेहत पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा। मैं यह भी जानता हूं कि आप अपने अखबारी मनोरंजन के लिए भी इन पंक्तियों को पढ़कर अपने काम में लग जायेंगे। मुझे कोई मलाल नहीं होगा। बात यह है कि हमारे यहां परिवार को गृहस्थी कहा है और गृहस्थी में सुख और शांति दोनों अनन्याश्रित तत्वों की तलाश में हम दुख और अशांति के दलदल में धंसते चले जाते हैं। मैं आपको इन सूत्रों का व्रत करने की सलाह नहीं देता हूं। अशांत और दुखी रहने का जो आपका उपक्रम चल रहा है उस उपक्रम में बस क्रम भंग का उपक्रम कर रहा हूं...।

-पूर्व सांसद
पो. नीमच, जिला-मंदसौर (म.प्र.)

माया से मुक्ति

स्वामी विवेकानंद

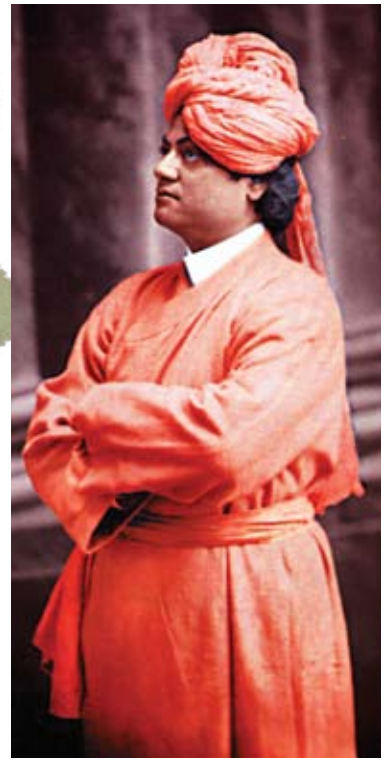

बालक के हृदय में आशा बड़ी बलवती होती है। बालकों के विस्फारित नयनों के समक्ष समस्त जगत मानो एक सुनहले चित्र के समान मालूम पड़ता है, वह समझता है कि मेरी जो इच्छा होगी, वही होगा। किन्तु जैसे वह आगे बढ़ता है, वैसे ही प्रत्येक पद पर प्रकृति वज्र दृढ़ प्राचीर के रूप में उसकी भविष्य प्रगति बाधा बनके खड़ी हो जाती है। उस प्राचीर को भंग करने के लिए वह भले ही बारम्बार वेग के साथ उस पर टक्कर मारता रहे। सारे जीवन भर जैसे-जैसे अग्रसर होता जाता है, वैसे-वैसे उसका आदर्श उससे दूर होता जाता है-अन्त में मृत्यु आ जाती है और शायद इस सबसे छुटकारा मिल जाता है। और यही माया है!

एक वैज्ञानिक उठता है, महाज्ञान की पिपासा लिए। उसके लिए ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसका वह त्याग न कर सकता हो, कोई भी संघर्ष उसे निरुत्साह नहीं कर सकता। वह लगातार आगे बढ़ता हुआ एक के बाद एक प्रकृति के गुप्त तत्वों का पता लगाता जाता है- पर इस सबका उद्देश्य क्या है? मनुष्य जितना कर सकता है, प्रकृति क्या उससे अनन्तगुना अधिक नहीं करती? और प्रकृति तो जड़ है, अचेतन है। तो फिर जड़ के अनुकरण में कौन सा गौरव है? प्रकृति कितनी भी विद्युतशक्ति संपन्न वज्र को चाहे जितनी दूर फेंक सकती है। यदि कोई मनुष्य उसका शतांश भी कर दे तो हम उसे आसमान पर चढ़ा देते हैं! यह सब क्यों? गुरुत्वाकर्षण शक्ति भारी से भारी पदार्थ को क्षणभर में टुकड़े-टुकड़े कर फेंक सकती है, फिर भी वह जड़ है। जड़ के अनुकरण से क्या लाभ? फिर भी हम सारा जीवन उसी के लिए संघर्ष करते रहते हैं। और यही माया है!

इन्द्रियां मनुष्य की आत्मा को बाहर खींच लाती हैं। मनुष्य ऐसे स्थानों में सुख और आनंद की खोज कर रहा है, जहां वह उन्हें कभी नहीं पा सकता। युगों से हम यह शिक्षा पाते आ रहे हैं कि यह निरर्थक और व्यर्थ है: यहां हमें सुख नहीं मिल सकता। परन्तु हम सीख नहीं सकते! अपने अनुभव के अतिरिक्त और किसी उपाय से हम सीख नहीं सकते। हम प्रयत्न करते हैं और हमें एक धक्का लगता है, फिर भी क्या हम सीखते हैं? नहीं, फिर भी नहीं सीखते। प्रत्येक सांस के साथ, हृदय की प्रत्येक धड़कन के साथ, अपनी प्रत्येक हलचल के साथ हम समझते हैं कि हम स्वतंत्र है और उसी क्षण हम देखते हैं कि हम स्वतंत्र नहीं हैं। बद्ध गुलाम-हम प्रकृति के गुलाम हैं! शरीर, मन, सर्वविध विचारों एवं समस्त भावों में हम प्रकृति के गुलाम हैं! और यही माया है।

धर्म को समझें

आचार्य तुलसी

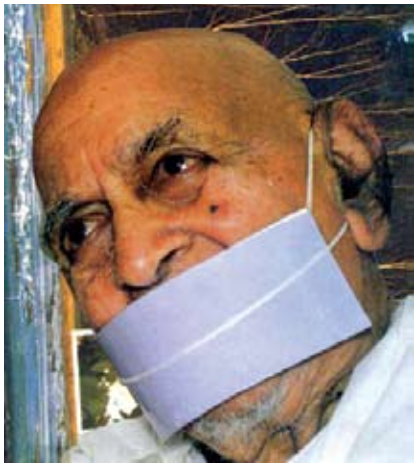

मैं मानता हूं, धर्म जीवन की अनिवार्य अपेक्षा है। जहां उसकी पूर्ति नहीं होती, वहां जीवन में एक अभाव की पूर्ति कभी नहीं होती। वह है, मानसिक संतुलन का अभाव।

धर्म की विभिन्न भाषाएं हैं, पर उन सबका सार है, स्वयं में स्थित रहने का अभ्यास। धर्म की यह भाषा जितनी आंतरिक है, उतनी ही तर्क-संगत। अपने-आपको धार्मिक न मानने वाला भी धर्म की इस भाषा से विरक्त नहीं है। धर्म के प्रति जो विरक्ति है, वह उस धर्म के प्रति है, जिसमें आंतरिकता का स्पर्श नहीं है। जहां आचरण की गौणता और उपासना की प्रधानता है, वहां सहज ही बौद्धिक द्वंद्व होता है और वह व्यक्ति को धर्म-विमुख बना देता है।

क्या घृणा करने वाला व्यक्ति धार्मिक है? एक ओर उपासना और दूसरी ओर घृणा। क्या यह योग किसी बुद्धिवादी व्यक्ति को धर्म की ओर आकृष्ट करने वाला है? क्या शोषण करने वाला व्यक्ति धार्मिक है। एक ओर दया और दूसरी ओर शोषण। क्या यह योग किसी विचारशील व्यक्ति को धर्म की ओर आकृष्ट करने वाला है? धार्मिक सबके साथ प्रेम करता है, इसलिए वह घृणा नहीं कर सकता। धार्मिक व्यक्ति सब जीवों को आत्म तुल्य मानता है, इसलिए वह किसी का शोषण नहीं कर सकता। जो घृणा और शोषण करता है, वह धार्मिक नहीं हो सकता। धर्म की रुचि और उसका आचरण- ये दो भिन्न पहलू हैं। जो लोग अपने-आपको धार्मिक मानते हैं, उनमें अधिकांश धर्म-रुचि के मिलेंगे, धार्मिक बहुत कम। जो लोग अपने-आपको अधार्मिक मानते हैं, उनमें भी कुछ लोग धार्मिक मिलेंगे। आज का धर्म भोग से इतना आच्छन्न है कि त्याग और भोग के बीच कोई रेखा ही नहीं जान पड़ती।

धर्म का क्रांतिकारी रूप तब होता है, जब वह जन-मानस को भोग-त्याग की ओर अग्रसर करे। आज त्याग भोग के लिए अग्रसर हो रहा है। यह वह कीटाणु है, जो धर्म के स्वरूप को विकृत बना डालता है। मैं मानता हूं, धर्म जीवन की अनिवार्य अपेक्षा है। जहां उसकी पूर्ति नहीं होती, वहां जीवन में एक अभाव की पूर्ति कभी नहीं होती। वह है, मानसिक संतुलन का अभाव। मानसिक संतुलन का अभाव अर्थात शांति का अभाव। शांति का अभाव अर्थात सुखानुभूति का अभाव।

ऋतोत्सव

प्रेमकुमारी कटियार

प्रातहि जगावत गुलाब

प्रकृति और कविता का संबंध सदियों पुराना है। यानी कि कविता की रचना प्रकृति के आदेश पर ही होती है। जब कविता में प्रकृति के रंग उभरते हैं तो कविता में नये प्राणों का संचार होता है। कहने में अतिशयोक्ति नहीं है कि कवि को प्रकृति ने ही प्रतिभा दी कि वह कविता का सृजन करें। जब कविता में प्रकृति चित्रण की बात करते हैं तो हमें प्राचीन कविता के संसार में लौटना पड़ता है। इतिहास भी इस सत्य की साक्षी देता है कि आज के गीतों में यानी छन्दबद्ध कविता में प्राच्य काव्य ने जो रस-निष्पत्ति की वह आधुनिक काव्य में नहीं आ सकी। पुरानी कविता यानी कि सवैया, घनाक्षरी और कवित्त इस तरह के छन्द हैं जो प्रकृति के रंगों को लयात्मकता के सांचे में अनायास ही ढाल देते हैं। आज अनेक कवि इन छन्दों में रचनाएं कर मंचों पर अपनी अलग छाप छोड़ते हैं किन्तु, इनका कथ्य उतना गंभीर नहीं होता जितना कि पुरानी पीढ़ी के कवियों और मध्यकाल में भी रचे जाते रहे। आश्चर्य तब होता है जब वीरगाथा काल के कुछ कवियों ने प्रकृति चित्रण में भी अपनी अविस्मरणीय छाप छोड़ी है। ऐसा लगता है कि चाहे वसंत हो या प्रवास, ग्रीष्म हो या शरद उनका कथ्य नितांत ही प्रभावशाली होता रहा है।

प्राचीन कवियों की सूची में महाकवि देव, मतिराम, सेनापति, बिहारी, ठाकुर, व्दिजदेव, कवि गोपाल, भूषण आदि का समावेश होता है। इनके द्वारा रचित प्रकृति चित्रण के पदों को पढ़ते-सुनते ऐसा अनुभव होता है कि हम किसी प्राकृतिक स्थान पर बैठे हैं और ये कवि ऋतुओं के अनुसार हमें प्रकृति से परिचित करा रहे हैं। जैसे-महाकवि देव का यह पद-जिसमें वसंत अठखेलियां करता-सा प्रतीत होता है-

डार-द्रुम पलना बिछौना नव-पल्लव के
सुमन झंगूरा सोहै, तन छवि भारी दै।
पवन झुलावै केकी, कीर बहलावैं, ''देव''
कोकिल हलावै हुलसावै करतारी दै।
पूरित पराग सों उतारो करें राई-लोन
कंज-कली नायिका लतान सिर सारी दै।
मदन महीप कौ बालक बसंत ताहि
प्रातहि जगावत, गुलाब चटकारी दै।

महाकवि देव की ही तरह अन्य कवियों ने भी ब्रजभाषा का आलम्बन लेकर वासंती छन्दों का सृजन बड़े ही मनोयोग से किया है। फिर एक वैशिष्ट्य इनके सृजन में यह परिलक्षित होता है कि इनके कथ्य में वसंत के नये-नये चित्र उभरे हैं। किसी का भाव-पक्ष अन्य कवि से नहीं टकराता। जैसे महाकवि देव ने जिस लालित्य के साथ वसंत को गाया, उसका अन्य रूप महाकवि सेनापति के इस पद में हैं- वैसे सेनापति का ग्रीष्म वर्णन सबसे श्रेष्ठ माना जाता है। सेनापति कहते हैं-

बरन-बरन तरु फूले उपवन-बन
सोई चतुरंग संग दल गहियतु है।
बंदी जिमि बोलत बिरद बीर कोकिल हैं
गुंजत मधुप गान गुन बहियतु है।
आवै आसपास पहुपन की सुबास सोई
सौंधे के सुगंध मांझ सने रहियतु है।
सोभा को समाज सेनापति सुख-साज-आजु
आवत वसंत ऋतुराज कहियतु है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में विभिन्न कालों का विभाजन किया गया है और उस काल खण्ड के कवियों के काव्य सृजन या कौशल का अपना ही वैशिष्ट्य रहा है। महाकवि बिहारी रीति काल के उल्लेखित कवि रहे हैं किन्तु, वह अपनी बात महज दोहे में ही पिरो देते हैं। जबकि उनके समकालीन कवि घनाक्षरी या सवैया में कहते हैं। वसंत की बात बिहारी ने किस चातुरी से की है- एक दोहे में वह कहते हैं-

छवि रसाल सौरभ सने मधुर माधवी गंध।
ठौर-ठौर झूमत-झपट भौर-भौर मधु अंध॥

हिन्दी का यह साहित्य ऋतु-वर्णन से भरा पड़ा है। इन्हें पढ़ने और सुनने में अनूठा आनंद आता है। ये रचनाएं मानव के मन में ऐसे उतरती हैं, जैसे कवि हमें प्रत्यक्ष बैठकर सुना रहा हो। वैसे भी कविगण आनंद का प्रतिरूप ही होते हैं। इसी सूची में महाकवि पद्माकर और घनानन्द का भी समावेश होता है। ब्रज भाषा का माधुर्य जितना ऋतु वर्णन की रचनाओं में समाविष्ट है- उतना अन्य भाषाओं में नहीं जबकि हर भाषा का अपना आनंद है और माधुर्य भी। फिर कई भाषाएं एक-दूसरी से संबंध बनाये रखती हैं परन्तु आनंद का बंटवारा नहीं होता। सौभाग्य की बात यह है कि ब्रजभाषा का अपना माधुर्य है और बुन्देलखण्डी, भोजपुरी का अपना। मतिराम अपने युग के बड़े कवि हुए हैं। उनका कथ्य अत्यंत ही महीन आशय को लेकर चलता रहा है। वासंती-काव्य में भी वह विलक्षण प्रतिभा का परिचय देते हैं- जैसे

मलय समीर लगौ चलन सुगंध सीरी
पथिकन कीने परदेसन तैं आवने
मतिराम सुकवि समुहनि सुमन फूलै
कोकिल मधुप लागे बोलन सुहावने
आयो है वसंत भऐ पल्लवित जलजात
तुम लागै चलिबे की चर्चा चलावने
रावरी तिया को तरबर, सरवरन के
किसलै-कमल व्है हैं बारक बिछावने।

आज जिस हिन्दी का परिष्कृत स्वरूप हम देखते और उसका उपयोग करते हैं- उसमें भी प्राय: प्रत्येक ऋतु का वर्णन मिलता है किन्तु ब्रज का आनंद कुछ और ही है। जिस तरह के उपमा-उपमान का प्रयोग प्राचीन कवियों द्वारा किया गया है- वैसा आज के कवियों के काव्य में नहीं मिलता। जबकि ऋतु-वर्णन में उपमा और उपमान का विशेष महत्व होता है। फिर विभिन्न छन्द प्रयोगों के कारण श्रोता रस-सिक्त होने के अवसर खो देता है। ठाकुर कवि बुन्देलखण्ड के विशिष्ट कवि हुए हैं और उनकी अभिव्यक्ति का कोई सानी नहीं हुआ- कम से कम बुंदेलखण्ड में तो नहीं। एक पद में वह कहते हैं कि वसंत के आगमन के साथ ही आम्रकुंज बौरा रहे हैं और कोयलिया कुंज-कुंज में गा रही है- वह प्रेमी के वियोग में प्रेमिका का बिछोह बड़ी ही मार्मिकता से करते हैं-

बौर रसालन की चढ़ि डारन,
कूकत कोयलिया मौन चाहै ना।
ठाकुर कुंजन-कुंजन भौरन भीर
चुपै वौ रहै ना।
सीतल मंद सुगंधित बारि समीर
व्याकुल लगै तन धीर धरै ना।

सीतल मंद सुगंधित बारि समीर
लगै तन धीर धरै ना।
व्याकुल कीन्है बसंत बनाय कैं
जायकै कन्त सो कोऊ कहै ना

वसन्तागमन के साथ ही प्रेमिका या पत्नी का हृदय प्रेमी से या पति से मिलने हेतु आतुर हो उठता है। जब यह मिलनातुरता कविता में बंध जाती है तो कवि का काव्य कौशल प्रगट होने लगता है। ठाकुर कवि ने अपने काव्य कौशल का परिचय देते हुए मिलनातुरता के मनोभावों को एक ही पंक्ति में कह दिया कि ''कोई कन्त से जाकर कहे कि वसंत आ गया है।'' सचमुच यह ऋतु कुछ ऐसी ही मनभावन है कि इसके रंग में हर प्राणी रंग जाता है। यहां तक कि वन-प्रान्तरों में आकाश में उड़ने वाले पक्षी भी आनंद विभोर हो उठते है। फूलों-कलियों के साथ उनका मैत्री संबंध और भी प्रगाढ़ हो उठता है। कवि व्दिजदेव के इस पद में यही दृश्य विद्यमान हुआ है-

औरे भांति कोकिल चकोर और सौर बोले
औरे भांति सबद पपीहन के व्है गयै।
औरे भांति पल्लव लिये है बूंद-बूंद तरू
औरे भांति छबि-कुंज-कुंज कुंजनि उनै गये।
औरे भांति शीतल सुगंध मंद-मंद डोलै
व्दिजदेव देखत न देख ऐसे पल व्है गये।
औरे राग औरे रंग औरे साज औरे संग
औरे
बंन और छन औरे मन व्है गये।

प्राचीन कवियों की इसी परम्परा में ऋतुओं का गुणानुवाद करने वाले एक कवि गोपाल भी हुए हैं। परन्तु, उनके कथ्य में काफी भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। उन्होंने पक्षियों की किलोल करने को महत्व दिया है। पपीहें, कोयल और चकोर ने उनके इस पद को जैसे नया अर्थ दिया हो-

बीतिगे कुहांसे रूआंसे भरे दिन-रैन
उमगत पट चहुं छोर न लनाई की।
सर-सरसों के तीर नीर झलकृत लागे,
गुजरनि छाई अरबिन्द अरूनाई है।
सुकवि गोपाल बेलि नवल निहाल देखो
पी-कहां पुकार तैसी पर ऋतु गाई है।
बालो पियराई कै बखानौ पियराई बन
झुकी अमराई तैसी ऋतु अवांई की।

इस प्रकार वासंती रंग में फागुन की आहट आने लगी है। पलाश भी फूलने का संकेत दे रहा है। वसंत इस धरा का श्रृंगार करने को उद्धृत है। वासंती पवन में फूल-कलियां हिलने-डुलने के दृश्य उपस्थित कर रहे हैं। मंद समीरण में एक प्रकार का नया सौरभ करवट ले रहा है। ताल-तलैया, सरिता के तट रमणीकता में सराबोर हुए जाते है।

आइए! हम भी वासंती पवन के साथ अपने को रसंसिक्त करें!

-108-ए, प्रगति नगर, ऋषिपुरम
फेज-1, बरखेड़ा, भोपाल-462021

वसंतोत्सव

शारदा शुक्ला

वसंत को उसकी संपूर्णता में जीएं

भगवान कृष्ण ने गीता में स्वयं 'ऋतुनाम कुसुमाकर:' कहकर वसंत ऋतु की श्रेष्ठता उजागर की है। यह ऋतु चैत्र एवं बैशाख महीनों में होती है। अपनी मधुरता के कारण इन महीनों को मधु-माधव भी कहते हैं। प्रकृति इस समय पुराने पत्तों का त्याग कर नई कोपलों को धारण करती है। इसलिए वसंत का आगमन पुराने ऋण और बोझ उतार फेंकने का भी सूचक है। इस समय घर में कैद होकर रह गई दिनचर्या में बदलाव आने लगता है। इस मौसम के आते ही लोग घरों से बाहर निकलकर जीवन के नए रंग संजोने लगते हैं। सम्पूर्ण प्रकृति माधुर्य से गदरा उठती है। उसके सौन्दर्य की मादकता उस माधुर्य भार को संभाल नहीं पा रही है। कहीं कली किलकारी मार रही है। चहुं ओर वसंत ही वसंत है-

'द्वार में दिसान में, दुनी में देस देसन में
देखो द्वीप द्वीपन में, दीपत दिगंत है
बीथिन में, बृज में, नवेलिन में बेलिन में
बनन में, बागन में, बगर्‌यो वसंत है।'

सम्पूर्ण प्रकृति मनुष्य के लिए वरदान है। इसकी प्रत्येक वस्तु उपयोगी है, इसलिए सूखी पत्तियों एवं टहनियों को एकत्र कर होलिका दहन की तैयारी वसंत पंचमी के दिन से आरंभ हो जाती है। सामूहिक नृत्य गान और आपसी चुहलबाजियों के बीच इस दिन मोहल्ले-मोहल्ले होलिका स्थापित की जाती है।

वसंत नई रचना का, नई सृष्टि के प्रारंभ का प्रतीक है और मनुष्य की रागात्मक आकुलता की पहचान है। भले ही वेलेन्टाइन डे के रूप में एक नया प्रेम पर्व हमारे बीच अपनी पैंठ बना रहा हो, परन्तु हमारी संस्कृति का शाश्वत दर्शन जो काम पर्व के रूप में आदि काल से हमारे समाज में मान्य है, उसमें भी शक्ति तथा फक्कड़ बैरागी भाव जुड़ा है। इस फक्कड़ बैरागी भाव की परिणति काम को भस्म करने वाले शिव के विवाह दिवस शिवरात्रि के रूप में होती है, जो इस ऋतु का एक प्रमुख पर्व है। ये हमारी भारतीयता जो 'राग' में भी 'विराग' को खोज लेती है।

वसंत पंचमी वागेश्वरी जयंती और मां सरस्वती का जन्म दिवस है। इस दिन भक्ति भाव से विद्या की अधिष्ठात्री देवी मां सरस्वती का पूजन अर्चन किया जाता है, जो कि द्योतक है इस बात का कि अनुराग और उल्लास के इस पर्व में बुद्धि विवेक का सम्बल बना रहे। प्रकृति के यौवन स्वरूप इस मधुमास में हमारा तन-मन भी एक सुहानी मधुर मादकता से भर उठता है। अभावों और कुंठाओं से भरे जीवन का हर मधुमास तो उमंग और उल्लास से ओत-प्रोत नहीं होता। कभी-कभी जिन्दगी की कशमकश इस वासंती रंग को फीका करने लगती है, तो क्यों न इसी वसंत को उसकी सम्पूर्णता में जी लिया जाए। ■

देव-महिमा

संदीप कपूर

एक होते भी अनेक रूप वाले हैं शिव

शिव एक होते हुए भी अनेक रूपों वाले हैं। उनके कुछ प्रसिद्ध रूप हैं– नटराज, शरभ, बटुक, क्षेत्रपाल, मृत्युंजय, शिवलिंग, त्रिमूर्ति, हरिहर, पशुपति तथा अर्द्धनारीश्वर। शिव के इन सब रूपों की विभिन्न प्रदेशों में अपनी–अपनी शक्ति तथा महत्ता है।

भारत में सर्वाधिक महत्व जिस देवता को मिला है, वे हैं शिव। इसी कारण भारत में महा शिवरात्रि को राष्ट्रीय त्यौहार का दर्जा दिया गया है। प्रत्येक धर्म ने किसी न किसी रूप में शिव का अनुमोदन किया है। अमरनाथ, सोमनाथ, विश्वनाथ और पशुपतिनाथ (नेपाल) में शिव रूपी प्रतीक शिवलिंग विद्यमान हैं। यहां तक कि प्रसिद्ध मुस्लिम तीर्थ मक्का में भी शिवलिंग के आकार का एक पत्थर है, जिसे सब मुसलमान सम्मान एवं श्रद्धा के साथ चूमते हैं। उसे 'संगे असवद' कहा जाता है।

ईसाई धर्म के संस्थापक यीशु मसीह तथा सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानकदेव ने भी परमात्मा को एक निराकार पुंज माना है। यहूदी लोग प्रभु को 'जेहोवा' नामक जिस नाम से सम्बोधित करते हैं, वह भी शिव का रूपांतर प्रतीत होता है। बौद्ध धर्म के अनुयायी शिवलिंग के आकार की एक प्रतिमा को अपने सामने रखकर ध्यान लगाते हैं।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं विद्वान डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी भी शिव की व्यापकता को स्वीकार करते हुए कहते हैं कि सही मायनों में शिव राष्ट्रीय देवता हैं। इस महादेवता के रूप में समूचे भारत का विश्वास मूर्तिमान हुआ है। दर्शन, नाटक, वास्तुकला, चित्र, संगीत, काव्य तथा शिल्प आदि जो कुछ भी भारत की श्रेष्ठ देन है, उन सब पर ही इस महादेवता का प्रभाव है।

इन सब तथ्यों के अध्ययन के उपरांत शिव की राष्ट्रीय मौजूदगी एवं सर्वव्यापकता पर कोई संदेह नहीं रह जाता। यह भी सत्य है कि शिव राष्ट्रीय एकता तथा अखंडता के प्रतीक हैं। शिवरात्रि का पर्व इसका सजीव उदाहरण है।

यह पर्व भारतवासियों में सदैव एक नवीन उत्तेजना एवं जिज्ञासा का संचार करता है। महापुरुषों का जन्मदिन प्रायः जयंती के रूप में मनाया जाता है। परन्तु शिव 'जयंती' न होकर शिव 'रात्रि' क्यों मनायी जाती है? इसके उत्तर में कहा गया है कि क्योंकि रात्रि तमोगुण, पापाचार तथा अज्ञानता का प्रतीक है व शिव ठहरे सबके हितैषी! अतः इस कलयुग में जबकि गुरु, आचार्य, सच्चे संत-संन्यासी, हितैषी मानव आदि सभी दुखी होते हैं, तब इस संसार में प्रतिवर्ष कालिमा रूपी बुराइयों को दूर करने के लिए एक दिव्य ज्योति का अवतरण होता है, यही शिवरात्रि मानी जाती है।

शिव एक होते हुए भी अनेक रूपों वाले हैं। उनके कुछ प्रसिद्ध रूप हैं- नटराज, शरभ, बटुक, क्षेत्रपाल, मृत्युंजय, शिवलिंग, त्रिमूर्ति, हरिहर, पशुपति तथा अर्द्धनारीश्वर। शिव के इन सब रूपों की विभिन्न प्रदेशों में अपनी-अपनी शक्ति तथा महत्ता है।

प्रायः सभी चित्रों में शिव को मस्तक पर अर्द्धचंद्र धारण किए हुए दिखलाया गया है। समुद्र मंथन की कथा में यह स्पष्ट है कि मंथन के समय समुद्र से विष व अमृत कलश निकले। अमृत पाने के लिए विष चखना जरूरी था। शिव ठहरे भोले बाबा, उन्होंने झट से विष अपने गले में उतार लिया और चंद्रमा ने अमृत का पान कर लिया।

विष के ताप के निवारणार्थ शिव ने चंद्र की एक कला को अपने मस्तक पर धारण कर लिया। इसी से वे चंद्रशेखर कहलाए। भावताकार तृतीय स्कंध में उनके इस रूप की महिमा का वर्णन इन शब्दों में किया गया है-

मानस चंद्रमा जातो, बुद्धिर्बुद्धे गिरापतिः
अहंकारस्तवोः रुद्रः वितु चैत्य स्तनोभवतु॥

विषपान करने के कारण शिव का गला नीला हो गया। इसी से वे नीलकंठ कहलाए। संसार में अणु-परमाणु से लेकर बड़ी से बड़ी शक्ति में जो स्पंदन दिखाई देता है, वह उनके नृत्य व नाद का फल है। वे ब्रह्माण्ड का कभी भी विनाश नहीं चाहते। उन्हें संहार प्रिय नहीं, पर जब पाप अपनी चरम सीमा पर पहुंच जाता है तो उनका नृत्य विवश होकर प्रलयकारी रूप धारण कर लेता है। उनका प्रिय अस्त्र त्रिशूल आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक दुखों का सूचक है। कल्याणकारी कार्यों तथा दयालु हृदय ने शिव को लोकप्रियता दी है।

आधुनिक काल में शिव की प्रासंगिकता तो सभी स्वीकारते हैं, किन्तु शिवरात्रि के नियम तथा अर्थ टूटते जा रहे हैं। यदि हम इस पावन पर्व पर काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार आदि पंच विकारों से दूर रहकर निर्मल हृदय से उपवास रखें तथा एकाग्रचित्त होकर शिवज्योति का स्मरण करें, तब हम शिव की महिमा का अनुभव कर सकते हैं व इसे ही सही अर्थ दे सकते हैं और तब यह पर्व राष्ट्रीय एकता को और अधिक मजबूत करने में अपना सक्रिय योगदान दे सकेगा।

-88/1395, बलदेव नगर
अंबाला शहर-134007 (हरियाणा)

अवबोध

संत श्री आसाराम बापू

यह कैसी विडम्बना है जो छूटती नहीं ?

निज स्वार्थ में लिप्त होकर किया जाने वाला कार्य मोह है और सेवा समझकर, नियति समझकर किया जाने वाला कार्य प्रेम है। इसी प्रेम से परमात्मा प्रसन्न होते हैं। जबकि मोह के कारण परमात्मसुख, परमात्मशांति से हम परे हो जाते हैं और विकार, अशांति आदि प्रकट होते हैं।

जगत में सुख की आशा से और वस्तुओं पर अधिकार जमाने से अपना अंत:करण अशुद्ध होता है, लेकिन सुख का लालच त्यागने से तथा वस्तु जिसकी है उसकी मानकर, उसका सदुपयोग करने से अंत:करण शुद्ध होता है। इसी प्रकार प्रेम तथा मोह में भी अंतर है। प्रेम दिया जाता है, बदले में कुछ इच्छा नहीं होती, जबकि मोह बिना बदले के करवट नहीं बदलता। जैसे मां बच्चे का पालन-पोषण प्रेम से करती है तो वह मोह नहीं है। बच्चा बड़ा होकर, पढ़-लिखकर मुझे बहुत सुख देगा... ऐसा मोह रखकर अगर बच्चे का पालन-पोषण किया जाता है तो फिर बच्चे से जो आशाएं की जाती हैं, वे पूर्ण नहीं होती। यदि मोहरहित प्रेम से बच्चे का पालन-पोषण किया गया है तो वह बच्चा बड़ा होकर उम्मीद से अधिक सेवा कर सकता है। कदाचित् न भी करे तो भी दु:ख नहीं देगा।

निज स्वार्थ में लिप्त होकर किया जाने वाला कार्य मोह है और सेवा समझकर, नियति समझकर किया जाने वाला कार्य प्रेम है। इसी प्रेम से परमात्मा प्रसन्न होते हैं और प्रकट भी होते हैं जबकि मोह के कारण परमात्मसुख, परमात्मशांति से हम परे हो जाते हैं और विकार, अशांति आदि प्रकट होते हैं।

स्त्री के शरीर में मोह करोगे तो उसमें मौजूद अन्तरात्मा नहीं दिखेगा, बल्कि हाड़-मांस दिखेगा और उससे स्त्रीसुख लेने की इच्छा प्रबल होगी। यदि पुरुष ऐसा करता है तो यदि वह स्त्री का गहरा शत्रु है। यदि स्त्री ऐसा करती है तो वह पुरुष की गहरी शत्रु है। दोनों भले ही आपस में मित्र हों लेकिन वास्तव में एक-दूसरे के खतरनाक शत्रु होते हैं।

खूंखार शत्रु तो चाकू दिखाकर एक बार हानि करेगा लेकिन ऐसे मित्र तो बिना चाकू दिखाए अनगिनत बार हानि करते रहते हैं। ऐसे ही खुशामद-चाटुकार किस्म के लोग वाह भाई वाह! वाह सेठ वाह! करते हैं और सेठ भ्रमित हो जाता है कि मैं सेठ हूं क्योंकि असली सेठ को वह भूला हुआ है। इसलिए अहंकार करता है कि मैं सेठ हूं। ऐसा विपरीत देखना मोह है। इसी कारण राजा-महाराजा यशोगान आदि सब करवाकर भी पुण्य कर्मों से जब थोड़ी बहुत बुद्धि खुलती तो देखते थे कि कुछ भी नहीं है। फिर राजपाट से निवृत्त होकर वे भी महापुरुषों के चरणों में पहुंच जाते थे और बहारी करते, लिपाई करते और अन्य सेवाओं के माध्यम से उनकी करुणा-कृपा धीरे-धीरे पचाकर परम पद का, परमात्मशांति का अनुभव कर लेते थे।

आज का आदमी आता है गुरुओं के पास। बाबाजी! मैं बहुत दूर से आया हूं। मुझे अमुक-अमुक काम करना है, बता दीजिए, छू कर दीजिए, ताकि जल्दी काम निपटाकर जल्दी वापस पहुंच जाऊं। अरे, अपने को कुछ घिस तो सही भाई! वासना के अहंकार और अहं को तनिक मिटने तो दे।

साईं! मुलाकात दो... यह करो... वह करो...। छूमंतर के लिए तो किसी जादूगर के पास जाना पड़ेगा। जादूगर स्वयं ही फंसा हुआ है और आपको भी पूरी तरह से अपने जाल में फंसा सकता है लेकिन यदि ब्रह्मवेत्ता के

द्वार जाना है तो रामजी की तरह जाओ। रामजी गये थे वशिष्ठजी के चरणों में, एकनाथजी गये थे अपने गुरु जनार्दन स्वामी के चरणों में, पूरणपोड़ा रहा था एकनाथजी के चरणों में, विवेकानंद रहे थे रामकृष्ण परमहंस के चरणों में।

पूर्ण को पाना है तो पूरा अहंकार छोड़ना पड़ेगा। आज कल तो लोग चलती गाड़ी में ही पूछते रहते हैं कि बाबाजी! मैं साधना कैसे करूं? थोड़ा बता दीजिए। मेरी इस तारीख की टिकिट है। आप बता दीजिए मैं क्या करूं?

ऐसी स्थिति में कहना पड़ता है कि लोग वेदांत शक्तिपात साधना शिविर में आओ। ऐसा कहना तो मुश्किल होता है कि तुम भी गलती कर रहे हो... शाश्वत का खजाना छोड़कर नश्वर चीजों की ओर भागे जा रहे हो।

आज सब कुछ विपरीत दिख रहा है। जिसके लिए जीवन मिला है उसके लिए हमारे पास तनिक-सा भी समय नहीं और जिसे छोड़कर एक दिन मर जाना है उससे उपरामता नहीं। इससे बड़ा मोह और क्या हो सकता है? यह कैसी ममता है जो छूटती ही नहीं? इससे बड़ा नशा या बड़ी शराब क्या हो सकती है? शराबी की शराब तो दो-चार घंटों में उतर जाती है लेकिन हमारी मोह-ममता की शराब अभी तक नहीं उतर रही है। ■

डॉ. विद्या विनोद गुप्त

सत्यं-शिवं की प्रतीक नारी

नारी ममता की मूर्ति है, शक्ति का प्रतीक है और क्षमता की छवि है, इसलिए उसकी माता और शक्ति के रूप में वंदना की जाती है।

नारी शक्ति है जो पुरुषार्थ से प्राप्त होती है। नारी लक्ष्मी है जिसे तपस्या से प्राप्त की जाती है। नारी विद्या है जिसे साधना से अर्जित की जाती है। चिंतन-मनन और वंदन के क्षेत्र में नारी की ही महिमा है। अर्चन पूजन और कीर्तन के क्षेत्र में नारी ही अग्रगण्य है। भावना में, साधना में और उपासना में नारी से बढ़कर नर भी नहीं। नारी ममता की मूर्ति है, शक्ति का प्रतीक है और क्षमता की छवि है, इसलिए उसकी माता और शक्ति के रूप में वंदना की जाती है। नारी वीर भोग्या नहीं वीर जाया है- शक्ति प्रदाता है जिसे उसने एक बार वरण कर लिया उसी के साथ मरणान्त रहती है चाहे उसे अरण्य मिले या हिरण्य। परिवार और समाज का सारा गरल स्वयं पी जाती है और अपने हृदय का अमृत पिलाकर पुत्र-पुत्री तथा अपने पति एवं सास-ससुर को सुखी, स्वस्थ, संपन्न, सुसंस्कारित और शक्ति संपन्न बनाती है न हाय करती न आह। न चूं करती न चां। सहनशक्ति में नारी वसुन्धरा को भी मात करती है। नर पुरुष कहलाता है और नारी प्रकृति इसीलिए गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है-

गिरा अरथ जल विचि सम कहियत भिन्न न भिन्न।
वंदऊं सीता राम पद जिन्हहिं परम प्रिय खिन्न।

अनुशासन की कठोरता और मर्यादा की निष्ठा प्रकृति की नियति है। अनुशासन और मर्यादा का उल्लंघन करने पर हितकर प्रकृति भी क्रूर, कराल और विध्वंसक बन जाती है। नारी कल्याणी है परन्तु अपना अपमान करने वाले पर काली का रूप धारण कर लेती है और उसका विनाश कर देती है। ऋषि दुर्वासा को मुंह छिपाकर भागना पड़ा था। जयद्रथ को मुंह को खानी पड़ी थी और महाबली कीचक को तो जान से हाथ धोना पड़ा था। नारी की इज्जत से खिलवाड़ करने वाले भले ही अपने को सुरक्षित समझ लें पर ईश्वरी न्याय उन पर कहर बनकर टूट पड़ता है। भारतीय साधना में नारी को अति उच्च स्थान प्रदान करते हुए कहा गया है-

नारी त्रैलोक्य जननी, नारी त्रैलोक्य रूपिणी।
नारी त्रिभुवन धारा नारी देह स्वरूपिणी॥
न च नारी सम सौख्यं, न च नारी समागति।
न नारी सदृशं भाग्यं न भूतो न भविष्यति॥

अर्थात नारी त्रिलोक की माता, त्रिलोक का स्वरूप, त्रिभुवन का आधार और शक्ति है। इसके समान न सुख है न गति है न भाग्य है न राज्य है। नारी तीर्थ, योग, जप, तप, मंत्र और धन से भी श्रेष्ठ है। नारी के समान न कभी कुछ था न है और न होगा।

सती अनुसूइया ने ब्रह्मा, विष्णु और महेश को पुत्र रूप में क्रमशः चंद्रमा, दत्तात्रय और दुर्वासा के नाम से जन्म दिया था।

नारी के महत्व पर प्रकाश डालती हुई महादेवी वर्मा लिखती है-''वास्तव में नारी ही प्रेरणा शक्ति का नाम है। और पुरुष संघर्ष शक्ति का। प्रेरणा और संघर्ष का संगम ही पूर्ण जीवन है। पुरुष का जीवन संघर्ष से प्रारंभ होता है और स्त्री का आत्म समर्पण से।

राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने यशोधरा, उर्मिला और कैकेयी के रूप में तीन नारियों का चित्रण किया है पर भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण में, यशोधरा के लिए-

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दूध और आंखों में है पानी॥

नारी चेतना है, प्रेरणा है, शक्ति है। नारी सत्यं शिवं और सुन्दरम की प्रतीक है। पुरुष को उसकी रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

मानस में राम से सीता कहती है-(तुलसी)
जिय बिनु देह नदी बिनु वारी तैसिय नाथ पति बिनु नारी।
द्वापर की विधृता कहती है-(मैथिलीशरण गुप्त)
कामुक चाटुकारिता ही थी- क्या वह गिरा तुम्हारी।
एक नहीं दो-दो मात्राएं- नर से भारी नारी॥

नारी इसीलिए सत्यं, शिवम और सुन्दरम की प्रतीक है।

-5/7, सरदार पटेल मार्ग, चाम्पा-495671 (छत्तीसगढ़)

रचनात्मक भी होती है उदासी

अवसाद का एक प्रकार बाइपोलर डिसऑर्डर मनोदशा के असंतुलन का ऐसा ही उदाहरण है। इस बीमारी के शिकार लोगों में अक्सर सामान्य से अधिक रचनात्मकता, सहनशीलता और कभी-कभी बुद्धिमता भी पायी जाती है। ऐसे अनगिनत लेखक, कवि, संगीतज्ञ, वैज्ञानिक, चित्रकार और रचनाकार हैं जिनमें किसी न किसी प्रकार का बाइपोलर असंतुलन पाया गया, जिसे वे खुद अपनी रचनात्मकता के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं। दरअसल चिकित्सा क्षेत्र में रचनात्मकता को हाइपोमैनिया के साथ जोड़ा गया है। सफलता प्राप्त करने की स्वाभाविक चेष्टा और विचारों की उड़ाने का सीधा संबंध रचनात्मक इरादों से किया जाता है।

-डॉ. आलम अली

जीवनचर्या

साध्वी कल्परसाश्री

पारिवारिक सौहार्द का प्रशिक्षण

आज संयुक्त परिवार बिखर रहे हैं। एकल परिवार भी तनाव में जी रहे हैं। बदलते परिवेश में पारिवारिक सौहार्द का ग्राफ नीचे गिर रहा है, जो एक गंभीर समस्या है। परिवार से पृथकता तक तो ठीक है, किंतु उसके मूल आधार स्नेह में भी खटास पड़ जाती है। स्नेह सूत्र से विच्छिन्न परिवार, फिर 'घर' के दिव्य भाव को नहीं जी पाता क्योंकि तब उसकी दशा 'परिवार के सदस्यों की परस्पर अजनबी समूह' जैसी हो जाती है।

समस्या आदिकाल से है, किंतु वह अब तक इसलिए है क्योंकि अधिकांश परिवारों ने समाधान के अति सरल उपायों पर विचार ही नहीं किया या फिर यों कहें कि अपनी रूढ़िवादिता की झोंक में विचार करना पसंद ही नहीं किया। मेरे विचार से, स्नेह, सम्मान और स्वतंत्रता की सूत्रत्रयी ही समाधान का मूल है। यदि तीनों का परस्पर अंतर्संबंध समझकर उसे आचरण में उतार लें, तो घर को 'स्वर्ग' बनते देर नहीं लगेगी। दुनिया भर की धन दौलत व्यक्ति को वह सुकून नहीं दे सकती, जो स्नेह और सम्मान का मधुर भाव देता है।

आप स्वयं ही विचार करें कि एक व्यक्ति अपने परिवार से और क्या चाहेगा ? मात्र सास बहू के संबंध में ही नहीं बल्कि पिता और पुत्र, मॉ और बेटी, देरानी जेठानी, ननद और भाभी, भाई भाई आदि हर रिश्ते पर यह बात लागू होती है। आप सामने वाले को स्नेह, सम्मान और स्वतंत्रता दीजिए, प्रतिफल में आपको भी उससे यही मिलेगा।

आप अपनी बुद्धि और विवेक से यह विचारें कि पारिवारिक सुख शांति अधिक महत्वपूर्ण है अथवा रूढ़िवादिता ? बंधी बंधाई लीक पर चलकर कोई उपलब्धि भी हासिल न हो बल्कि जो कुछ अच्छा था, वह भी छूटता जाए तो फिर ऐसा नियम पालन किस काम का ? साड़ी और सिर पर पल्लू की अनिवार्यता, पति समेत घर के सभी सदस्यों से पहले भोजन न करने की कड़ाई, सास ससुर से हास-परिहास न करने की कूपमण्डूपता, ननद देवर के छोटे-छोटे बच्चों को जी और आप कहने की औपचारिकता, पति के साथ भ्रमण व मनोरंजन न करने और महत्वपूर्ण व्यक्तिगत व पारिवारिक फैसलों में भागीदारी न होने की कथित संस्कारशीलता से आज तक कौन-सा परिवार कोई ऐसी महान उपलब्धि हासिल कर पाया है, जिससे उपर्युक्त आचरण की सार्थकता सिद्ध होकर उसका नाम इतिहास के स्वर्णाक्षरों में दर्ज हो गया हो?

जिस प्रकार आयुर्वेद में नीरोगी काया के लिए वात, पित्त और कफ का संतुलन अनिवार्य बताया गया है, उसी प्रकार पारिवारिक सुख और शांति के लिए स्नेह, सम्मान और स्वतंत्रता का संतुलन जरूरी है। 'जैसा बोया, वैसा काटोगे' के सर्वकाल सत्य के आधार पर कहा जा सकता है कि जो भाव और व्यवहार हमारा दूसरों के प्रति होगा, वही हमें भी प्रतिफल में मिलेगा। तभी 'सुख' अपनी पूर्णता को प्राप्त करेगा और तब आपका घर ऐसे अटल सुख, मंगल व शांति से भर उठेगा, जिसकी सुगंध से आपके मन प्राण ही नहीं, आत्मा भी तृप्त होगी और आत्मा की तृप्ति ही तो समस्त तृप्तियों का मूल है।

सुखद पारिवारिक जीवन के लिये संस्कार और सहिष्णुता भी जरूरी है। जिनके पास संस्कारों की सृजना होती है, उनके लिए वे संस्कार आलम्बन बन जाते हैं और व्यक्ति और परिवार संभल जाते हैं। गृहस्थ समाज में सुखी गृहस्थ जीवन व्यतीत करने के लिए सहिष्णुता की बहुत जरूरत है, अपेक्षा है, जिसकी आज बहुत कमी होती जा रही है। सहन करना जानते ही नहीं हैं। पत्नी हो, मां-बेटे, मां-बेटी, भाई-भाई, भाई-बहन, सास-बहू, गुरु-शिष्य कहने का अर्थ है कि प्राय: सभी में सहिष्णुता की शक्ति में कमी हो रही है।

एक व्यक्ति अपने भाई को सहन नहीं करता, माता-पिता को सहन नहीं करता और पड़ोसी को सहन कर लेता है, अपने मित्र को सहन कर लेता है। यह प्रकृति की विचित्रता है। सहन करना अच्छी बात है। लेकिन घर में भी एक सीमा तक एक-दूसरे को सहन करना चाहिए, तभी छोटी-छोटी बातों को लेकर मनमुटाव व नित्य झगड़े नहीं होंगे।

इन्सान की पहचान उसके संस्कारों से बनती है। संस्कार उसके समूचे जीवन को व्याख्यायित करते हैं। संस्कार हमारी जीवनी शक्ति है, यह एक निरंतर जलने वाली ऐसी दीपशिखा है जो जीवन के अंधेरे मोड़ों पर भी प्रकाश की किरणें बिछा देती है। उच्च संस्कार ही मानव को महामानव बनाते हैं। सद्संस्कार उत्कृष्ट अमूल्य सम्पदा है जिसके आगे संसार की धन दौलत का कुछ भी मौल नहीं है। सद्संस्कार मनुष्य की अमूल्य धरोहर है, मनुष्य के पास यही एक ऐसा धन है जो व्यक्ति को इज्जत से जीना सिखाता है और यही सुखी परिवार का आधार है।

वास्तव में बच्चे तो कच्चे घड़े के समान होते हैं उन्हें आप जैसे आकार में ढालेंगे वे उसी आकार में ढल जाएंगे। मां के उच्च संस्कार बच्चों के संस्कार निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए आवश्यक है कि सबसे पहले परिवार संस्कारवान बने, माता-पिता संस्कारवान बने, तभी बच्चे संस्कारवान चरित्रवान बनकर घर की, परिवार की प्रतिष्ठा को बढ़ा सकेंगे। अगर बच्चे सत्पथ से भटक जाएंगे तो उनका जीवन अंधकार के उस गहन गर्त में चला जाएगा जहां से पुन: निकलना बहुत मुश्किल हो जाएगा।

आज की भोगवादी संस्कृति ने उपभोक्तावाद को जिस तरह से बढ़ावा दिया है उससे बाहरी चमक-दमक से ही आदमी को पहचाना जाता है। यह बड़ा भयानक है। उससे ही अपसांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा मिलता है और ये ही स्थितियां पारिवारिक बिखराव का बड़ा कारण बन रही है। वही आदमी श्रेष्ठ है जो संस्कृति को शालीन बनाये। वही औरत शालीन है जो परिवार को इज्जतदार बनाये। परिवार इज्जतदार बनता है तभी सांस्कृतिक मूल्यों का विकास होता है। उसी से कल्याणकारी मानव संस्कृति का निर्माण हो सकता है।

भारत को आज सांस्कृतिक क्रांति का इंतजार है। यह कार्य सरकारी तंत्र पर नहीं छोड़ा जा सकता है। सही शिक्षा और सही संस्कारों के निर्माण के द्वारा ही परिवार, समाज और राष्ट्र को वास्तविक अर्थों में स्वतंत्र बनाया जा सकता है। इसी उद्देश्य को लेकर श्रद्धेय गणि राजेन्द्र विजयजी म.सा. के मार्गदर्शन में सुखी परिवार अभियान चलाया जा रहा है। मेरी दृष्टि में इस अभियान के माध्यम से बदलते पारिवारिक परिवेश पर गंभीरता से चिन्तन-मनन हो रहा है और समय-समय पर पारिवारिक संरचना को सुदृढ़ बनाने के लिये प्रभावी प्रयत्न भी किये जा रहे हैं। हाल ही में गुजरात के बडोदरा एवं छोटा उदयपुर जिले के हजारों आदिवासी परिवारों में गणि राजेन्द्र विजयजी ने पारिवारिक सौहार्द का जो प्रशिक्षण दिया, उसके परिणाम भी सुखद रहे हैं। पारिवारिक सौहार्द के इस तरह के प्रयत्न हमारे परिवारों के लिये संजीवनी बन सकती है। इससे जहां हमारी परिवार परम्परा और संस्कृति को पुन: प्रतिष्ठापित किया जा सकेगा। वहां स्वस्थ तन, स्वस्थ मन और स्वस्थ चिन्तन की पावन त्रिवेणी से स्नात होने का दुर्लभ अवसर भी प्राप्त हो सकेगा। ■

दीपक जैन

बर्तनों के ब्रह्मदेव

रहते हैं वे भायंदर में तथा जन्मभूमि है बिहार किन्तु उनका हुनर आज जापान ही नहीं पूरी दुनिया में सराहा जा रहा है। आज एक तरफ हिन्दुस्तानियों में अपना पैतृक व्यवसाय त्यागने की होड़ मची हुई है, दूसरी तरफ वे हैं कि अपने पैतृक व्यवसाय का लोहा मनवाने में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सफल रहे हैं और यही वजह है कि भारत सरकार ने उन्हें सिरामिक के सर्वोच्च पुरस्कार 'शिल्प गुरु' 2008 से हाल ही में नई दिल्ली की विशाल जनमेदिनी के बीच नवाजा। यह है भायंदर में पडितजी के नाम से मशहूर ब्रह्मदेव पंडित, जो एक कलाकार के रूप में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। मिट्टी के बर्तनों को आधुनिक आकार देने में उन्हें महारथ हासिल है।

मिट्टी के बर्तन बनाने की कला को सम्मान की नजरों से नहीं देखा जाता किन्तु ब्रह्मदेव पंडित ने इसे एक आधुनिक पुट दिया है तथा व्यवसाय के रूप में इसे विश्वस्तर पर ख्याति दिलाई है। ब्रह्मदेव पंडित के दादा मूर्ति पंडित हांडा, मटका इत्यादि अंग्रेजों को देते थे, लेकिन उसके बदले में उन्हें अनाज मिलता था। उनके पिता राम पंडित को यह व्यवसाय छोड़कर नौकरी करनी पड़ी थी लेकिन पंडितजी ने अपने पारम्परिक व्यवसाय को फिर शुरू करके कला जगत में शिखर को छूने में सफलता हासिल की।

भायंदर (पूर्व) में स्थित पांचाल उद्योग नगर के कोने में बने तीन मंजिले कलाकार निवास में जाते ही कलापूर्ण माहौल का दर्शन होता है और गांव के मिट्टी की भीनी खुशबू महक उठती है। बनियान और पायजामा पहने पंडितजी एक-एक कोने में पोटर व्हील पर मिट्टी को आकार देते हुए दिखलाई देते हैं। यह कला उन्हें वंशानुगत मिली है।

ब्रह्मदेव पंडित जब 19 वर्ष के थे तब बेलगाम स्थित खादी ग्रामोद्योग से इस कला में महारथ हासिल की। उसकी बारीकियां सीखी। आज एक दर्जन से ज्यादा लोगों के साथ वे काम करते हैं। जे॰जे॰ स्कूल ऑफ आर्ट में उन्होंने माडलिंग और स्कल्पचर बनाना सीखा तथा एलआर अजगांवकर से भी इस क्षेत्र में ज्ञान अर्जित किया। अजगांवकर श्री पंडित के गुरु है। 27 सालों तक उन्होंने सोफिया कॉलेज में शिक्षा दी। अब तक देश-विदेश के करीब 800 विद्यार्थियों को वे शिल्पकला की शिक्षा दे चुके हैं।

विख्यात कलाकार पंडित का मत है कि गांव के लोग अब शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। कोई इस व्यवसाय को जल्दी से अपनाना नहीं चाहता लेकिन वे खुद को भाग्यशाली मानते हैं कि उनके पुत्र अभय व शैलेश इस कला में रुचि

ले रहे हैं और बहु खुशबू, पत्नी देवकी पंडित ने इस कला में महारत हासिल कर उन्हें सहयोग किया व कर रहे हैं। वे इसमें और आधुनिकता लाने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने भट्टी खुद बनाई हैं। वे बोनसाई और फूलों को सजाने की जापानी कला के लिए आवश्यक गमले बनाने के लिए विश्वविख्यात हैं। वे छोटे-छोटे घर भी बनाते हैं, जिनका उपयोग बोनसाई गमलों को सजाने में होता है।

उनकी विशेष कला के लिए लगनेवाली मिट्टी गुजरात के धानगड व बेलगांव से चिकट मिट्टी आती है। इसे शुद्ध पानी व ग्राक पाउडर डालकर 15 से 24 घंटे तक रखा जाता है। मिश्रण योग्य प्रकार से तैयार होने के बाद उसे स्वरूप दिया जाता है एवं विविध डिजाइन बनाकर फिर बर्तन बनाये जाते हैं। उस पर फिनिशिंग की जाती है। इसके अलावा शेप देने के पहले पोटॅश, सिलिका, चायना, लाइम स्टोन, टाल्कम पाउडर, जिंक व टिटेनियम कॉपर आदि रसायनों का उपयोग जरूरत के अनुसार होता है।

पंडितजी ने बताया कि बर्तन को तैयार करने में कम से कम 7 से 30 दिन तक का समय लगता है। पंडितजी ने भारत में चायनीज रेस्टोरेंट में उपयोग में आने वाले विशेष बर्तन निर्मित करके दिये है। उसकी बाजार में बहुत मांग है। विशेष ताज होटल में दिये जाते सूप में उनके द्वारा बनाये गये बाउल का ही उपयोग होता है। राष्ट्रपति भवन के शिल्प म्युजियम में रखने के लिए उनके पांच विशेष शिल्प कला बनाकर रखने की विनती सरकार द्वारा की गई है। इसमें से चार का निर्माण पूर्णता की ओर है और जल्दी ही उनके बर्तन राष्ट्रपति भवन की शोभा बढ़ायेंगें।

इस व्यवसाय में उनकी पत्नी देवकी पंडित व सभी सदस्यों का योगदान है व पुत्र अभय, बहु खुशबू उनके कार्य को आगे बढ़ा रही है। विभिन्न गैलेरियों में आयोजित होनेवाली उनकी प्रदर्शनियों को भी जबरदस्त प्रतिसाद मिलता है।

पंडितजी को 1972 में पहला 'शिल्पकला पुरस्कार' मिला व अब तक 30 से ज्यादा पुरस्कारों के कारण काम दिनोंदिन बढ़ रहा है। सामाजिक सांस्कृतिक संगठन 'यूथ फोरम' ने उन्हें मीरा-भायंदर गौरव पुरस्कार से नवाजा था।

संसद सदस्य डॉ. संजीव गणेश नाइक, संसद सदस्य आनंद परांजपे, प्रकाश परांजपे ने कहा कि उन्हें केन्द्र द्वारा पदम्श्री सम्मान मिले इसके लिए हर संभव प्रयास करेंगे क्योंकि इससे महाराष्ट्र का गौरव बढ़ेगा व भायंदर का भी सम्मान बढ़ेगा।

-शॉप नं. 2, आकाशगंगा, जैन मंदिर रोड
भायंदर (पश्चिम)-401101

मेरी सम्मति में इंसान तीन प्रकार के होते हैं। एक वे जो जीवन को कोसते हैं। दूसरे वे जो उसे आशीर्वाद देते हैं और तीसरे वे जो इस पर सोच विचार करते हैं। मैं पहले प्रकार के इंसानों से उनकी दुःखी अवस्था, दूसरे प्रकार के इंसानों से उनकी शुभ भावना और तीसरे प्रकार के इंसानों से उनकी बुद्धिमत्ता के कारण प्रेम करता हूं।

-खलील जिब्रान

अंक विज्ञान

नीता बोकाड़िया

न्यूमरोलॉजी में नंबर 1 का महत्व

हर व्यक्ति किसी एक खास तारीख को जन्मा है और उस तारीख के अंक की खूबियां और खामियां जिदंगी बनकर साथ चलती हैं।

आपकी आंख से छलकता है नंबर, आपके चेहरे पर खिलता है नंबर, आपकी आवाज में बोलता है नंबर, आपके सवाल और आपके जवाब में चीखता है नंबर, आपका स्वभाव, मिजाज तय करता है नंबर और आपके सपने, चाहत और भविष्य भी तय करता है नंबर। हर व्यक्ति किसी एक खास तारीख को जन्मा है और उस तारीख के अंक की खूबियां और खामियां जिदंगी बनकर साथ चलती हैं।

न्यूमरोलॉजिस्ट और वास्तु विशारद नीता बोकाड़िया अब आपको अंकों के जरिये खुद आपसे आपका और आपके अपनों और परायों का भी परिचय करायेंगी। इस अंक में नंबर वन यानी 1 की बारी है।

किसी भी महीने की 1, 10, 19 और 28 तारीख को पैदा हुए लोगों का रूलिंग प्लेनेट 'सूर्य' होता है सूर्य हमारे सौर परिवार का पिता है। एक क्षत्रिय अपने रथ पर सवार है जिसे सात अश्व खींच रहे हैं यही सूर्य का चिन्ह या साइन है। शक्ति संख्या है नंबर 1, जो ऊर्जा को अभिव्यक्त करता है और जीवनदाता है।

नंबर 1 इरादों के पक्के और व्यक्तिवादी होते हैं। ये लोग आमतौर पर पित्त प्रकृति के होते हैं और बहुत सक्रिय भी रहते हैं। इनके स्वभाव में ठहराव होता है और ये नि:स्वार्थी, जिद्दी, मजबूत, फर्म और अथोरिरेटिव तो होते ही हैं, इन्हें इज्जत भी बहुत मिलती है।

चंद्र, मंगल और गुरु सूर्य के मित्र है, लेकिन शनि, शुक्र, राहु और केतु से सूर्य की हमेशा ठनती रहती है। बुध सूर्य के साथ जरा तटस्थ रिश्ता रखता है। सूर्य से प्रभावित लोग अक्सर रूखे और कठोर भी होते है और एक्स्ट्रोवर्ट भी है। ये अपने दोस्तों के लिए जितने मददगार होते हैं अपने दुश्मनों के लिए उतने ही क्रूर। ये लोग फेमस भी होते हैं और अपने कार्य क्षेत्र में ऊंचा ओहदा भी पाते हैं तथा इनके कार्यों की प्रशंसा भी होती है। वे सबसे अलग नजर भी आते हैं और सबके आकर्षण का केन्द्र भी बनना चाहते हैं। ये लोग सीधी बात करने में यकीन रखते हैं। अनुशासित और व्यावहारिक भी होते हैं। अपने विचारों के वे स्वयं निर्माता है। किसी भी कार्य में तुरंत निर्णय कर लेते हैं। किसी की रोक-टोक पंसद नहीं है न कि किसी का हस्तक्षेप या सुझाव।

इन लोगों को अपने महत्वपूर्ण काम किसी भी महीने की 1, 10, 19 और 28 तारीखों को शुरू करने चाहिए। खासकर 21 जुलाई से 28 अगस्त और 21 मार्च से 28 अप्रैल के बीच। 4, 13, 22 और 31 तारीख को पैदा हुए लोगों से इनके रिश्ते सीधे और सौहार्द भरे होते हैं। रविवार और सोमवार इनके लिए सबसे ज्यादा भाग्यशाली दिन होते हैं और सुनहरा पीला और नारंगी रंग इनके लिए खासे अनुकूल साबित होते हैं। सूर्य की आराधना और रविवार को उपवास रखना इनके लिए शुभ फलदायी होते हैं।

-71/73, कुमठा स्ट्रीट, मैन रोड, फोर्ट
मुम्बई-400001, मो. 09920374449

कुछ खास नंबर-1 की हस्तियां

मुनि मदमसागर महाराज	10 सितम्बर
इंदिरा गांधी	19 नवम्बर
सद्दाम हुसैन	28 अप्रैल
लता मंगेशकर	28 सितम्बर
धीरूभाई अंबानी	28 दिसम्बर
ऐश्वर्या राय बच्चन	1 नवम्बर

सस्ती स्वास्थ्य सेवाएं

प्रताप सी. रेड्डी
चेयरमैन : अपोलो ग्रुप

चार बेटियां हैं मेरी और चारों मेरे ग्रुप में अलग-अलग जिम्मेदारी संभालती हैं। सबसे बड़ी बेटी प्रीता ग्रुप की एमडी है, दूसरी सुनीता वित्त निदेशक है, तीसरी शोभना इंश्योरेंस, फार्मेसी और रिसर्च के मामले देखती है, जबकि सबसे छोटी संगीता हैदराबाद क्षेत्र के सारे काम संभालती है। हमारे पास प्रोफेशनल्स की एक बड़ी मजबूत टीम है, जिसने अपनी मेहनत और सूझबूझ से इस संगठन को खड़ा किया और इस मुकाम तक पहुंचाया है।

सच पूछा जाय तो इन सबको मिलाकर मेरा एक पूरा मुकम्मल परिवार बनता है। हमने जो काम शुरू किया था उसका पहला चरण पूरा हो चुका है। हमने 7500 हॉस्पिटल बेड का लक्ष्य हासिल किया है। हमने उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराई और भारत के बारे में कायम इस धारणा को तोड़ा कि यहां स्वास्थ्य सेवाएं कमजोर हैं। आज दूसरे देशों से लोग हमारे यहां इलाज कराने आते हैं, क्योंकि हम उन्हें अमेरिकी स्तर की चिकित्सा सेवा उपलब्ध करा रहे हैं, जिसका खर्च अमेरिका में होने वाले व्यय के दसवें हिस्से से भी कम पड़ता है। हमारा ग्रुप जल्दी ही अमेरिका पहुंचने वाला है। हम वहां अस्पताल खोलने जा रहे हैं।

कविताएं

मैं अजन्मी

॥ आकांक्षा यादव

मैं अजन्मी
हूं अंश तुम्हारा
फिर क्यों गैर बनाते हो
है मेरा क्या दोष
जो, ईश्वर की मर्जी झुठलाते हो।

मैं मांस-मज्जा का पिण्ड नहीं
दुर्गा, लक्ष्मी और भवानी हूं
भावों के पुंज से रची
नित्य रचती सृजन कहानी हूं।

लड़की होना किसी पाप की
निशानी तो नहीं
फिर
मैं तो अभी अजन्मी हूं
मत सहना मेरे लिए क्लेश
मत सहेजना मेरे लिए दहेज
मैं दिखा दूंगी
कि लड़कों से कमतर नहीं
माद्दा रखती हूं
श्मशान घाट में भी अग्नि देने का

बस विनती मेरी है
मुझे दुनिया में आने तो दो।

–टाइप-ट, क्वार्टर, हॉर्टिकल्चर रोड
हैडो, पोर्टब्लेयर, अंडमान व
निकोबार द्वीप समूह-744102

आदमी के भीतर

॥ रमेश मनोहरा

मचा हुआ है आदमी के भीतर घमाशान देखिये
इसलिए वो हालातों से खुद है परेशान देखिये
हो गये रिश्ते-नाते खोखले
फिर भी बोझ ढो रहा है,
ऊपर-ऊपर करता है दिखावा
भीतर विष-बीज बो रहा है
सुख-दु:ख के बीच चल रही है खिंचातान देखिये
मचा हुआ है आदमी के भीतर.....।

खाने वाले पेट है आठ
कमाने वाले केवल दो हाथ,
नहीं दे सकती है अब
महंगाई भी इनका साथ
ऐसे में मिलता नहीं भूख का समाधान देखिये
मचा हुआ है आदमी के भीतर.....।

अभावों के धागों से वो
पेट अपना सी रहा है,
इसलिए मर-मर कर भी
आज तक वो जी रहा है
महंगाई की चक्की में फंसी हुई उसकी जान देखिये
मचा हुआ है आदमी के भीतर.....।

-शीतला गली, जावरा (म.प्र.)

जीवन की सार्थकता

॥ ओ. पी. गौतम

अमावस की रात में तो, तारे भी सुहाते हैं
जीवन है उन्हीं का सार्थक, जो गिरतों को उठाते हैं
रोशन राहें करने को, अंधेरों में दीप जलाते हैं
याद करता है उन्हीं को जमाना, जो गैरों के काम आते हैं
करुणा से हीन हृदय जिनका, जीवन को व्यर्थ गंवाते हैं
उदर पूर्ति को जीते, पृथ्वी का बोझ बढ़ाते हैं
काम किसी के आ जाओ, ये जीवन सफल बना जाओ
धन माया तो धरी रहे, साथ कर्म ही जाते हैं
अपनी खातिर जो जीते, 'गौतम' उनका भी जीना क्या
जो जीते औरों की खातिर नाम अमर कर जाते हैं।

-डी-22, गली नं. 3, साउथ अनारकली,
दिल्ली-110051

रोटी

॥ सुरेन्द्र अंचल

रोटी, पेट भरा करती है।
विभेद नहीं किया करती
रोटी, छोटी हो या मोटी
महज रोटी हुआ करती है।

रोटी का मजहब एक ही है
इंसान का पेट भरना
चाहे वह हो-राम
चाहे हो वह रहमान,
सिख हो, पारसी या ईसाई हो,
ब्राह्मण या फिर कसाई हो।
मजदूर हो या सेठ,
सभी का भरती है पेट।
भूखों की भूख हरण करती है
रोटी, पेट भरा करती है।

इतिहास से पूछो
आदमी था जानवर
हां, चौपाया था–
आदमी बनाया किसने–रोटी ने!
नंगा सूअरों की तरह भटकता था
'लाज' छिपाना सिखाया किसने–रोटी ने!
अरे बावले इंसान
ये मिसाइलें, टैंक, परमाणु बम
नहीं बन सकते रोटी,
यें आदमखोर-मारक शस्त्र
नहीं दे सकते रोटी!
नहीं कर सकते भूख को कम
यह पृथ्वी, रोटी के चारों ओर
परिक्रमा किया करती है,
हां, रोटी पेट भरा करती है,
विभेद नहीं किया करती है।

–2/152, साकेत नगर,
ब्यावर, अजमेर (राजस्थान)

सब पड़े रहे सिरहाने में

॥ शिवचरण दुबे

जो मिला एक पल जीने को, वह गया हिसाब लगाने में।
आधा सांसों के आने में, आधा सांसों के जाने में।।

कुछ अपना पेट काट करके, कुछ गला घोंटकर औरों का।
जो जमा किया था, सेंध लगी, अब उस नायाब खजाने में।।

बीमार आचरण का कोई उपचार कारगर हुआ नहीं।
मधुशाला में रातें बीतीं, दिन बीता पुलिस-थाने में।।

रोने-धोने में, सोने में, विष-बोने में जीवन गुजरा।
कुछ वृथा पृथा की कथा और कुछ अपनी व्यथा सुनाने में।।

दुनियादारी, आपाधापी से, जब भी कुछ अवकाश मिला।
उपयोग किया बौद्धिकता का बस औरों को समझाने में।।

डूबा-उतराया जी भरकर, निंदा-रस के सुख-सागर में।
तूफान उठा जब तट पर तो, सब डूब गया लहराने में।।

जड़ की चिंता में पागलपन, नित रहा भटकता इधर-उधर।
चेतर रोया, तड़पा पल-पल माटी के बंदीखाने में।।

जब प्राण लगे अकुलाने अंतिम उपचार न हो पाया।
तुलसी-गंगाजल क्या करते, सब पड़े रहे सिरहाने में।।

-दमदहा पुल के पास, कटनी रोड, बरही-483770 (म.प्र)

गज़ल

॥ राजेन्द्र तिवारी

हंसाने की ख़ातिर रुलायेंगे कब तक।
हमें आप यूं आज़मायेंगे कब तक।।

ये मंदिर, ये मस्जिद, ये हिन्दू मुसलमां।
ज़माने को यूं वरगलायेंगे कब तक।।

समय खोल देगा हक़ीक़त किसी दिन।
हक़ीक़त को आख़िर छुपायेंगे कब तक।।

ये कहते नहीं कुछ ये सुनते नहीं कुछ।
बुतों को कहानी सुनायेंगे कब तक।।

उन्हें ज़िद है मिलने न आयेंगे हमसे।
हमें देखना है न आयेंगे कब तक।।

-तपोवन, 38-बी, गोविन्द नगर
कानपुर-208006 (उ.प्र.)

क्षमा

॥ उर्मि कृष्ण

(1)
जब मैंने कोसा
गर्मी के मौसम को
हंस पड़ा बौराया आम।
(2)
जब मैंने कोसा
शीत की ठिठुरन को
मुस्करा दिया किरणों ने
नहला दिया धूप ने।
(3)
जब मैंने कोसा
सूखे पत्तों के ढेर को
सहला दिया नर्म कोपलों ने
मुस्करा दिया कलियों ने।
(4)
जब मैंने कोसा
सूखी डालियों को
खिलखिला उठा हर पेड़
वासंती मौसम का।
(5)
जब मैंने कोसा
बरसात के कीचड़ को
दौड़ उठी नदियां
मेरे पांव धोने को।
(6)
जब मैंने कोसा
बदला को
गरज उठा जोर से
कड़क उठी बिजलियां।
(7)
घेरे में सबके मैं
नाच रही थी
हाथ जोड़ क्षमा मैं
मांग रही थी।

-ए-47, शास्त्री कॉलोनी
अम्बाला छावनी-133001
(हरियाणा)

मां

॥ निशा जैन

माँ की ममता असीम है।
मां मिली जिसको वह खुशनसीब है।।
माँ का हृदय कितना उदार है।
अंतर में उसके प्यार की बहार है।।
शिशु पाकर वह सुखद अंक।
लौटता संग रवि और मयंक।।
ममता के हितार्थ वह सब कुछ देती वार।
बदले में सहती सब कष्टों की मार।।
चलती जो मुसीबत खड्ग की धार पर।
जग में केवल माँ ही वह नार है।।
माँ जग का वह रहस्यमय सार है।
हर संतान पर माँ का कर्ज उधार है।।
माँ जीवन का अमूल्य वरदान है।
हर पूत का उसे शत-शत प्रणाम है।।

आंखों में क्या है ?

॥ पुष्पेन्द्र मुनि

पिता की आंखों में... फर्ज़
माता की आंखों में... ममता
भाई की आंखों में... प्यार
बहिन की आंखों में... स्नेह
अमीर की आंखों में... घमण्ड
गरीब की आंखों में... आशा
मित्र की आंखों में... सहयोग
दुश्मन की आंखों में... बदला
सज्जन की आंखों में... दया
शिष्य की आंखों में... आदर
-श्री तारक गुरु जैन ग्रंथालय
गुरु पुष्कर मार्ग
उदयपुर-313001 (राजस्थान)

राजमल डांगी

यों टपक पड़ता है जीवन-रस

आशाओं के वृक्ष पर पपीहा भी बैठकर स्वाति नक्षत्र की बूंद के लिए तप करता है। किन्तु मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए दिन-रात परिस्थितियों से जूझता है। भौतिक लक्ष्य की पूर्ति के लिए वह भाग-दौड़ करता है, खूब धन संपन्न होकर आईने में अपने आप की एक खुशनुमा तस्वीर पाता है। अपने लक्ष्य की प्राप्ति पर सबके सामने तसल्ली का ढोल पीटता है।

किन्तु प्रकृति बड़ी निर्दयता से इस तसल्ली को झपटना चाहती है। मनुष्य अपनी सेहत की सुरक्षा के लिए अर्जित धन का बहुत सारा भाग ऊंचे इलाज में होम कर देता है। शारीरिक कष्टों के शिकंजे में फंसते-फंसते वह मानसिक रोगों के चंगुल में धंसता जाता है।

परेशान होकर वह कुदरत पर बेरहमी से नाराजगी प्रकट करता है। ये सारी कहानी उन उपभोक्ता संस्कृति के पीछे भागने वाले लोगों की बनती जा रही है।

किन्तु जो लोग अभी इस बीमारी से दूर हैं उनमें कष्टमय जीवन जीने वाले लोग अधिकतर है। उनको कभी भी गर्मी में भी सूरज की किरणें पिघाल नहीं पाती। कड़ाके की ठंड से तो उनकी दोस्ती है। मैदानों की गोद में खर्राटे लेकर सोयेंगे। जब अगले दिन जागेंगे तो उनके पास स्वस्थ तन और ऊर्जावान मन होगा। उन लोगों के दाम्पत्य जीवन में कभी दरार पड़ती है तो लड़ाई कर लेंगे। अपना आक्रोश डिपाजिट नहीं रखेंगे। पूरा आक्रोश जोरों से चिल्ला कर एक-दूसरे को परोस देंगे।

किन्तु अगली सुबह उनके चेहरे पर फिर वही चमक दिखाई देगी। घुटन की जिन्दगी से कौसों दूर जीवन जीने वाले अनपढ़ और गंवारों की श्रेणी में आते है। किन्तु उनके दाम्पत्य जीवन की अगली सुबह नव-प्रभात के रूप में होती है। उपभोक्ता संस्कृति की सीढ़ी पर खड़े हुए सुखद जीवनचर्या का प्रदर्शन करते नहीं थकते। किन्तु उनके दाम्पत्य की दरारें भरने के लिए दोनों पक्षों को काफी दण्ड झेलने पड़ते हैं। उस अवधि में नींद की गोलियां, सिरदर्द का टॉनिक भोजन की तरह जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाता है।

कष्टों के केक्टस पर जीने वालों में गाड़ोलिया लुहार की आदर्श और मेहनतकश जिन्दगी उनके निकट जाकर देखो। पौ-फटते ही लुहारन चक्की चलाकर ताजा आटा पीसती हैं। हांडी में बनी दाल का स्वाद तो कुछ अलग ही होता है। मिट्टी की कड़ेली पर बनी मक्का की दो रोटी और प्याज खाकर वह अपना घण थाम लेता है। लोहे को पिघलाकर अनेक औजार और चौके के काम में आने वाली वस्तुएं बना-बना कर बेच देता है। घण पटकने में पुरुष से भी दो कदम आगे लुहारन होती है। जब घण पटक कर ठंड के मौसम में वह अपना पसीना टपकाती है तो ऐसा लगता है कि मानों श्रम की देवी अपना प्रक्षालन स्वयं कर रही है। प्रत्येक दो-तीन महीने में गाड़ोलिया जहां भी डेरा डालता है। अपना नया घर नीप-छाबकर आकर्षक बनाता है। खेतीहर मजदूर की चमक फैक्टरी मजदूर से बेहतर होती है। ये सब मेहनतकश लोग घोड़े बेच कर सोते हैं। धूप और बरसात के कष्ट सहन करने की इनकी क्षमता को किसी बैरोमीटर से नहीं नापा जा सकता।

अपनी-अपनी जीवनशैली है, एक ही तराजू के दो पलड़े। अपने-अपने तराजू का वजन प्रत्येक पक्ष भारी ही बताता है।

किन्तु जीवन-फिकर=फकीर का चोला आवश्यकतानुसार पहनने की धुन लगाना बेकार नहीं है। वर्ष में कुछ दिन ऐसा जीवन भी जीवन रस टपका देता है। बेहतर तो यह होगा कि सप्ताह में एक दिन जंगल की शरण में जाकर श्रम साध्य काम कुछ घंटे करने का चस्का शुरू किया जाए फिर वैसा ही लीक से हटकर भोजन किया जाए।

आप चार लोगों की कंपनी ही बनाकर इस हैल्थ क्लब का श्रीगणेश कर सकते हैं। पसीने के रास्ते सप्ताह भर के विजातीय द्रव्य शरीर से बाहर आ जायेंगे। तन-मन हल्का-फुल्का महसूस करेंगे।

इतना कुछ कर पाये तो पपीहे की तरह आशावान होकर अपना चेहरा किसी आनंद रूपी आईने के निकट पायेंगे।

-ज्ञान पिपासा, 1ए/16, रामटेकरी
मन्दसौर-458001 (म.प्र.)

ईश्वर की पत्नी

दिसम्बर का महीना था। दस साल का एक छोटा सा लड़का सर्दी से कांपता हुआ नंगे पैर एक जूते की दुकान के अंदर खिड़की से झांक रहा था। इतने में एक महिला उसके पास आई और बोली, खिड़की के अंदर इतनी उत्सुकता से क्यों देख रहे हो? ईश्वर से प्रार्थना कर रहा हूं कि मुझे एक जोड़ी जूता मिल जाएं, बच्चे ने कहा।

महिला ने बच्चे का हाथ पकड़ा और उसे दुकान के अंदर ले गई। उसने दुकानदार से कहा कि बच्चे के लिए छह जोड़ी मोजे दिखाओ। फिर उसने दुकानदार से पानी का भरा हुआ बर्तन और तौलिया मंगवाया। बड़े प्यार के साथ उसने बच्चे के दस्ताने उतारे और नीचे बैठाकर उसके पैरों को धोया और तौलिये से पोछा। उसने बच्चे को नए मोजे का जोड़ा और जूता पहनाया। बाकी के मोजे पैक करवाकर उसे दे दिए।

दुकान से बाहर आकर उसने बच्चे के सिर पर हाथ फेरकर पूछा, खुश हो? बच्चे की आंख में आंसू थे, जैसे ही वह जाने के लिए मुड़ी, बच्चा उसे आश्चर्य भरी निगाहों से देखते हुए पूछ बैठा-''क्या आप भगवान की पत्नी हैं?''

-सोनल

ललित गर्ग

आदिवासी जीवन में उतरती रोशनी

अत्यधिक प्रसन्नता की बात है कि सुखी परिवार अभियान द्वारा गुजरात के छोटा उदयपुर एवं बडोदरा जिले के आदिवासी अंचल कवांट में निर्मित हो रहे एकलव्य आवासीय मॉडल विद्यालय का शिलान्यास समारोह 6 फरवरी- 2011 को आयोजित हो रहा है। आदिवासी जनजीवन के लिए सेवा, शिक्षा, जनकल्याण की विशिष्ट योजनाएं सुखी परिवार अभियान के द्वारा लम्बे समय से संचालित की जा रही है। मेरी दृष्टि में आदिवासी अंचल में एक रोशनी का अवतरण हुआ है, यह ऐसी रोशनी है जो हिंसा, आतंकवाद, नकस्लवाद, माओवाद जैसी समस्याओं का समाधान बन रही है। अक्सर हम राजनीति के माध्यम से इन समस्याओं का समाधान खोजते है, जबकि समाधान की अपेक्षा संकट गहराता हुआ प्रतीत होता है। क्योंकि राजनीतिक स्वार्थों के कारण इन उपेक्षित एवं अभावग्रस्त लोगों का शोषण ही होते हुए देखा गया है। सुखी परिवार अभियान के प्रणेता गणि राजेन्द्र विजयजी म.सा. के नेतृत्व में हम कृतसंकल्प है रोशनी के साथ चलते हुए इस आदिवासी इंद्रांचल के जीवन को उन्नत बनाने एवं संपूर्ण मानवता को अभिप्रेरित करने के लिये। सुखी परिवार अभियान के इतिहास का एक दुर्लभ और हीरक पृष्ठ है एकलव्य आवासीय मॉडल विद्यालय । ग्रामीण और आदिवासी जनजीवन को उन्नत बनाने और उनके विकास के लिए ब्राह्मीसुन्दरी कन्या छात्रावास एवं सुखी परिवार (गौशाला) जीवदया संघ आदि अनेक योजनाएं चल रही हैं। एकलव्य आवासीय मॉडल विद्यालय के रूप में जो एक नया इतिहास बना है उसकी विशेषता यह है कि यह जहां जमीन से जुड़े लोगों के सहयोग और सेवा का एक प्रकल्प है और इसे माननीय नरेन्द्र मोदीजी जैसे अनेक विशेषताओं वाले, दूरगामी सोच वाले, महान राजनीतिज्ञ, सफल प्रशासक और विज़नरी व्यक्तित्व का मार्गदर्शन, सहयोग और प्रेरणा प्राप्त हो रही है।

गणिवर्य राजेन्द्र विजयजी के आध्यात्मिक आभामंडल एवं कठोर तपचर्या का ही परिणाम है–यह एकलव्य आवासीय मॉडल विद्यालय । सभी आध्यात्मिक महापुरुषों के आशीर्वाद से एवं देश के शीर्षस्थ नेतृत्व की शुभकामनाओं से एक अभिनव परियोजना इस आदिवासी अंचल में आकार ले सकी है, जो आने वाले समय में एक बहुत बड़े सेवा, शिक्षा, साधना, संस्कार निर्माण और जनकल्याण के प्रकल्प का रूप लेने वाली है। एकलव्य आवासीय मॉडल विद्यालय विशेषतया ग्रामीण जनजीवन के उन्नयन और उत्थान का एक प्रकल्प है। बिना किसी जाति, वर्ग, वर्ण के भेद के सुखी परिवार अभियान आम जनजीवन से जुड़ेगा। इसका मुख्य लक्ष्य सेवा है। जरूरतमंदों की जरूरतों को पूरा करना है। इस क्षेत्र की एक बहुत बड़ी कमी शिक्षा को समृद्ध बनाना है। इस एकलव्य आवासीय मॉडल विद्यालय के बन जाने से इस क्षेत्र के बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए अन्यत्र नहीं जाना पड़ेगा। हम शिक्षा भी उन्नत और सर्वसुविधायुक्त साधनों के साथ देने का प्रयत्न करेंगे। हमारी शिक्षा का मूल लक्ष्य संस्कृति और संस्कारों को बल देना भी रहेगा।

हमारे लिये खुशी की बात है कि सुखी परिवार अभियान के प्रणेता संत मनीषी गणि राजेंद्र विजय की एकलव्य आवासीय मॉडल विद्यालय की बृहद योजना के लिये लम्बे समय से 500 आर्यंबिल का कठोर तप कर रहे हैं, जिसकी पूर्णाहूति 6 फरवरी 2011 को हो रही है। इनदिनों वे ज्ञान ज्योति अभ्युदय यात्रा भी इसी आदिवासी अंचल में आयोजित कर रहे हैं। यह यात्रा भी शिक्षा के उद्देश्य को लेकर आयोजित है, साथ ही साथ आदिवासी लोगों को रूढ़िमुक्त बनाना एवं उनमें आपसी सौहार्द एवं सह-अस्तित्व की भावना का विकास करना है। इस आदिवासी अंचल में 10 प्राथमिक विद्यालय निर्मित हो और इसके लिये इसी आदिवासी अंचल के लोगों का सौजन्य भी मिले, इस हेतु ज्ञान ज्योति अभ्युदय यात्रा में व्यापक प्रयत्न किये गये।

ज्ञान ज्योति अभ्युदय यात्रा अहिंसक समाज निर्माण की आधारभूमि बन कर प्रस्तुत हुई है, जब गणि राजेन्द्र विजयजी ने अपने आध्यात्मिक तेज से दो गुटों के खूनी संघर्ष को न केवल शांत किया, बल्कि दोनों गुटों को एक मंच पर ले आये। यात्रा के इस क्षेत्र में पहुंचने से दो दिन पहले ही खूनी संघर्ष में एक व्यक्ति की हत्या हुई थी और दोनों गुट व्यापक हिंसा एवं जनहानि के लिये तरह- तरह के हथियार लिये एक दूसरे को मारने के लिये उतावले थे। हिंसा की व्यापक संभावना को देखते हुए सभी लोगों ने गणि राजेन्द्र विजयजी से निवेदन किया कि आप इन दो ग्रामों को छोड़कर ही अपनी यात्रा को आगे बढ़ाये। लेकिन गणिजी इसके लिये तैयार नहीं हुए और कहा कि यही तो हमारी यात्रा की वास्तविक चुनौती है और हम इससे डर कर पलायन करेंगे तो कौन इन लोगों को मार्ग दिखायेगा? अहिंसा की बात कैसे साकार होगी? कैसे लोगों के दिलों में घर कर गयी नफरत एवं घृणा दूर होगी? अविवेक एवं नासमझी की स्थितियों में कब तक लहू बहता रहेगा? अपने संकल्प पर दृढ़ होकर गणिजी इस हिंसा एवं तनावभरी स्थितियों के बीच गये और दोनों गुटों को अपने उपदेशों से प्रेरित किया। बड़ी हिंसा टली। अहिंसा केवल उपदेश नहीं व्यवहार में चरितार्थ होते हुए देखी गयी। सचमुच आदिवासी लोगों को प्यार, करूणा, स्नेह एवं संबल की जरूरत है जो गणिजी जैसे संत एवं सुखी परिवार अभियान जैसे मानव कल्याणकारी उपक्रम से ही संभव है, सचमुच एक रोशनी का अवतरण हो रहा है, जो अन्य हिंसाग्रस्त क्षेत्रों के लिये भी अनुकरणीय है। गणि राजेन्द्र विजयजी की विशेषता तो यही है कि उन्होंने आदिवासी उत्थान को अपने जीवन का संकल्प और तड़प बना लिया है। आदिवासी जन-जीवन में भी बहुत उजाले हैं,लेकिन इन उजालों को छीनने के प्रयास हुए है, हो रहे हैं और होते रहेंगे। आज बाहरी खतरों से ज्यादा भीतरी खतरे हैं। हिंसा और अलगाव की कई चुनौतियां हैं, जो समाधान चाहती है। पर गलत प्रश्न पर कभी भी सही उत्तर नहीं मिला करते। जब रोटी की जरूरत हो तो रोटी ही समाधान बनती है। रोटी के बिना आप किसी सिद्धान्त को ताकत का इंजेक्शन नहीं बना सकते।

सुखी परिवार अभियान का उद्घोष दिया गया है–आपकी खुशी, हमारी खुशी, आपका सुख, हमारा सुख। पूज्य आचार्य विजय वल्लभजी महाराज एवं गुरु इन्द्र ने परिवार को सुखी और आदर्श बनाने के लिए व्यापक प्रयत्न किए। विशेषत: इसी इंद्रांचल की आदिवासी जनता के उत्थान की दृष्टि से गुरु इंद्र ने व्यापक प्रयत्न किए, उन्हीं प्रयत्नों को गणि राजेन्द्र विजयजी आगे बढ़ा रहे है। ■

आचार

यशवंत कोठारी

अहिंसा ही मनुष्यत्व है!

प्राचीन भारतीय दर्शन व संस्कृति में अहिंसा को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। जैन धर्म का यह मुख्य सिद्धान्त है। जैन साहित्य में 108 प्रकार की हिंसा बताई गई है। हिंसा को अहिंसा में बदलने की प्रक्रिया को मानवता कहा गया है। बौद्ध धर्म में भी अहिंसा को सदाचार का प्रथम व प्रमुख आधार माना गया है। अहिंसा परमो धर्म: कहा गया है। रमण महर्षि ने अहिंसा को सर्वप्रथम धर्म माना है। अहिंसा को अल्बर्ट आइन्सटीन, जार्ज बर्नाड शा, टाल्स्टाय, शैली तथा अरस्तू तक ने अपने विचारों में उचित और महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। भारतीय विचारकों कपिल, पातंजलि, शंकराचार्य, इस्लाम के सूफी संत तथा गुरुनानक, महात्मा गांधी तक का प्रमुख अस्त्र अहिंसा ही था।

आज विश्व में सर्वत्र हाहाकार है। हिंसा है। मानव-मानव का और जीव-जीव का शोषण कर रहा है। आतंकवाद का बोलबाला है, ऐसी स्थिति में हमें त्राण का एक मात्र मार्ग अहिंसा में नजर आता है। आज व्यक्ति, समुदाय, समाज, राष्ट्र, विश्व सब विघटनकारी महाविनाश के मुहाने पर खड़े हैं।

हर तरफ अराजकता, अनुशासनहीनता, शोषण और जातिवादी, सम्प्रदायवादी ताकतों का बोलबाला है। ऐसी स्थिति में वैचारिक दृष्टि से बुद्धिजीवियों का ध्यान अहिंसा जैसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त की ओर जा रहा है। अहिंसा से ही प्रतिकार हो सकता है। सुधार और समन्वय हो सकता है। अहिंसा से सामाजिक समरसता हो सकती है। वैचारिक न्याय प्राप्त हो सकता है। ऊंच-नीच का भेदभाव मिट सकता है। परिग्रह से बचना, क्रोध से बचना, तृष्णा और ऐषणा से बचना हो तो अहिंसा की शरण में जाना चाहिए। अहिंसा हमें धनेषणा, यशएषणा तथा पुत्रेषणा तक से बचने की प्रेरणा देती है। हिंसा, बलात्कार, आतंकवाद, शोषण सबका कारण परिग्रह और ऐषणा है और ऐषणा से बचाव के लिए मानव के पास केवल एक अस्त्र है- अहिंसा। हिंसा केवल जीवों की हत्या ही नहीं हैं। किसी का हक मारना, किसी के प्रति अन्याय करना भी हिंसा है और अन्याय का प्रतिकार अहिंसा ही है। बड़े-बड़े ऋषि-मुनि, ज्ञानी-तपस्वी, विचारकों, दार्शनिकों ने हिंसा को नरक का द्वार कहा है। परिग्रह और संग्रह में आसक्ति है, दु:ख है, करुणा नहीं है, दया नहीं है। अत: असंतोष है और असंतोष के कारण हिंसा उत्पन्न होती है, असहिष्णुता पैदा होती है, व्यक्ति सामंजस्य नहीं करता है, उग्र हो जाता है, उग्रता में हिंसा करता है और समूल नष्ट हो जाता है। निवृत्ति मार्ग की ओर ले जाने वाला प्रमुख अस्त्र है अहिंसा। वेदों से लेकर आज तक प्रकाशित साहित्य हमें सत्कर्म की ओर प्रेरित करता है। जीवन में अहिंसा को स्थान देने वाला कभी असफल नहीं होता। ईश्वर उससे कभी विमुख नहीं होता। लोकहित को सर्वोपरि माना जाना चाहिए। कटु वचनों तक से परहेज रखना चाहिए। जैन धर्म में अहिंसा और उसके परिपालन के निर्देश बड़ी सूक्ष्मता और विचारशीलता से दिए गए हैं। अज्ञानी धर्म को नहीं मानता है, ज्ञानी के वचनों की अवहेलना करता है और परिणामस्वरूप स्वयं भी दु:ख पाता है, घर-परिवार, समाज और राष्ट्र को भी परेशान और दु:खी करता है।

आत्मा के तीन खण्ड हैं- बहिरात्मा, अंतरात्मा और परमात्मा। जो इन तीनों खण्डों से गुजर जाता है वही मोक्ष को प्राप्त करता है। नैतिकता से जीवन जीने वाला ही बहिरात्मा से परमात्मा तक पहुंच सकता है। हम भी सुखी रहें, दूसरे भी सुखी रहें। जीओ और जीने दो। लेकिन अन्याय को सहन करना भी हिंसा मानी गई है। मानवीय मर्यादाएं, सीमाएं नष्ट हो रही हैं। छोटे-बड़े का भेद मिट रहा है और व्यक्ति-व्यक्ति का मांस नोचने को आतुर है, यहीं आकर अहिंसा का महत्त्व स्पष्ट हो जाता है।

परिग्रह हिंसा है और निवृत्ति अहिंसा है। गांधीजी ने पूरा जीवन एक वस्त्र में बिता दिया जबकि आज गांधीजी के नाम पर अरबों के घोटाले हो रहे हैं, हिंसा का ताण्डव सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है। संग्रह करने से हिंसा को दीर्घ जीवन मिलता है, जबकि हमें अहिंसा की आवश्यकता है। व्यक्ति को पेट भरना चाहिए पेटी नहीं। अधिक भोजन अनीति है, झूठन छोड़ना गलत है, हिंसा है। अधिक संग्रह से व्यक्ति के उपयोग करने की शक्ति कम हो जाती है। संग्रहित सामान व्यर्थ ही जाता है। न खुद के काम आता है और ना ही दूसरों के काम आता है।

अहिंसा से मानव निर्भार रहता है। उसे किसी प्रकार का डर या आतंक का सामना नहीं करना पड़ता। महावीर ने कहा है-प्राणी मात्र के प्रति संयमित व्यवहार ही अहिंसा है। अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण रखना अहिंसा है। असंयत नियम विरुद्ध आचरण भी हिंसा है। जीवन-मरण की आकांक्षा रखना हिंसा है। अहिंसा, करुणा, दया, अनुकम्पा का आचरण रखने के प्रयास होने चाहिए। मगर स्वयं पर हिंसा नहीं करनी चाहिए। अनैतिकता को सहन भी नहीं करना चाहिए। हिंसा पर आधारित परोपकार, दान, करुणा, हिंसा के ही पक्ष हैं अत: इनसे बचना चाहिए। हिंसा सामने आने पर व्यक्ति या तो धर्म की बात करे या चुप रहे या वहां से उठ कर चला जाए। हिंसा से पलायन भी अहिंसा ही है।

अहिंसा व्यक्ति के अन्तर्मन में पैदा होती है। यह एक आत्मिक भाव है। अहिंसा के पालन में समझौता नहीं हो सकता। अन्तर्मन में उपजे भाव को ही मुखरित कर अहिंसा की चर्चा करनी चाहिए।

गांधीवादी अहिंसा ने न केवल हमें अंग्रेजों से आजादी दिलाई, वरन् अन्य देशों का भी मार्गदर्शन किया। गांधी-धर्म अहिंसा पर आधाारित है। महावीर की निवृति अहिंसा, गौतम बुद्ध की करुणामय अहिंसा, ईसामसीह की सेवा, शंकराचार्य का ज्ञान मार्ग, गीता की योगवादी अहिंसा, कर्मयोग और सत्य अहिंसा के गांधीवादी प्रयोग सभी अहिंसा के रूप हैं। अहिंसा मानव मात्र के हृदय में प्रतिष्ठित हो तो सभी जीवों का कल्याण हो सकता है। अहिंसा से असुरी वृत्ति का नाश होता है। मनुष्य स्वयं जीये साथ-ही-साथ दूसरों को भी जीने दे। यह पृथ्वी और अन्तरिक्ष, मनुष्य मात्र का ही नहीं है, वह तो सभी का है। सभी को इस पृथ्वी के उपभोग की स्वतंत्रता है । हिंसा से केवल कुछ ही लोग इसका उपभोग करें यह उचित नहीं है।

अहिंसा के जागरण से व्यक्ति के मन में मानवता और सामाजिक भावना जाग्रत होती है। अहिंसा व्यक्ति के समग्र चिन्तन में बदलाव लाती है। विचार का रास्ता हिंसा से नहीं अहिंसा से तय किया जाना चाहिए। अहिंसा के पालन से पूरा विश्व एक परिवार बन सकता है, राष्ट्र की सीमाएं टूट सकती हैं। वसुधैव कुटुम्बकम् की धारणा पुष्ट हो सकती है। विश्व एक नीड़ बन सकता है। जहां पर सुख, शांति, परोपकार, दया और करुणा का वास हो सकता है। आइये, हम ऐसे ही विश्व के निर्माण में योगदान करने का विनम्र एवं दृढ़ संकल्प करें ।

-86, लक्ष्मीनगर ब्रह्मपुरी बाहर
जयपुर-302002

शास्त्र-ज्ञान

संदीप फाफरिया 'सृजन'

नमस्कार से होता है उन्नति का मार्ग प्रशस्त

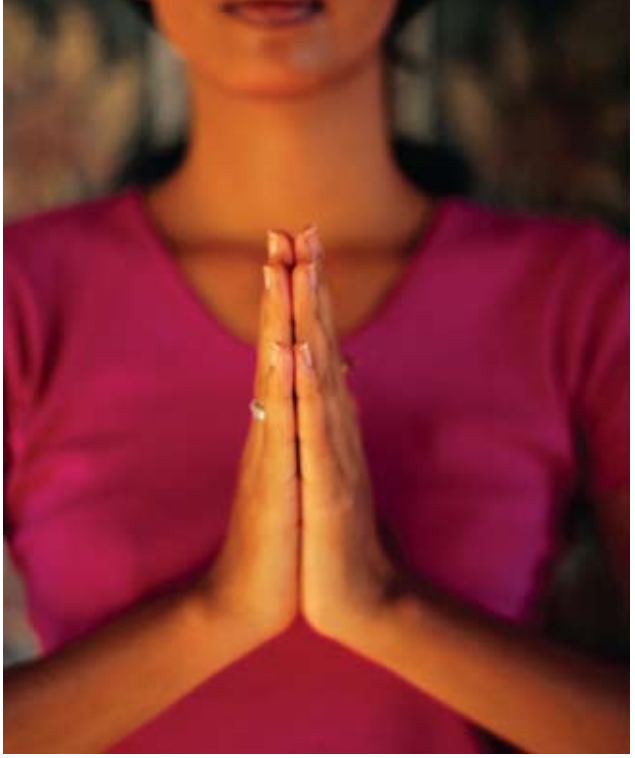

चरण वंदन, प्रणाम, नमन हमारी संस्कृति का संस्कार है, हमारे धर्म ग्रंथों के अनुसार देवता, गुरु, माता-पिता एवं बुजुर्गों की चरण वंदना (स्पर्श) को श्रेष्ठ माना जाता है। चरण स्पर्श करने के लिए सम्माननीय व्यक्ति के समक्ष झुकना होता है जो हमारे अंदर विनम्रता के भाव को जगाता है और जब हम विनम्र होकर वरिष्ठजनों के चरण छूते हैं तो वैज्ञानिक सिद्धांत के अनुसार यह एक 'टच थैरेपी' है जो ऊर्जा को गतिमान बनाती है। हम किसी के पैरों का स्पर्श करते हैं और वे हमारे सिर पर हाथ रखते हैं, इससे एक ऊर्जा चक्र बनता है जो हमारी विनम्र भावना और उनकी आशीर्वाद भावना के साथ हमारे मस्तिष्क में भी ऊर्जा प्रदान करता है। धार्मिक ग्रंथों में आशीर्वाद को आयु, धन, ज्ञान व बल वृद्धि देने वाली अंत:करण की अभिव्यक्ति माना जाता है।

हमारी संस्कृति में कई काम सहज व सुगम दिखाई देते है पर जीवन में उनका विशिष्ट लाभ प्राप्त होता है, चरण स्पर्श भी ऐसी ही एक सम्मानजनक क्रिया है जो जिसे नमन किया जाए उसके प्रति सम्मान प्रदर्शित करती है और कर्ता को ऊर्जा एवं अभीष्ट सिद्धि प्रदान करती है। राम के चरित्र का वर्णन करते हुए तुलसीदासजी ने कई जगह पर नमन व चरण स्पर्श की महिमा और उसका प्रतिफल रामचरितमानस में किया है। राम प्रतिदिन माता-पिता एवं गुरुजनों को प्रणाम कर ही अपनी जीवनचर्या प्रारंभ करते हैं। महर्षि विश्वामित्र के साथ वन गमन के दौरान प्रत्येक कार्य हेतु गुरु आशीर्वाद लेते थे और उनके चरण स्पर्श करते थे। भगवान राम की विनम्रता बड़ी ही अनोखी थी। जिसका वर्णन कई जगह रामचरितमानस में आता है।

महाभारत युद्ध में पाण्डवों ने विनम्र भाव से अपने शत्रु पक्ष में युद्ध कर रहे गुरुजनों, पितामह, भीष्म आदि की चरण वंदना करके अपने लिए विजयश्री का आशीर्वाद प्राप्त किया। जैन धर्म में भी नमन का विशेष स्थान है, नवकार मंत्र की शुरुआत ही 'नमो' शब्द से होती है। जो मानस से विनम्रता लाता है। साथ ही दोनों हाथ जोड़कर नमन करने की हमारी परम्परा विश्व में अपने आप में अनूठी है। दोनों हाथों का एक दूसरे से स्पर्श भी ऊर्जा चक्र बनाता है और शरीर में प्रवाहित हो रही तरंगों को शरीर से जोड़े रखता है। नमन शब्द को सामान्य रूप में नमस्कार या अभिवादन कहा जाता है लेकिन समयानुसार क्रियाओं में परिवर्तन होता रहता है। तंत्र क्रियाओं में साष्टांग प्रणाम या दंडवत प्रणाम का उल्लेख है जिसमें पूरा शरीर उल्टा करके जमीन से स्पर्श होता है। शरीर के आठ अंग (दो पैर, दो हाथ, छाती, ठोडी, नासिका व भाल) भूमि से सटे रहते हैं। पंचाग प्रणाम का उल्लेख विशेष रूप से जैन ग्रंथों में आता है जिसमें भगवान और गुरु के समक्ष पंजों के बल बैठकर घुटने टेक कर प्रणाम किया जाता है। जिसमें दो हाथ, दो पैर एवं मस्तिष्क जमीन से स्पर्श होते हैं। पंचाग प्रणाम विधि को सभी धर्मों में प्रयोग किया जाता है। चरण स्पर्श के दौरान घुटनों के बल पंजों पर बैठ कर बड़े बुजुर्गों, गुरु, माता-पिता को नमस्कार, प्रणाम किया जाता है और सामान्य अभिवादन के दौरान दूर से हाथ जोड़कर मस्तक एवं कमर को झुकाया जाता है। उपरोक्त प्रणाम के तरीके वर्तमान में प्रचलित हैं इनके अलावा भी प्रणाम के भेद होते हैं जो शास्त्रों में वर्णित है। प्रणाम या नमस्कार का मूल उद्देश्य सम्मान देना और अपना भौतिक व आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करना है।

-ए-99, व्ही. डी. मार्केट, उज्जैन (म.प्र.)

रूपनारायण काबरा

गुरु द्रोणाचार्य पुरस्कार क्यों ?

गुरुदक्षिणा में दायें हाथ का अंगूठा मांग कर उसकी धनुर्दक्षता का पटाक्षेप कर देना घोर पक्षपात ही नहीं अमानवीयता एवं नृशंसता है, चरित्र के पतन की पराकाष्ठा है।

यह सही है कि गुरु द्रोणाचार्य अपने समय के महान धनुर्धर एवं अस्त्र-शस्त्र विद्या के प्रकांड पंडित थे, उनकी योग्यता एवं प्रतिभा को सादर नमन, पर जिस बालक को उन्होंने पढ़ाया ही नहीं, सामाजिक मान्यताओं के दास बनकर शिष्यत्व प्रदान ही नहीं किया उसी श्रद्धा संपूरित एकलव्य से अपने प्रिय शिष्य अर्जुन के वर्चस्व हेतु गुरुदक्षिणा में दायें हाथ का अंगूठा मांग कर उसकी धनुर्दक्षता का पटाक्षेप कर देना घोर पक्षपात ही नहीं अमानवीयता एवं नृशंसता है, चरित्र के पतन की पराकाष्ठा है।

और यही गुरुदेव द्यूत क्रीड़ा के समय द्रौपदी का चीरहरण देखते रहे। क्या यही थी उनकी तेजस्विता एवं गुरुपद दायित्व बोध? क्यों नहीं था उनमें अपने शिष्यों को इस कुत्सित आचरण पर रोकने का साहस? यह भी उन गुरुजी के चारित्र की भयंकर दुर्बलता थी। और फिर निहत्थे बालक अभिमन्यु के वध में भी उनकी जो निंदनीय भूमिका रही उसे कौन नहीं जानता। ऐसे गुरु के नाम पर राष्ट्रीय पुरस्कार दिया जाना कहां तक उचित है? इस पर पुनर्विचार आवश्यक है। हम सड़कों एवं शहरों के नाम बदलते रहे हैं क्या हम द्रोणाचार्य पुरस्कार का नाम नहीं बदल सकते?

-ए-438, किशोर कुटीर, वैशाली नगर, जयपुर-302021 (राजस्थान)

संबोध

संत मुरारी बापू

धर्म की आत्मा

धर्म का राज जो गहन से गहन है... बड़े-बड़े इसमें असफल हुए हैं। दुर्योधन कहता है कि मैं धर्म जानता हूं लेकिन मैं उसे आचरण में नहीं उतार पाया, मैं धर्म को प्रवृत्ति में नहीं ला सका हूं। मैं अधर्म भी जानता हूं लेकिन उससे छुटकारा नहीं पा सकता।

धर्म क्या है? यहां उसका सर्वोच्च जवाब है और बिल्कुल संक्षेप में है। धर्म कोई गणवेश का बंदी नहीं है कि भगवे कपड़े पहन लिए और धर्म आ गया, सफेद कपड़े पहन लिए और धर्म आ गया, तिलक कर लिया और धर्म आ गया। हां, ये सब धर्म उपांग जरूर है लेकिन धर्म की ये आत्मा नहीं है।

धर्म की आत्मा क्या है? हमने धर्म की देह को देखा, धर्म की आत्मा को नहीं जाना। धर्म की आत्मा को जान लेते तो आधे मिनट में बात बन जाती। धर्म की आत्मा क्या है, उसको पकड़नी पड़ेगी। आत्मा के बिना जैसे देह का कोई अर्थ नहीं है वैसे ही धर्म में आत्मा न हो तो वो धर्म 'धर्म' नहीं के बराबर है। उसके साथ और कुछ नहीं हो सकता, केवल उसका एक अग्नि संस्कार ही हो सकता है।

रावण पूजा करता था, वह शिव का उपासक था, उसके नगर लंका में नृसिंह के मंदिर भी थे लेकिन धर्म की आत्मा नहीं थी इसलिए हनुमानजी ने लंका का अग्नि संस्कार कर दिया।

कोई संत पुरुष किसी को जलाएगा? किसी को जलाना अच्छा काम है? शवों को जलाना पुण्यकर्म है? हनुमानजी ने सोचा कि लंका में धर्म तो दिखाई देता है लेकिन धर्म की आत्मा नहीं है। प्राण चला गया है, केवल शरीर पड़ा है और मैं आया हूं तो शरीर का अग्नि संस्कार करना पुण्यकर्म है, इसलिए लंकादहन कर दिया।

धर्म की आत्मा को पहचानो। तिलक करो, माला रखो, मंदिर जाओ, पूजा करो, यज्ञ करो, संध्या करो, जप करो, सब करो लेकिन धर्म की आत्मा को नहीं पहचानोगे तो बहुत चूक जाओगे।

धर्म का आत्म परिचय सद्गुरु है और सद्गुरु वो है जो तुम्हें दैहिकता से छुड़ाकर आत्मिक बना दे। तुम्हें परमार्थिक बना दे,

वे धर्म की आत्मा बता रहे हैं। धर्म का यहां देह परिचय नहीं दिया है, धर्म का आत्म परिचय सद्गुरु है और सद्गुरु वो है जो तुम्हें दैहिकता से छुड़ाकर आत्मिक बना दे, तुम्हें परमार्थिक बना दे, वो ही तो सद्गुरु है। ■

स्वस्थ एवं नैतिक विचारों के संपोषण का सशक्त माध्यम

सुखी परिवार फाउंडेशन द्वारा संचालित

समृद्ध सुखी परिवार मासिक पत्रिका

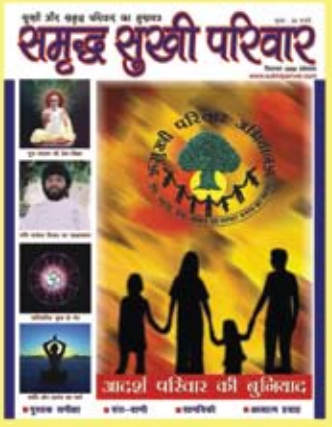

पत्रिका के स्वयं ग्राहक बनें, परिचितों, मित्रों को ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

वार्षिक शुल्क : 300 रुपये आजीवन : 2100 रुपये

विज्ञापन देकर अपने प्रतिष्ठान को जन-जन तक पहुंचायें।

आपका सहयोग : समाज की प्रगति

सदस्यता शुल्क की राशि का चेक/ड्राफ्ट सुखी परिवार फाउण्डेशन नई दिल्ली के नाम बनाकर या सीधा एक्सिस बैंक खाता नं. 119010100184519 या IFS CODE : UTIB0000119 के द्वारा प्रेषित करें।

SUKHI PARIVAR FOUNDATION

Head Office :
T. S. W. Center, A-41/A, Road No.-1, Mahipalpur Chowk, New Delhi-110 037
Phone: 011-26782036, 26782037, Mo: 9811051133

Delhi Office :
48, South Avenue, New Delhi - 110001

रामनिवास लखोटिया

शाकाहार और स्वास्थ्य

कई बार मांसाहार के पक्ष में यह तर्क दिया जाता है कि बच्चों को अधिक शक्तिशाली बनाने की दृष्टि से उन्हें मांसाहार कराया जाना चाहिए, परन्तु यह बात सही नहीं है। प्रोटीन, कैलोरी और कार्बोहाइड्रेट आदि की दृष्टि से स्वास्थ्य के लिए शाकाहार ही पौष्टिक आहार है। इसके अतिरिक्त यदि हम शाकाहारी जानवरों के उदाहरण देखें तो पायेंगे कि विशुद्ध शाकाहारी जानवर मांसाहारी जानवरों की तुलना में अधिक शक्तिशाली हैं, जैसे–घोड़ा, गेंडा तथा हाथी।

क्रिकेट के विश्वविख्यात बहुत-से खिलाड़ी पूर्णतया शाकाहारी हैं। विश्व के कई प्रख्यात खिलाड़ी और पहलवान शाकाहारी रहे हैं, जैसे- गुरु हनुमान तथा गामा। मास्टर चन्दगीराम, जो पूर्णतया शाकाहारी हैं, वे भी अपने समय के बहुत ही प्रख्यात पहलवान रहे हैं। ओलम्पिक में विश्व रिकार्ड कायम करने वाले स्टेनप्राईस और दूर पैदल चलने में विशेष योग्यता रखने वाले स्वीटगौन तथा लम्बी दौड़ में बीस विश्व रिकार्ड बनानेवाले नूरमी–ये सब शाकाहारी हैं। इंग्लिश चैनल नहर को तैरकर द्रुतगति से पार करने वाले रिकार्ड होल्डर बिलपिकिंग और चार सौ मीटर एवं पन्द्रह सौ मीटर की दौड़ में विश्व-रिकार्ड रखने वाले मुरेरोज भी पूर्णतया शाकाहारी हैं। अंतर्राष्ट्रीय बॉडी बिल्डिंग चैम्पियन एण्ड्रूज शिलिंग तथा पिरको वर्नोट भी शाकाहारी हैं। इतना ही नहीं, कराटे के क्षेत्र में आठ राष्ट्रीय कराटे जीतने वाले एबेल शाकाहारी हैं। टेनिस के श्री कमलेश मेहता और विश्वविख्यात वियमर्चेन्ट एवं वीनु मांकड शाकाहारी रहे हैं।

मांसाहार की अपेक्षा शाकाहार विभिन्न रोगों की रोकथाम में अधिक सहायक सिद्ध हुआ है। विश्व-स्वास्थ्य संघ ने ऐसी एक सौ साठ बीमारियों के नाम अपने समाचारपत्र में घोषित किये हैं, जो मांसाहार से ही फैलती है। इन बीमारियों में मिरगी प्रमुख है। यह बीमारी मस्तिष्क में टीनिया सोलिटम नामक कीड़े से उत्पन्न होती है। यह कीड़ा सूअर का मांख खाने से उत्पन्न होता है। मानव पर सैकड़ों प्रयोगों से यह सिद्ध हो चुका है कि पशुओं वाली चिकनाई से रक्त में 'कोलेस्ट्रॉल' की मात्रा बढ़ जाती है और वनस्पति की चिकनाई उसे कम करती है। इस बात के लिये प्रचुर प्रमाण यह है कि 'आर्टिरियोस्कलेरोसिस' तथा 'कोरोनरी' हृदय-रोगों में कोलेस्टेरॉल बड़ा कारण है। लॉस एंजिल्स (अमेरिका) के डॉ. मारिसन का कथन है कि कोलेस्टेरॉल से अन्य कितने ही मानव रोग उत्पन्न होते हैं, यथा–पथरी। शरीर-विज्ञान से संबंधित प्रयोगशाला के डॉक्टर मूर ने यह प्रदर्शित किया है कि मांसाहार से हृदय का क्रिया-कलाप बढ़ जाता है। 'न्यूयार्क लाइफ इंश्योरेंस कार्पोरेशन' के डॉक्टर हंटर आर्थर इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि मांस खाने से रक्तचाप बढ़ता है। मांसाहार शरीर में विषाक्त पदार्थों को प्रवेश कराता है। जब पशु मारा जाता है, उस समय त्यागने योग्य द्रव्य उसके शरीर में रह जाते हैं, जिसके कारण मांसाहार में उत्तेजना का तत्व होता है। इन त्याज्य-पदार्थों की मात्रा मृत पशु में उसके जीवित अवस्था तथा उसके वध की अपेक्षा अधिक होती है। इसी प्रकार रक्तचाप, आर्टरी की कठोरता और गुर्दे के रोगों से पीड़ित व्यक्तियों के लिए भी मांसाहार हानिकारक है।

स्वास्थ्य प्रेमियों के लिए स्वयं के स्वास्थ्य हेतु आवश्यक है कि वे अंडे और अन्य मांस आदि अभक्ष्य वस्तु का सेवन निश्चित रूप से कभी न करें।

–एस-228, ग्रेटर कैलाश, भाग-2
नई दिल्ली-110048

श्रद्धा, अश्रद्धा व अंध श्रद्धा

शिवचरण मंत्री

श्रद्धा अर्थात् विश्वास, अश्रद्धा का अभिप्राय अविश्वास तथा अंधश्रद्धा का तात्पर्य अंधविश्वास। वैसे श्रद्धा और विश्वास के मध्य बहुत अंतर होता है। क्योंकि व्यवहार में श्रद्धा शब्द का प्रयोग सामान्यत: अध्यात्म के साथ ही किया जाता है। तदुपरांत भी श्रद्धा शब्द का प्रयोग आर्थिक, सामाजिक और भौतिक विषयों में भी किया जाता है।

आध्यात्मिक रूप से श्रद्धा का अभिप्राय ईश्वर, अल्लाह, गॉड आदि के प्रतिपूर्णरूपेण शरणागति स्वीकार करना है। बुद्धिहीन बालक के सोचने समझने की शक्ति के अभाव में उसके माता-पिता ही उसकी सार संभाल देखभाल करते हैं अत: बालक माता-पिता के शरणागत होता है। ठीक इसी प्रकार व्यक्ति का पूर्णत: स्वस्थ होते हुए भगवान के प्रति शरणागत होना श्रद्धा है।

मानवीय शब्दकोश में अश्रद्धा शब्द नहीं होता है। यथा किसी व्यक्ति को अध्यात्म, किसी वस्तु, समाज, समाज के किसी व्यक्ति, विषय अथवा आर्थिक प्रश्नों में श्रद्धा न होने पर भी उसे किसी न किसी पर या विषय में अवश्य श्रद्धा होगी ही। यथा अध्यात्म में श्रद्धा न होने पर विज्ञान में श्रद्धा होगी, यदि उसे विज्ञान का ज्ञान नहीं हो तो उसे किसी अन्य विषय में अवश्य श्रद्धा होगी। श्रद्धा और अश्रद्धा का सम्मिश्रण नहीं होता है। श्रद्धा और अंध श्रद्धा में सीधा, प्रत्यक्ष संबंध होता है क्योंकि मानव मन की श्रद्धा अंध श्रद्धा ही होती है। श्रद्धा में शंका, संदेह नहीं होता है। परन्तु श्रद्धा के वांछित फल प्राप्ति हेतु किसी अन्य व्यक्ति या संयोग से किसी प्रकार के कर्मकाण्ड, पूजा पाठ, साधना, मंत्र जाप, अनुष्ठान आदि के लिए बाध्य होना अंध विश्वासी ही होता है। इसी तरह किसी तीर्थ स्थान अथवा अभय स्थान पर साक्षी के सम्मुख किया काम अंध श्रद्धा है।

–श्रीनगर, अजमेर-305025 (राजस्थान)

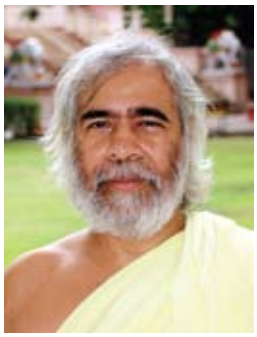

महिमा

आचार्य विजय वीरेन्द्र सूरी

महादेवी पद्मावती

वर्तमान में सबसे अधिक आराधना और उपासना भगवान पार्श्वनाथजी की अधिष्ठाईका देवी पद्मावती की होती है। उनके विषय में कहा जाता है कि वह सदा प्रज्वलित ज्योति है। जो भी इस ज्योति के पास चला जाता है उसे अवश्य प्रकाश मिलता है। उनके मंत्र और स्तोत्र शीघ्र फलदायी हैं।

भवनपति में उत्तरदिशा में उनका आवास है। बहत्तर हजार देवियां उनकी अधीनस्थ हैं। दो पल्योपम का उनका आयुष है। वे एकावतारी हैं। भगवान पार्श्वनाथजी की वे अनन्य उपासिका हैं। हमेशा हर समय वे अपने मस्तक पर भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति को धारण किए रहती है। भगवान पार्श्वनाथ की भक्ति और जाप करने वाले भक्त पर वह तत्काल प्रसन्न होती है। उनके मस्तक पर जो नाग है वह उनकी सखी है। प्रात: 11:00 बजे तक वह नमस्कार महामंत्र का जाप करती है। 11:00 से 12:00 बजे तक वह भगवान पार्श्वनाथ की पूजा करती है। उन्हें लाल रंग और दूध प्रिय है। उनका आसन कमल है। मूल नाम उनका त्रिनयना है। पद्मावती नाम देवलोक का शाश्वत नाम है। चौसठ हजार देवियों का उनका परिवार है। सोलह विद्या देवियां और चंडी, चामुंडा, काली, कराली, भृंगी और नित्या आदि उनकी सखियां हैं।

अक्षय तृतीया के दिन वे शत्रुंजय की और पौष दसमी के दिन शंखेश्वर तीर्थ की यात्रा-दर्शन के लिए जाती हैं।

पद्मावती माता की अचिंत्य शक्ति और प्रभाव है। वे भिन्न-भिन्न धर्मों और सम्प्रदायों में अलग-अलग नामों से भी जानी जाती है। बौद्धों में उनकी उपासना 'तारा' के नाम से होती है। शैव लोग उन्हें गौरी के नाम से जानते हैं। वैदिक धर्म वाले उन्हें गायत्री कहते हैं।

पद्मावती देवी के प्रभाव के अनुरूप कई प्रकार की उनकी पहचान है–धरणेन्द्र पद्मावती, रक्त पद्मावती, हंस पद्मावती, सरस्वती पद्मावती, शबर पद्मावती, कामेश्वरी पद्मावती, भैरव पद्मावती, त्रिपुरा पद्मावती, नित्या पद्मावती, आद्य शक्ति पद्मावती और महामोहिनी पद्मावती आदि। इस समय रक्त पद्मावती की उपासना प्रचलित है।

माता पद्मावती की अनेक भुजाओं वाली मूर्तियां बनती हैं। अधिकतर चार भुजाएं होती हैं, परन्तु कहीं कहीं आठ भुजा, सोलह भुजा और चौबीस भुजाएं भी हैं।

उनकी चार भुजाओं में दाएं के ऊपर के हाथ में नागपाश है। दाएं का नीचा हाथ वरद मुद्रा में है। बायें के ऊपर के हाथ में अंकुश है। बायें के नीचे हाथ में विषहर मणि है। वे नागपाश की तरह सभी विघ्नों को अपनी पकड़ में लेकर उन्हें नष्ट करती हैं। जो उनकी उपासना करता है उसे वरदान देती है। सभी शत्रुओं को अंकुश में रखती है और विषहरमणि से सभी प्रकार के स्थावर और जंगम विष को नष्ट करती है और मनवांछित फल प्रदान करती है। उनका रक्त वर्ण अखंड सौभाग्य का सूचक है। उनका लाल रंग सभी प्रकार के सौभाग्यों को देने वाला है।

उनकी दिव्य शक्ति के विषय में कहा है–वे लक्ष्मी और सौभाग्य को देनेवाली हैं, संसार को सुखी करनेवाली है, वन्ध्या को पुत्र सुख देनेवाली है, अनेक प्रकार के रोगों को दूर करनेवाली है, पाप-संताप को हरनेवाली है, पुण्यात्माओं की रक्षा करनेवाली है, दरिद्री लोगों को धन देनेवाली है, इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए चिंतामणि रत्न के समान है।

वर्तमान में लाखों लोग उनकी माला जप रहे हैं। और वे उन्हें अदृश्य रूप से उनके पुण्यानुसार सहायता कर रही है। ■

टमाटर और स्वास्थ्य

वैद्य देवदत्त ओझा

टमाटर का सेवन करने से नेत्र रोग दूर होते हैं और आंखों की ज्योति बढ़ती है।

टमाटर एक ऐसा फल है, जिसका कोई भी अंश बेकार नहीं जाता। शरीर के लिए आवश्यक प्राय: सभी तत्व इसमें मौजूद हैं। इसमें लोहे की मात्रा अन्य फलों एवं सब्जियों से प्राय: दुगुनी है। चूने तथा कैलशियम की भी अधिकता है, जो शरीर की हड्डियों को मजबूत बनाती है। विभिन्न रोगों पर इसके कुछ उपयोग इस प्रकार हैं:

- बच्चे के सूखे रोग में लाल टमाटर का रस पिलाएं, इससे रोग धीरे-धीरे चला जायेगा और बच्चे का चेहरा निखर आयोगा।
- लाल टमाटर का रस दिन में तीन बार दो-दो तोला पीने से दुर्बलता दूर होगी और शरीर पुष्ट होगा। इसके सेवन से थकावट दूर होती है, भूख बढ़ती है तथा शरीर में स्फूर्ति आती है। पांडुरोग (पीलिया रोग) में इसका सेवन विशेष लाभकारी होता है।
- कई नेत्र रोग जैसे रतौंधी, कम दिखाई देना, धुंधलापन आदि विटामिनों की कमी के कारण होते हैं। टमाटर का सेवन करने से ये रोग दूर हो जाते हैं और आंखों की ज्योति बढ़ती है।
- रक्त दूषित हो जाने के कारण शरीर पर कभी-कभी लाल-चकत्ते हो जाते हैं। ऐसी अवस्था में टमाटर का रस दो-दो तोला दिन में तीन बार पीजिए। धीरे-धीरे लाल-चकत्ते समाप्त हो जायेंगे और आपकी त्वचा निखर आयेगी।
- यदि दांतों में से खून निकलता हो या स्कंधी रोग (एक चर्म-रोग विशेष) हो, तो टमाटर के रस का सेवन लाभदायक होता है।
- ज्वर के कारण रोगी के रक्त में कई प्रकार के हानिकारक पदार्थों की वृद्धि हो जाती है। टमाटर का गाढ़ा रस पिलाने से ये पदार्थ नष्ट होते हैं और रोगी शांति अनुभव करता है।

आचार

डॉ. (सुश्री) शरद सिंह

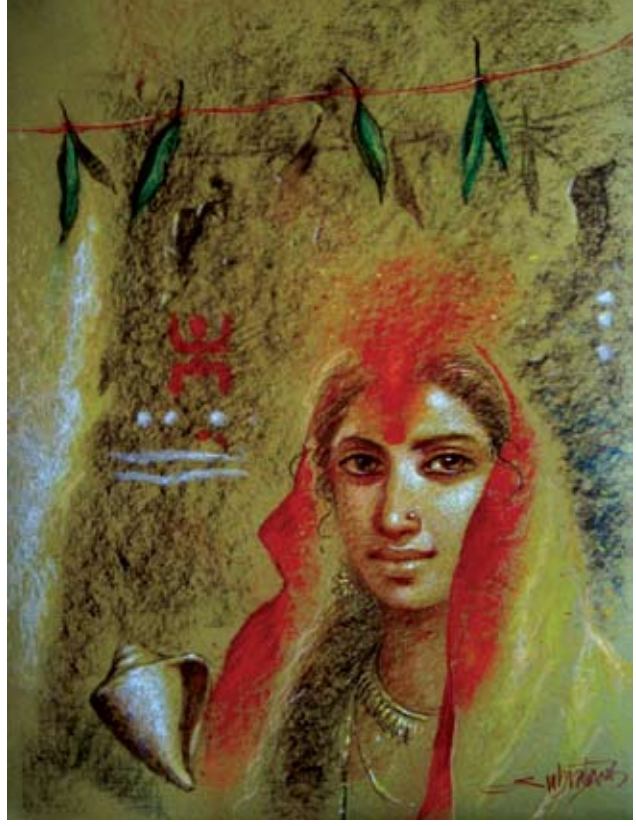

व्रत कथाओं का सच और स्त्री अधिकार

भारतीय समाज में स्त्रियां और व्रत उपवास परस्पर पूरक की तरह दिखाई देते हैं। जब व्रत रखे जाते हैं तो उन व्रतों से संबंधित कथाएं भी बांची जाती है। कुछ कथाएं भयाकुल करने वाली हैं तो कुछ का स्वरूप इतना स्वतंत्र विचारों का है कि उसे प्रगतिवान कहा जा सकता है। दुर्भाग्य से भयाकुल करने वाली कथाएं अधिक बांची जाती हैं और प्रगतिवान विचारों वाली कम। उस पर प्रगतिवान विचारों वाली व्रत कथा की सही व्याख्या नहीं की जाती है। व्रत में लापरवाही बरतने से जहाज डूब जाने, पति या परिवार के मर जाने जैसी भय का संचार करने वाली व्रत कथाओं के बदले इस कथा को अपनी सही व्याख्या के साथ प्रस्तुत क्यों नहीं किया जा सकता जिसका नाम है 'दसामाता' अथवा 'पीपरदेव' की व्रत कथा। मुख्य रूप से यह समूचे बुंदेलखंड अंचल में प्रचलित है।

कथा इस प्रकार है कि एक सेठ और सेठानी थे जिनकी कोई संतान नहीं थी। सेठानी लोकाचार के वशीभूत एक बहू लाना चाहती थी। पुत्र के अभाव में यह संभव नहीं था। अतः उसने वधू पक्ष से छल करते हुए यह कह दिया कि पुत्र व्यापार के सिलसिले में परदेश गया है तथा शुभ मुहूर्त को ध्यान में रखते हुए विवाह को टाला नहीं जा सकता है। इस पर एक कटार के साथ वधू का विवाह करा दिया गया। ससुराल आने पर सेठानी की बहू को सच्चाई का पता चला। बहू ने सास की अनुमति से एक कमरे में पीपल की पूजा शुरू कर दी। प्रतिदिन उस बंद कमरे में पूजा करने से पूजा के बाद एक सुंदर पुरुष पीपल से निकलता और चौपड़ खेल कर पीपल में समा जाता। चौपड़ खेलने के दौरान उस पुरुष के संसर्ग से बहू गर्भवती हो गई। इससे सेठ-सेठानी घबरा गए किन्तु बहू ने ढांढस बंधाते हुए सभी परिचितों को निमंत्रित करने के लिए कहा। सेठ-सेठानी ने ऐसा ही किया। सभी परिचितों के आ जाने पर बहू ने पीपल की पूजा आरंभ की। पूजा समाप्त होते ही दसामाता एवं पीपरदेव की कृपा से पीपल से वह पुरुष प्रकट हो गया जो प्रतिदिन पूजा के उपरांत सामने आया करता था। सब के सामने प्रकट होने से वह पुरुष शापमुक्त हो कर सदा के लिए सेठ-सेठानी के घर पर रह गया तथा बहू ने अपना पति एवं अपने होने वाले बच्चे का पिता पा लिया।

यह कथा सामाजिक संरचना एवं स्त्री के लिए निर्धारित कठोर बंधनों से मुक्ति का एक रास्ता दिखाती है। इस कथा में बहू के रूप में छल द्वारा छद्म विवाह के बंधन में बांध दी गई स्त्री के बंधन तोड़ कर अपने अस्तित्व को स्थापित करने का सफल प्रयास है। इस कथा की नायिका राजपूत काल के कटार से विवाह करा दिए जाने पर कटार के साथ जीवन बिताने तथा कटार के साथ सती हो जाने वाली तथाकथित वीरांगना स्त्री नहीं है, वरन् विवाहेतर पुरुष से संतान उत्पन्न करके उसे पति के रूप में तथा संतान को वैध संतान के रूप में समाज में स्थान दिलाने वाली दृढ़ स्त्री है। वह जानती है कि इस असंभव कार्य को किस प्रकार संभव किया जा सकता है। यूं भी नियोग द्वारा संतान उत्पन्न करना प्राचीन भारतीय समाज में स्वीकार्य था विशेष रूप से उच्च वर्ग में। किन्तु इस कथा में नियोग के बदले पीपरदेव तथा दसामाता के चमत्कारी सहयोग को माध्यम बनाया गया है। इस कथा में ध्यान देने योग्य तथ्य यह भी है कि यह स्त्री के प्रति समाज के उदार एवं लचीले आचरण की ओर भी संकेत करता है। अन्यथा समाज का कट्टरपंथी कठोर आचरण किसी स्त्री को इस प्रकार पति माने और उससे उत्पन्न संतान को वैधानिक दर्जा पाने की छूट नहीं देता है। यद्यपि ऐसे उदाहरण समाज में मुक्त रूप से नहीं मिलते हैं क्योंकि कथा का वाचन और श्रवण भले ही बहुलता से किया जाता हो किन्तु कथा के मर्म को यथास्थिति स्वीकार करने का साहस समाज में आज भी दिखाई नहीं देता है। यह कथा स्पष्ट संकेत देती है कि स्त्री विषम परिस्थितियों को भी अनुकूल बनाने एवं समाज में परिवर्तन लाने का माद्दा रखती है बशर्ते उस परिवार तथा वह जिस पर विश्वास करती हो उसकी ओर से सहायता मिले। ■

एमएस स्वामीनाथन
हरित क्रांति के प्रणेता

किसानों को पद्म सम्मान

बरसों-बरस से मैं देखता आया हूं कि पद्म सम्मान की सूची में कभी किसी किसान का नाम नहीं आता। क्रिकेट खेलना तो ठीक है, पर उन किसानों की सोचिए, जो हमारा पेट भरते हैं। इसके लिए वे तमाम मुसीबतें झेलते हैं। खेती आज भी पूरी दुनिया में सबसे जोखिम वाला पेशा है। हमारे मुल्क में तो 70 करोड़ लोग इस व्यवसाय से जुड़े हैं। पर अफसोस है कि उनमें से एक किसान भी पद्म सम्मान के योग्य नहीं पाया जाता। आखिर ये सम्मान किस समाज के लोगों का माइंडसेट झलका रहे हैं?

इससे तो यही लगता है कि हम अभी भी औपनिवेशिक मानसिकता के शिकार हैं। देश में किसानों के साथ जो बर्ताव हो रहा है, वह कतई ठीक नहीं है। भारत को अब सतत हरित क्रांति की जरूरत है, ताकि देश अनाज संकट से बाहर निकल सके, पर किसानों की उपेक्षा हो रही है।

प्रभाव

मुरली कांठेड़

मानव जीवन और ज्योतिष

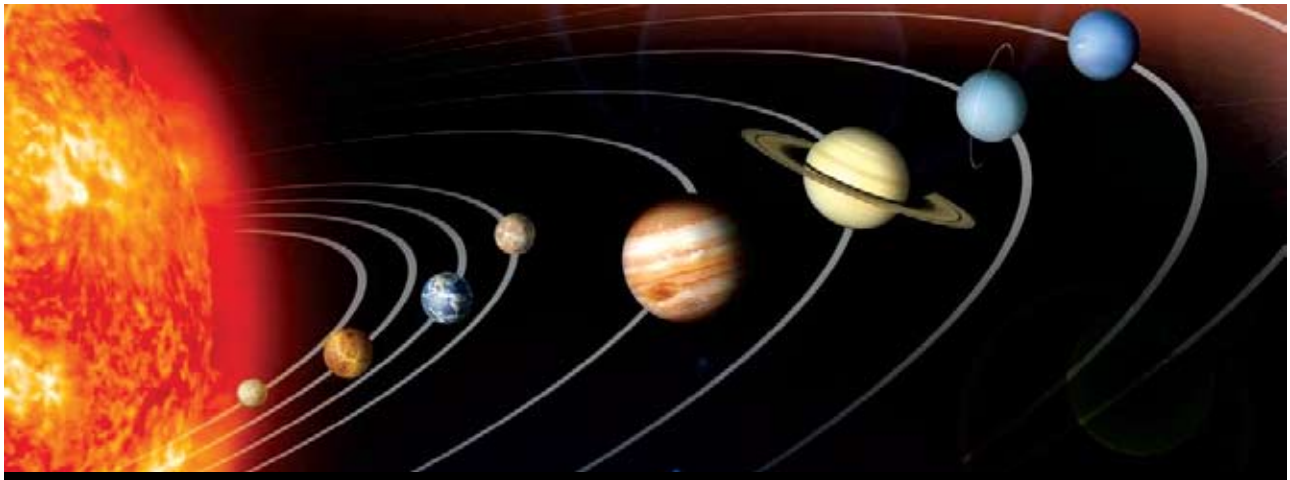

ज्योतिष विद्या में सूर्य व चंद्र प्रधान ग्रह हैं। सूर्य को पुरुष और चन्द्रमा को स्त्री अर्थात् प्रकृति के रूप में इन दोनों ग्रहों को माना है। पांच तत्व मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र व शनि बताये गये हैं। इनके मध्य ही सारा ज्योतिष–चक्र भ्रमण करता है।

मनुष्य का स्वभाव है नई-नई खोज करना। वह एक अन्वेषक प्राणी है। वह चाहता है कि सृष्टि की प्रत्येक वस्तु के साथ उसका तादात्म्य संबंध व भाव स्थापित हो। इसी चाह के कारण ज्योतिष का जीवन के साथ संबंध स्थापित करने हेतु वह बाध्य हुआ है। वह अपने जीवन में ज्योतिषीय तत्वों का प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहता है। वह अपने प्राप्त ज्ञान को इस विद्या की कसौटी पर कसकर देखना चाहता है। वह यह समझना चाहता है कि ज्योतिष का जीवन में क्या स्थान है। यद्यपि 'मानव-जीवन और ज्योतिष' इस प्रकरण से ही ज्योतिष के रहस्य का आभास मिल जाता है, परन्तु फिर भी इस विषय पर विभिन्न विशेषज्ञों के विचार जानना आवश्यक है जो इस क्षेत्र में कार्यरत हैं।

'आवाज आवृत्ति' से भविष्य बताने वाली जानी-मानी ज्योतिष विशेषज्ञ सुश्री निर्मला शिवानी का मानना है कि ज्योतिष एक सम्पूर्ण विज्ञान है। उनको इस बात पर खेद है कि हमारे देश के विश्वविद्यालय में इसके अध्ययन को मान्यता नहीं प्रदान कर रहे हैं। उनका विश्वास है कि शास्त्रों में छिपे इस वृहद ज्ञान को यदि विश्वविद्यालय में अध्ययन की मान्यता मिल जाए तो भविष्य कथन एवं मानवाजति के हित में यह एक बड़ी उपलब्धि होगी। इससे लोग भी उन तथाकथित भविष्यज्ञाताओं के जाल में फंसने से बचेंगे जो अपने हित साधने के लिए चुराई गई अल्पविद्या का सहारा लेते हैं।

वास्तु-फेंगशुई की प्रासंगिकता पर अपने विचार व्यक्त करते हुए सुश्री निर्मला शिवानी का मानना है कि दोनों अलग-अलग परिस्थितियों, वस्तुस्थिति एवं काल के प्राक्षेप में युक्तिसंगत है। भारत का अपना वास्तु है और चीन का अपना फेंगशुई। दोनों गलत नहीं है, लेकिन दोनों की प्रासंगिकता भिन्न है। सोच-समझकर सारगर्भित चीजों को अपनाना तो ज्ञान है, किन्तु बिना सोचे किसी का अंधानुकरण करने का कोई लाभ नहीं। उनका मत है कि दक्षिण में रहने वाले सभी बीमार नहीं रहते व उत्तर-पूर्व में रहने वाले सभी धनवान व स्वस्थ नहीं होते। प्रत्येक व्यक्ति का अपना वास्तु होता है, उसे अपनी शादी, ग्रह-स्थिति आदि को ध्यान में रखकर वास्तु का पालन करना चाहिए।

सुश्री शिवानी का मत है कि ज्योतिष में उस समस्या का समाधान है जो ग्रहों में मौजूद है। 42 में यदि विवाह का योग है तो उसे ज्योतिष के सहारे, रत्न व अन्य पूजा विधान के सहारे 24 में तो किया जा सकता है, लेकिन यदि विवाह का योग है ही नहीं तो ज्योतिष कुछ नहीं कर सकता, ठीक उसी प्रकार जैसे जन्मजात टांग न होने पर चिकित्सा क्षेत्र भी कुछ नहीं कर सकता।

'क्यों और कैसे' ये मानव की स्वाभाविक प्रवृत्तियां हैं। वह प्रत्येक घटना व वस्तु के आदि कारण की खोज करता है। उसके बारे में समस्त बातों को जानने हेतु उत्सुक भी रहता है। जब तक उसकी यह ज्ञान-पिपासा शांत नहीं होती उसे चैन नहीं पड़ता है। यह निश्चित है कि किसी भी प्रकार के ज्ञान का स्रोत समय, दिशा और स्थान के बिना प्रवाहित नहीं हो सकता है। अत: माना जा सकता है कि तीनों विषयों का ज्ञान ज्योतिष के द्वारा ही संपन्न होने पर अन्य विषयों का ज्ञान मानव को हुआ होगा।

जैन साहित्य में भी ग्रह नक्षत्रों के बारे में अत्यंत सुस्पष्ट कथन मौजूद हैं। ज्योतिष में विश्वास रखने वाले सुप्रसिद्ध जैनाचार्य आचार्य श्री महाप्रज्ञ का तो मानना था कि ''स्वास्थ्य का संबंध इस रूप में है कि उपयुक्त समय जो औषधि ली जाती है, वह बहुत उपयोगी साबित होती है।'' आचार्यश्री ने रंग चिकित्सा एवं मंत्रों के ज्ञान को भी ज्योतिष के साथ जोड़ने का प्रयास किया।

ज्योतिष विद्या में सूर्य व चंद्र प्रधान ग्रह हैं। सूर्य को पुरुष और चन्द्रमा को स्त्री अर्थात् प्रकृति के रूप में इन दोनों ग्रहों को माना है। पांच तत्व मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र व शनि बताये गये हैं। इन के मध्य ही सारा ज्योतिष-चक्र भ्रमण करता है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि ज्योतिष शास्त्र अध्यात्म शास्त्र भी है और इसका जीवन में अपना महत्व है।

-ए-56/ए, प्रथम तल, लाजपत नगर-2
नई दिल्ली-110024

सत्य नारायण पंवार

बच्चों के सपने मत छीनो

बच्चों के उन्मुक्त निश्छल बचपन पर हमने महत्वाकांक्षाओं एवं प्रतिस्पर्धा का ऐसा 'कर्फ्यू' लगा दिया है, जिसमें ढील तक नहीं दी जाती। ये चंद लम्हें खासकर तीन से पांच वर्ष तक के बालक के अपने होते हैं, जिन्हें वह निर्द्वंद एवं निर्मलता में जीता है लेकिन उसकी आत्मिक अनुभूति एवं नैसर्गिक आनंद के भावलोक में अनाधिकृत हस्तक्षेप का जो उपक्रम हम कर रहे हैं उसके लिए भावी पीढ़ी हमें कभी क्षमा नहीं करेगी।

जब बच्चे सुंदर सपनों में खोये सो रहे हों, तो उन्हें घरवाले खींचकर बिस्तर से उठाते हैं और उन्हें 'स्कूल' जाने के लिए तैयार करते हैं। जल्दी सबेरे बच्चों की प्यारी नींद को तोड़ना और उनके खेलने के दिनों में 'स्कूल' भेजकर पढ़ने के लिए बाध्य करना बच्चों के बचपन को छीनना है। बच्चों से उनका बचपन ही नहीं सपनों का आकाश छीनना किसी त्रासदी से कम नहीं। मानो घरवाले बच्चे को 'स्कूल' की 'यूनिफॉर्म' पहनाकर भारी बस्ते को कंधे पर लादकर और 'वाटर बॉटल' भरकर 'स्कूल' की जगह कहीं युद्ध के मोर्चे पर ले जा रहा हो। आज मैं किसी बच्चे के कंधे पर लटका दर्जनों पुस्तकों, 'नोट बुक्स', 'टिफिन' और अन्य वस्तुओं से भरे बस्ते को देखता हूं तो दुख होता है कि उसके कंधे बोझ से दब रहे हैं। इसके साथ ही मुझे अपना बचपन याद आता है- मोहल्लों में धमा-चौकड़ी करने वाला, पानी में नंगधड़ंग धींगा मस्ती करनेवाला, सड़क के किनारे बारिश में बहनेवाला नाले में कागज की नाव चलानेवाला, चांदनी रातों में छिपा-छिपी का खेल खेलनेवाला बचपन। वास्तव में हम लोग बच्चों के बचपन के साथ अन्याय कर रहे हैं।

बचपन से खिलवाड़

जब बच्चा स्कूल से लौटता है तो अभिभावक उसके बस्ते को खोलकर उसके गृहकार्य के बारे में पूछने लगता है। कुछ अभिभावक उसकी 'यूनिफॉर्म' खुलवाकर और उसे नाश्ता चाय देकर गृहकार्य करवाने में जुट जाते हैं या समृद्ध अभिभावक अपने बालक के लिए 'ट्यूटर' लगा देते हैं। गृहकार्य करने में शाम हो जाती है और उसे अपने साथियों के साथ खेलने का समय नहीं मिलता। वास्तव में बच्चों की जिंदगी के साथ खिलवाड़ हो रहा है। बच्चों की तीन वर्ष से पांच वर्ष तक की जिंदगी खेलकूद और अपने साथियों को जानने की होती है लेकिन आजकल ये बच्चे 'के.जी. स्कूल' में 'अल्फाबेट्स' पढ़ते हैं। बच्चों की कोमल भावनाओं के साथ कितना छलावा हो रहा है? आजकल के बच्चों के उन्मुक्त निश्छल बचपन पर हमने महत्वाकांक्षाओं एवं प्रतिस्पर्धा का ऐसा 'कर्फ्यू' लगा दिया है, जिसमें ढील तक नहीं दी जाती। ये चंद लम्हें खासकर तीन से पांच वर्ष तक के बालक के अपने होते हैं, जिन्हें वह निर्द्वंद एवं निर्मलता में जीता है लेकिन उसकी आत्मिक अनुभूति एवं नैसर्गिक आनंद के भावलोक में अनाधिकृत हस्तक्षेप का जो उपक्रम हम कर रहे हैं उसके लिए भावी पीढ़ी हमें कभी क्षमा नहीं करेगी।

महत्वाकांक्षा की कठपुतली

बच्चे तो महात्वाकांक्षी माता-पिता के दिमाग की कठपुतली बनकर रह गये हैं। झूठी सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए ढाई वर्ष की अपरिपक्व उम्र में बच्चों को 'अंगरेजी मीडियम' के 'स्कूल' में भर्ती करा देते हैं। चाहे उन्हें 'अंग्रेजी' समझ में भी नहीं आती हो। जितना महंगा 'स्कूल' उतनी ही ज्यादा समाज में प्रतिष्ठा, जितना अधिक गृहकार्य उतना ही अच्छा 'स्कूल'। बच्चा 'अंग्रेजी' में कविता रटकर बोले तो घरवालों की प्रसन्नता बढ़ जाती है। वास्तव में रट लेना अधिगम नहीं लेकिन बच्चों को 'अंग्रेजी' विषय समझ में नहीं आता तो वह रटकर परीक्षा में उगल देते हैं। जब मैं बचपन में स्कूल में 'हिंदी भाषा में' विषय पढ़ता था तो विषय याद रहता था और उसे रटना नहीं पड़ता था। रटने में बच्चे को तकलीफ होती है। बचपन में बड़े बुजुर्गों की कहानियां सुनते थे और स्कूल में अध्यापक नैतिक परिकथाएं सुनाते थे लेकिन अंग्रेजी माध्यम में कहानियां सुनाना और समझना मुश्किल है। नैतिक और गुणात्मक कहानियों के अभाव में बच्चे चाहे तो इंजीनियर, डॉक्टर और आई.ए.एस. अफसर बन सकते हैं लेकिन साधारण सद्गुणों वाले मनुष्य कदापि नहीं।

सर्वांगीण विकास का अभाव

अत्याधिक व्यस्त माता-पिता अपनी दमित इच्छाओं को अपने बच्चों में साकार होते देखना चाहते हैं। वे बच्चों से 'स्कूल' स्तर पर ऐसी उपलब्धियां

पाने की आशा करते हैं जो कि वे खुद प्राप्त नहीं कर सके। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि आने वाले जमाने की खौफनाक संभावनाओं का बच्चों के मन पर इस तरह गहराई से असर डाला जा रहा है कि उनकी बाल सुलभ चंचलता, जिज्ञासा एवं कौतुक की प्रवृत्ति नष्ट हो रही है और उनके सर्वांगीण विकास में बाधा आ रही है। आजकल बच्चों पर पड़ता पढ़ाई का अतिशय दबाव उन्हें मनोरंजन और वातावरण को जानने से वंचित कर रहा है। अभिभावक भी बच्चों को 'टी.वी.' देखने, खेलने और अपने रुचि का काम करने को समय की बरबादी मानने लगे हैं। इसमें बच्चों में विप्लवी भावना उत्पन्न होती है और पढ़ाई के प्रति अरुचि पैदा हो जाती है। घर में प्यार, सहानुभूति व सहयोग न मिल पाने पर बच्चा इनकी इच्छा 'स्कूल' से करता है लेकिन वहां भी उपेक्षा, अवमानना मिलती है तो बच्चा स्वयं को अत्यधिक असुरक्षित महसूस करता है।

बालोद्यान का पौधा

कम उम्र के बच्चों को पढ़ाई में अत्यधिक होशियार बनाने के उद्देश्य से कई अभिभावक उन पर अधिक अध्यापन कर दबाव डालने के लिए उतावले हो जाते हैं। जल्दी से जल्दी छोटे बच्चों को पढ़ा लिखा कर झूठी सामाजिक प्रतिष्ठा पाने के चक्कर में बच्चे मानसिक रूप से अस्वस्थ हो जाते हैं। हमारे पड़ोस का एक बच्चा (तीन वर्षीय पुत्र) गंभीर रूप से बीमार हो गया और उसे चिकित्सकों को 'अस्थालिन' या 'डेराफाइलिन' की गोलियां और इंजेक्शन देने पड़े। फिर भी वह बच्चा अस्थमा का रोगी बन गया। उसका शरीर दुबला और कमजोर हो गया और स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया। यह एकमात्र 'केस स्टडी' नहीं है बल्कि सैंकड़ों-हजारों बच्चे अपने माता-पिता की अति महत्वाकांक्षाओं के शिकार हो रहे हैं। 'के.जी.' यानी 'किंडर गार्डन' का अर्थ है कि शिक्षक एक माली है और बालक बालोद्यान के पौधे हैं। माली अपने पौधों की रक्षा करते हुए पौधों के विकास की ओर सजग और सक्रिय रहता है। यहां पर शिक्षण का उद्देश्य ज्ञान देना नहीं बल्कि छिपी प्रतिभा का विकास करना है। अत: बालकों के शारीरिक अवयवों, मांसपेशियों व ज्ञानेन्द्रियों को गीत, गति और सर्जन के द्वारा विकसित करना है। यह सब कुछ जानते हुए भी शिक्षाशास्त्री, राजनेता और 'अफसर' इस ओर आंखें मूंदे हुए हैं। अभिभावक भले ही भारी फीसों से लुटे-पिटे, भावी पीढ़ी का भविष्य भले ही दाव पर लगे इनको तो सिर्फ हालात की अनदेखी ही करना है। कुल मिलाकर हालात कुएं में भांग जैसी है और दृढ़ राजनैतिक इच्छाशक्ति के बिना इसमें कोई सुधार की कोई संभावना नहीं।

बचपन की रक्षा की जाए

बच्चे भारत के भविष्य के महल की नींव के पत्थर हैं। इनके बचपन की रक्षा की जाए और उनका पालन-पोषण ठीक से किया जाए, जिससे भारत का भविष्य उज्ज्वल हो। ढाई वर्ष के बच्चे की बुद्धि अविकसित होती है उसे 'स्कूल' की आवश्यकता नहीं। उसे मोहल्ले के बच्चों के साथ खेलने दिया जाए और के.जी. में केवल वातावरण से शिक्षा लेने दी जाए। अगर उसे 'स्कूल' में भेजा जाए तो उसे औपचारिक शिक्षा नहीं दी जाए। उसे 'स्कूल' में खेलने-कूदने, संगीत इत्यादि विषय सिखाये जाएं। पहली और दूसरी कक्षाओं के बच्चों को कक्षाओं में ही सब कुछ सिखाया जाए यानी कोई गृहकार्य न दिया जाए जिससे वे घर जाकर स्वतंत्रता से अपने वातावरण के बारे में सीखें। इतना ही नहीं इन बच्चों को भारी बस्ते ले जाने की भी आवश्यकता नहीं क्योंकि इनकी पुस्तकों और 'नोट बुक्स' को 'स्कूल' की कक्षा में ही रखा जाए। अध्यापक समय-समय पर बच्चों की 'प्रोग्रेस' उनकी 'रिपोर्ट' के द्वारा उनके अभिभावकों को भेजते रहे। अभिभावकों को घर पर बच्चों के गृहकार्य का भार नहीं रहेगा और वे बच्चों को नैतिक कहानियां और दुनियादारी की बातें सिखायेंगे।

-सत्यम, 68 गोल्फ कोर्स स्कीम,
वायुसेना क्षेत्र, जोधपुर (राजस्थान)

चिंतन

आचार्य सम्राट श्री देवेन्द्र मुनि

ज्ञान का अधिकारी कौन ?

उपनिषद् का एक वाक्य है-

तेषामसौ विरजो ब्रह्मलोको
न येसु जिह्ममनृतं न माया

-प्रश्न उपनिषद 1/16

जिनमें न कुटिलता है, न कपट है और न असत्य है, वो ही वास्तव में शुद्ध, निर्मल स्वलोक निर्वाण को प्राप्त कर सकते हैं।

भगवान महावीर की वाणी में भी यही प्रतिध्वनि गूंज रही है-

''धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ-'' -उत्तराध्ययन

शुद्ध एवं सरल हृदय में ही धर्म ठहरता है।

अत: जिसका अन्त:करण सरल एवं निश्छल है, वहीं पवित्रता है और जहां पवित्रता होती है, वहीं सत्य, ज्ञान एवं ईश्वर का निवास होता है। इसलिए यह उक्ति सत्य है कि ''सरल हृदय ही भगवान का मंदिर है।''

तथागत बुद्ध ने भी कहा है-''जो कुटिल आचरण करता है, वह चांडाल है और जो सरल हृदय होता है वही ब्राह्मण है, वही ज्ञान प्राप्त करने का सच्चा अधिकारी है।

सत्यकाम जाबाल के नाम से एक जाबालोपनिषद् प्रसिद्ध है। उसमें वर्णन है-एक बार ऋषि हरिद्रुमत गौतम के आश्रम में एक भोला-भाला तेजस्वी किशोर आया। श्रद्धा के साथ ऋषि के चरणों में सिर झुकाकर बोला-''आचार्य! मैं सत्य और ब्रह्म की खोज करने आया हूं। आप अनुकम्पा कर मुझे ब्रह्मविद्या दें। अंधे को चक्षु का दान कीजिए ऋषिवर।''

ऋषि ने गंभीर दृष्टि युवक की भोली सूरत पर डाली। उसकी निश्छल आंखों में अपूर्व निर्मलता थी। ऋषि ने पूछा-तेरा गोत्र क्या है? तेरे पिता कौन है?

किशोर को न अपने गोत्र का पता था और न पिता का। वह सकुचाकर नीचा सिर किए खड़ा रहा और दो क्षण रुककर उल्टे पांव चल पड़ा।

कुछ समय बाद पुन: किशोर आश्रम में पहुंचा और ऋषि के समक्ष आकर बोला-''आचार्य! मुझे न अपने गोत्र का ज्ञान है न अपने पिता का। मेरी मां भी नहीं जानती कि मेरा पिता कौन है? मैंने अपनी मां से पूछा, उसने बताया कि युवावस्था में वह अनेक पुरुषों के साथ रमण करती रही है, इसलिए वह भी ठीक-ठीक नहीं बता सकती कि मेरे पिता कौन है? मेरी मां का नाम जाबाली है और मेरा नाम सत्यकाम! ऐसा मेरी मां ने कहा है-इसलिए मैंने सब कुछ सही-सही आपको बता दिया है, अब मुझे ब्रह्म विद्या सिखलाएं, मैं उसी की खोज में भटक रहा हूं।''

ऋषि इस सरल सत्य से अभिभूत हो उठे। स्नेह-गद्‌गद् हो उन्होंने सत्यकाम को हृदय से लगा लिया-''तुम सचमुच ही ब्राह्मण हो, ब्रह्मविद्या के अधिकारी हो। जिस हृदय में सत्य की इतनी सरल अभिव्यक्ति होगी, वही तो ब्रह्मविद्या पा सकेगा। उसके लिए गोत्र और कुल कभी बाधक नहीं हो सकते। सत्य वक्ता ही तो ब्रह्मविद्या का सच्चा अधिकारी होता है।

सत्य और ज्ञान पाने के लिए कुछ और नहीं, बस निर्मल निश्छल हृदय चाहिए।

हिम्मत लाल ठक्कर

ईश्वर व्यक्ति नहीं, शक्ति है

यदि ईश्वर नहीं होता तो हमें उसका आविष्कार कर लेना पड़ता -किसी विचारक ने यह बात उसने आस्तिक और धार्मिक दृष्टिकोण से कही होगी। इस कथन के पीछे आशय यही है कि ईश्वर का अस्तित्व है। और लोगों को संयमी और सदाचारी बनाये रखने के लिए ईश्वर का भय इतना आवश्यक है कि यदि वह न भी होता तो हमें उसकी उत्पत्ति या कल्पना कर लेनी पड़ती।

वास्तव में ईश्वर के प्रचलित रूप की कल्पना ही कर ली गई है। पर यह कल्पना या सर्जना किसी एक व्यक्ति, एक समूह या एक जाति विशेष ने सोद्देश्य नहीं की है जैसा कि एक कथा में कहा जाता है। इसके अनुसार किसी राज्य में जब अपराध बढ़ गये तो राजा ने अपने चतुर सलाहकारों की मदद से यह बात फैला दी कि ईश्वर है। वह सब कुछ देख रहा है, तथा पापियों को कभी न कभी उसकी सजा अवश्य देगा।

देव कल्पना

पहली बार संसार के विभिन्न भागों में अनेक मानवों के मन में देव की कल्पना आयी थी। प्राकृतिक शक्तियों के प्रभाव और प्रकोप को देखकर मानव भयभीत होता था। तूफान, वर्षा, बाढ़, भूकंप आदि का कारण वह जानता नहीं था। उसकी समझ में पहली बात यही आयी कि ये सब जो अमानव हैं वह दानव या देव हैं। वे नाराज और क्रोधित होकर उसे दंड दे रहे हैं। इस प्रकार उसने सूर्य, चंद्र, पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, वृक्ष, पर्वत आदि को देवता मान लिया। उस समय के विद्वानों ने सामान्य जनों को समझाया कि ये देवता हमारी भूलों और पापों से रुष्ट होकर हमें परेशान कर सकते हैं। उन्हें सतुष्ट और प्रसन्न करने के लिए उनकी स्तुति, प्रार्थना, पूजा-आराधना करनी चाहिए। बाद में कुछ अधिक समझदार होने पर उन्होंने सोचा कि कोई एक ही व्यक्ति है जिसने जमीन-आसमान, तारों-सितारों, प्राणी-वनस्पति और पदार्थ वस्तुओं का निर्माण किया है।

तब के मानव मनुष्य की सामर्थ्य से इतने अनजान थे कि उस युग में जो जरा-सा भी असामान्य कार्य करता उसे वे महापुरुष या असाधारण मानव न मानकर ईश्वर का अवतार, देवदूत, परमपिता का पुत्र या पैगम्बर का प्रतिनिधि ही समझ लेते थे। उसी ईश्वर की कृपा पाने के लिए विभिन्न स्थानों के मानव समुदायों ने अपने-अपने तरीके सोच लिए। इसी से अनेक धर्म और सम्प्रदाय तथा उनके कर्मकांड और उपासना पद्धतियां बनीं।

पीड़ा क्यों?

पर ईश्वर को व्यक्ति या प्राणी के रूप में मानने में अनेक अड़चनें हैं। ईश्वर को सर्वगुण संपन्न कहा जाता है। अब जो व्यक्ति सर्वत्र व्याप्त हो, जिसे सब कुछ ज्ञान हो, जो सर्वशक्तिमान हो, दयालु भी हो, उसकी सृष्टि में दु:ख-दर्द, अन्याय-अत्याचार, अभाव-बीमारी होने ही नहीं चाहिए। जब तक उसकी इच्छा के बिना कुछ नहीं हो सकता तो उसे तो बुरे कर्मों की सजा देने का अवसर ही नहीं आ सकता वह तो अपराध या पाप को होने के पूर्व ही रोक सकता है। और कोई भी बुद्धिमान और समर्थ व्यक्ति अपनी संतानों को कष्टों में पड़े हुए देखना तो चाह नहीं सकता। फिर संसार में कष्ट-पीड़ा क्यों है।

यदि ऐसा अनुभूतिशील व्यक्ति कोई होता तो वह स्वयं ही प्रकट होकर अपने होने की घोषणा कर चुका होता। वह गुप्त और चुप रहकर अपने संबंध में अटकलें लगाते लोगों को भटकते हुए नहीं रखता।

कुछ लोग ईश्वर की मौजूदगी के लिए प्राकृतिक वस्तुओं के निर्माण का तर्क देते हैं। उनका कहना है कि यदि ईश्वर नहीं है तो ब्रह्माण्ड के इतने विशाल पिंड, पदार्थ, वनस्पति, प्राणियों और मानवों को किसने बनाया। वे कहते हैं कि जब निर्जीव वस्तुओं को निर्माण करने वाला भी कोई होता है तो ब्रह्मांड और बुद्धिमान मानवों को बनानेवाला तो अवश्य होना चाहिए। पर उनका तर्क उन्हीं की बात से कट जाता है। वह इस प्रकार कि अद्‌भुत प्रकृति को बनानेवाला कोई ईश्वर होना जरूरी है तो फिर ईश्वर को बनानेवाला भी कोई और होना चाहिए। वह अपनी तरह का एकमात्र कैसे? उसका कोई समकक्ष बराबर का क्यों नहीं?

इस तरह ईश्वर का व्यक्ति या प्राणी रूप किसी भी तरह तर्कसंगत नहीं है। इसलिए ईश्वर का वैज्ञानिक अर्थ समझने की कोशिश करें।

पृथ्वी से लाखों गुणा बड़ा सूर्य है। सूर्य से लाखों गुणा बड़े भी तारे हैं। लगभग दस करोड़ तारों की एक निहारिका होती है, ऐसी लाखों निहारिकाएं तो देखी जा चुकी हैं। पदार्थ के सूक्ष्म कण अणु में कई परमाणु होते हैं। उनमें भी इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन तथा अन्य अति सूक्ष्म कण और होते हैं जो नाभिक की परिक्रमा करते रहते हैं। सभी कणों के विशिष्ट गुण होते हैं और उनके संयोग करने के विशिष्ट नियम होते हैं। उसी से एक बीज से बड़ा वृक्ष पैदा होता है। छोटे शुक्राणु से पूरा बुद्धिमान मनुष्य बन जाता है।

अद्‌भुत जीवन पद्धति

केवल पृथ्वी पर हजारों प्रकार की शारीरिक संरचनाओं वाले प्राणी हैं, उनकी जीवन पद्धतियां अद्‌भुत हैं। और ग्रहों पर अन्य तरह के प्राणी हो सकते हैं। कई नये पदार्थ हो सकते हैं। गुरुत्व आकर्षण, चुम्बकत्व, रासायनिक आकर्षण- जैसे और भी नये नियम हो सकते हैं।

ब्रह्मांड में कुछ तो होना ही चाहिए। तो जो कुछ है वह यह सब है। पदार्थ के मूलकण वास्तव में ऊर्जा के ही बंडल हैं। पदार्थ और ऊर्जा आपस में बदलते रहते हैं। प्रारंभ में केवल ऊर्जा थी। फिर वह पदार्थ बनी। दोनों एक ही चीज के दो रूप हैं। इन कणों के विभिन्न ढंग से संयोजनों से विभिन्न पदार्थ बनते हैं और जब पदार्थ हैं तो उनके कुछ गुण भी होने चाहिए। बिना गुण के कोई पदार्थ संभव नहीं है। अत: सारी प्रकृति अपनी समस्त ऊर्जा और उसके सभी गुणों तथा नियमों के साथ ईश्वर हैं।

वैज्ञानिक तथ्यों के प्रकाश में, सृष्टि में जो कुछ अद्‌भुत है उसके मूल कारक को ही ईश्वर कहा जा सकता है।

-द्वारा विद्या ट्यूटोरियल, रामलीला मैदान के पीछे
रायगढ़-496001 (छत्तीसगढ़)

SURRENDER YOURSELF FOR A PEACEFUL LIFE

Gani Rajendra Vijay

Whenever we get angry we become weak.We must adopt forgiveness if we want to expand our capability and tolerance. It is believed that if we surrender before others, we are weak. If we agree to what others say and don't oppose them or react at all, we are deemed idiots.

But this is not the reality. Peaceful thinking increases our capabilities. Anger and agitation does not elevate our life but degrades it. We know the truth but don't accept it whole-heartedly. We don't often witness the real truth being honoured in the world, but we do see the truthful suffer in life.

That's why we deviate from the path of truthfulness. But this is an incomplete thought.

Dwell upon it – Does truth require any rewards? If we have made our life truthful, what more respect or honours do we need? Inspite of discipline and self-control, desires dominate and overpower us all the time and deviate us from the right path.

When desires engulf us, we lose control on ourselves. We should fulfil only those desires which help us grow, without hindering the interests of others.

When we start dropping our desires, we feel enriched. 'Nobody is alien and in this world nothing belongs to me'–such attitude separates us from the rest and makes us special.

When we carry bitterness for others in our mind, how can we expect the love and warmth from them in return.

An enemy is a person who nurtures enmity inside him. Apparently speaking, nobody is a friend or foe in this world. If we have good feelings for other people in general then they become our friends and if we nurture bitterness for others, they may not turn into our enemies but we definitely become our own enemy. Where there is possessiveness, there are problems.

We consider our mistakes unintentional and unavoidable but never forgive others for their mistakes. This attitude prevents us from having a balanced mind. Children quarrel and patch up soon after; and they are as innocent as they were before. A man abused Lord Buddha for half an hour but the Lord did not utter a word. Kamath troubled Parshvanath for many days but he did not retaliate. Such is the forgiveness of the saints ! If someone harbours ill will against us, he will be silenced by our demeanour. Our calmness will wipe away his bitterness.

All sadhus and sadhvis accept the virtue of forgiveness in 'Pratikraman'. They don't go to everyone asking for forgiveness but have forgiveness in their heart for everyone. A similar attitude can be developed by us. ■

Maulana Wahiduddin Khan

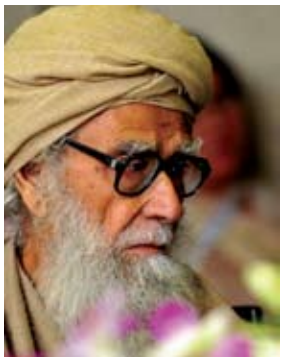

BIG BIRDS OF THE STORM

When there is a severe storm, birds with small wings are caught up in it, but large birds with strong wings fly upwards and save themselves from becoming victims of the storm.

On the basis of this phenomenon, there is a saying in the English language: " Big birds of the storm." This applies to people of high thinking, to those who can save themselves from the environmental storm. That is, they can live on their own without becoming affected by the external world.

Who are the 'big birds' of the storm? They are the 'big bird thinkers', who can live independently, drawing on their own mental resources. Big bird thinkers are those who do not become angry even when provoked. They are those who maintain their positivity even in negative situations, who can control their thoughts in such a way that they can see all men and women as human beings, whether friends or foes, and who can keep the peace even if others turn violent.

'Big bird thinkers' are those who are so mature that nothing can distract them from their objectives, who give well-considered responses when in adverse situations, rather than simply indulging in an emotional backlash.

There is a saying in Hindi "Kutte bhonkte rehte hain aur hathi chalta rehta hai " - the elephant walks on without being disturbed by barking dogs. This is the best illustration of one who has the capacity for 'big bird thinking'. Life is full of storms, full of barking, full of untoward situations - these things are due to the laws of nature and no one is in a position to abolish the laws of nature. So, you have only two options: either to waste your time and energy by constantly stooping to reactionary behaviour or to ignore all undesirable situations and try to live like the elephant in the adage. Elephant-style living is the only successful way to live in this world.

'Big bird thinking' is only another name for spiritual thinking. Spirituality is not something mysterious: it is positive thinking. All spiritual people are positive thinkers and all positive thinkers are spiritual in nature. Spirituality and positive thinking are almost synonymous with each other.

There is a beautiful story in Hindu mythology: Once a man became furious and he kicked Ram in the chest. Ram's response was quite unique. He said: "Mere lokhan seene se tumhare komal paunwen ko chot to nahi lagi?" - I hope your soft leg was not hurt by my iron chest.

Spiritual behaviour is friendly behaviour towards every human being -- to both friends and foes alike. Spiritual behaviour is like the behaviour of flowers that can live with all their fragrance in the neighbourhood of thorns.

An Urdu poet has beautifully expressed this: "Gulshan parast houn mughe gul hi nahi azeez, katoon se bhi nibha kiye ja raha houn mein." - I am a lover of nature, i don't only love flowers, but i can live normally with thorns as well.

Spirituality is good for the all-round development of the individual's personality, for it makes you free of tension and friendly towards all. Spirituality is the way to all kind of success.

Positive thinking makes you a 'big bird thinker' and 'big bird thinking' imbues the human character with spirituality. Although this is an inner quality, it is this inner quality that has the power to better all your external affairs. ■

BE AWARE EMBRACE LIFE

Acharya Mahaprajna

A negative attitude is caused by our materialistic approach that has made us too attached to material things. The moment we see things for what they are, we would be able to understand the true value of material objects, and would never aspire to gain domination over them.

The whole world is one; it's a synthesis. Life is possible only through cooperation. All species and sub-species, all that exists, is the result of synthesis, of integration. Disintegration means decay. The order of the universe would get disturbed with division and discord.

The science of environment underlines the importance of union for survival, of the desirability of not interfering with natural processes, of not upsetting nature's equilibrium, so that there is no confusion.

Greed and exploitation of natural resources has led to pollution, including that of the earth's atmosphere. The protective layer that scientists call the ozone layer surrounding earth shields us from the ill effects of direct radiation from the sun. The erosion of this protective cover could mean the end of life, if nothing is done to reverse the erosion.

It is, therefore, essential that we cultivate a constructive approach towards the environment. For the evolution of constructive thinking, it is necessary to purify our consciousness. As it is, our consciousness is battling impurities; it is so identified with things and ideas. It must rid itself of all identification, so as to be capable of fitting in with the other and with society. Violence, untruth and sense of possession and domination characterising our consciousness now needs to be got rid of. Our consciousness must be cleansed of these impurities; otherwise our approach will continue to be negative and destructive. The first step towards achieving this goal is to transform our outlook from the materialistic to the holistic. By becoming more aware.

A negative attitude is caused by our materialistic approach that has made us too attached to material things. The moment we see things for what they are, we would be able to understand the true value of material objects, and would never aspire to gain domination over them. We would then realise the essential humanity of the other and see the other as being a part of us. Otherwise, every situation will seem problematic; problems keep multiplying without any possibility of a solution. In such a scenario, even religion becomes a problem.

The only way out of this vicious cycle is to become less rigid in our thinking and in the way we feel and act. Get rid of stereotypical conduct that makes us live a life of dejection. We need to be mindful and compassionate.

There are two kinds of insensitivity: Confused vision and thoughtless conduct. A mediator must clearly understand that the first priority is to chastise attitudes by getting rid of ignorance. This would require experimentation and experience. Learn to experience truth. Practise meditation. Mere accumulation of information and even knowledge is not enough. Practice combined with theory yields valuable results.

Know the value of the present moment. Gain insight by being a witness, by becoming more aware. ay our hearts be filled with an intense longing for liberation so that we may progress undeterred on the path of awareness and oneness. Therein lies our salvation. ■

ALL REALITY IS RELATIVE

Pranav Khullar

Ahimsa, the most important tenet in Jainism, explores the psychological intent to hurt and harm another and turns the focus inward from an actual act of violence to the intentionality of the act.

Ahimsa is seen as the abjuring of violent and hurtful thoughts for another, possible only when we realise the relevance of `parasparopagraho jivanam' - the concept of interdependence. All life is inextricably connected and ahimsa is nothing but expression and mindfulness of natural empathy for another.

Ahimsa, an ethical principle, is rooted in the Jaina metaphysics of anekantavada which details the many-sidedness or anekanta of reality; that no single point of view can be construed as being the whole truth. The story of the five blind men who gave their own perspective of the elephant is a good example of the way we tend to see one or two aspects of anything and perhaps jump to the conclusion that what we perceive to be is the whole truth, whereas it is not the only truth. There could be as many versions of the truth as there are those trying to comprehend it.

The philosophical concept of anekantavada is further elaborated upon in the abstruse logic of 'saptabhanginaya'--- the doctrine of seven conditioned predications, wherein each statement is expressed from seven different relative points of view, and each view is prefixed by a "maybe" or "relatively" (syad), so perhaps a thing is real, and perhaps it isn't, in relative terms, and it could be both real and unreal. Similarly, something could be indescribable, maybe real but indescribable. This dialectic of the relativity of knowledge, popularly known as syadvad, rules out any categorical or absolutist pronouncement, and shows how each judgment can effectively be only relative and conditional. Syadvad dissects the empirical world psychologically, and in so doing, seeks to reveal the relativity of the mind itself. This theory of dealing with partial truths is also the philosophical basis for ethical living with the principle of ahimsa, for it prepares the ground for acceptance and respect of opposing views. This would help introspection of one's own claims and enable respecting varied opinions.

Anekantavada is positioned midway between the Vedantic assertion of Brahmn as Absolute and the Buddhist postulation of 'change as permanent' and offers its own pragmatic blueprint for a more peaceful existence, where all views are accommodated out of the belief that all minds are relatively conditioned, and are actually interdependent. But this analysis of the empirical world is also ironically meant to be a call to the path of renunciation, after having understood the unreal and relative nature of things, and who, through right conduct, right faith and right reflection, has progressively detached himself from externalities and is now ready to follow and attain the `Mahavira state of mind' -- "where karmic matter has thinned out and the soul expands to be one with the cosmos." ■

चिंतन

सुरेश पंडित

गजल के बहाने

तरह-तरह के लोग जब एक साथ चलते हैं या कोई काम करते हैं तो वे अनायास एक भीड़ में तब्दील हो जाते हैं। उनमें किसी की अलग कोई पहचान नहीं रहती। फिर भी कुछ लोग ऐसे होते हैं जो इस भीड़ का अंग बने रह कर भी अपने को खास बनाने की कोशिश में लगे रहते हैं। यह जानते हुए भी कि उनकी यह इच्छा आसानी से पूरी होने वाली नहीं है। अब देखिए कि कवियों की भीड़ में दुष्यंत कुमार ने गजल को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बना कर आखिर एक अलग स्थान बना लिया। अगर वे पहले की तरह कविता लिखते रहते तो शायद वह ख्याति नहीं प्राप्त कर पाते जो गजल लेखन ने उन्हें दिलाई।

दुष्यंत कुमार के बाद गजलकारों की एक बाढ़-सी आ गई। जिनमें थोड़ी-सी भी लिखने की प्रतिभा थी उन्हें तुरंत ख्याति पाने और वाहवाही लूटने का यह सबसे आसान रास्ता दिखाई दिया। उस बाढ़ में अच्छे-बुरे लेखक में भेद करना मुश्किल हो गया, इसे हवा दी हिन्दी की पत्रिकाओं ने। जो कभी इन्हें लघु कथा, रुबाई या विशिष्ट आध्यात्मिक, राजनीतिक लोगों के प्रवचनों की तरह खाली जगह भरने के लिए इस्तेमाल करती थीं, अब बिना गजलों के व्याकरण को समझे इन्हें प्रमुख स्थान देकर छापने लगीं। ऐसी पत्रिकाएं भी फलने-फूलने लगीं जो केवल गजलें छापती थीं।

पर कुछ लोगों को यह खटकता भी था। इस अराजकता पर मन ही मन कुढ़ने या आपस में बुरा-भला कह देने के अलावा वे कुछ कर भी नहीं सकते थे, क्योंकि ऐसा करने के लिए उनके पास न कोई मंच था और न इन बरसाती लेखकों से लोहा लेने का साहस। लेकिन कहते हैं कि वीर विहीन तो पृथ्वी कभी नहीं रही। तो भला इस दुष्कर काम के लिए भी कोई सामने क्यों नहीं आता। शायद गजलकारों को सही राह दिखाने और उनकी कमियों को दुरुस्त करने के लिए ही दरवेश भारती हिम्मत के साथ मैदान में खड़े हुए। वे खुद एक अच्छे गजलकार हैं, लेकिन वे गजल लेखन का अनुशास्ता बनने की कंटीली राह अपने लिए चुनते हैं और संकल्प लेते हैं कि वे न अपने कर्तव्य से विचलित होंगे और न कभी मैदान छोड़ कर भागेंगे।

सन् 2008 से अच्छी-बुरी गजलों के बीच के फर्क से लोगों को अवगत कराने के लिए उन्होंने 'गजल के बहाने' नाम से एक छोटी पत्रिका शुरू की। इसके अब तक आठ अंक निकल चुके हैं। पहले अंक के संपादकीय में उन्होंने अपना उद्देश्य स्पष्ट कर दिया कि यह सही है कि आज गजल राजनीतिक सरोकारों, भाषायी संरचना, तीव्र अनुभूतियों और अभिव्यक्ति के नए आयामों से संयुक्त होकर लोकप्रियता को प्राप्त कर रही है, लेकिन उसका वह स्वरूप यानी छंदोबद्ध ढांचा बिगड़ता जा रहा है। अरूज (गजल के व्याकरण) को सही तौर पर न समझने के कारण अक्सर अश्आर में सक्ता (बाधा) आ जाता है या पूरा ही मिस्रा वज्न से खारित हो जाता है। इसीलिए वे बह्रों में प्रयुक्त होने वाले रुक्नों और उनके समुचित प्रयोग की जानकारी देने के लिए यह पत्रिका निकाल रहे हैं। हिन्दी में अपने ढंग की यह पत्रिका नए गजल लेखकों के पथ प्रदर्शन पर पूरी तरह अपना ध्यान केन्द्रित किये हुए है। जाहिर है, इसके पीछे न धन कमाने और न यश बटोरने की इच्छा है, क्योंकि सत्तर पार की उम्र और अनेक बीमारियों से जूझते हुए भी दरवेश इसे चलाने के लिए कटिबद्ध हैं। गजल प्रेमी पाठकों को यह नि:शुल्क भेजी जाती है। यह एक ऐसा एकल उद्यम है, जिसमें संपादन से लेकर चपरासी तक का काम उन्हें खुद ही करना होता है।

धीरे-धीरे इसकी मांग बढ़ती जा रही है और दरवेश भारती 'गजल के डॉक्टर' के रूप में देखे जाने लगे हैं। पहले वे पत्र-पत्रिकाओं में छपी गजलों में से कुछ का चयन कर उनकी त्रुटियों की ओर लेखकों का ध्यान आकर्षित करते थे। अब नौसिखिए ही नहीं, स्थापित गजलकार भी उन्हें अपनी गजलें दिखा कर सही होने का प्रमाण पत्र पाने लगे हैं। गजल के बारे में भारती का कहना है कि इस पर किसी भाषा विशेष का एकाधिकार नहीं है। चंद शब्दों में मर्मस्पर्शी बात कह देने की कला ही इसे सार्थक बनाती है। उनकी कोशिश है कि गजलकारों की संख्या जिस तरह बढ़ रही है, उसी तरह इनकी गुणवत्ता भी बढ़ती रहे।

जिद करना कोई अच्छी बात नहीं मानी जाती। लेकिन यह भी सच है कि जिद्दी लोगों ने ही दुनिया में कुछ नया और अद्भुत कर दिखाया है। दरवेश भारती भी गजल लेखन में आ रही विकृतियों को दूर करने की जिद ठाने हुए हैं। संभव है कि यही जिद एक दिन उन्हें गजलकारों की भीड़ में कोई अलग पहचान दिला दें।

-सी-383, लाजपत नगर-2
अलवर-301001 (राजस्थान)

कामयाबी के सूत्र

- दिवास्वप्न देखने से अच्छा है हम जो मिले उसी में संतोष करें, उसे प्रभु का प्रसाद मानें। इसी में अपनी खुशियां ढूंढें। आपको खुशी के साथ शांति मिल जाएगी।
- मितव्ययी व्यक्ति को अधिक नहीं चाहिए, इसलिए उससे अपराध नहीं होते। अन्यथा अपराध की कमाई, व्यसनों में गंवाई।
- सत्यवादी ही स्पष्टवादी होता है। अवसरवादी स्पष्टवादी नहीं हो सकता, चूंकि उसका सच और उसकी सोच बदलती रहा करती है।
- ईमानदारी में अपराध नहीं होते। पेट भर खाने की जुगत बिठाना इतना दुष्कर तो नहीं कि आपको झूठ बोलना पड़े, कोई अपराध करना पड़े या किसी अन्य का हक छीनना पड़े।
- झूठ बोलने वाले लोग खरा कहने वालों से कतराते हैं। इन दोनों में कभी मित्रता नहीं होती।

-किशन धीरज

तालमेल

मंजुला जैन

जरूरी है परिवार में सामंजस्य

परिवार में सामंजस्य स्थापित करने की जिम्मेदारी बुजुर्गों पर है। परिवार में सामंजस्य स्थापित करने के साधनों की खोज से पहले एक बार गंभीर समीक्षा यह करनी चाहिए कि क्या वास्तव में सामंजस्य की अपेक्षा है? अपेक्षा है तो उसके न होने के क्या कारण है? मूल कारण का निवारण हुए बिना परिवार में सामंजस्य या सौहार्द का मूल्य स्थापित नहीं हो सकता।

वर्तमान जीवन-शैली ने संयुक्त परिवार की प्रथा को तोड़ा है और एकल परिवारों की संस्कृति को जन्म दिया है। जब से गांवों का शहरों की ओर पलायन शुरू हुआ है या उपभोक्ता संस्कृति ने गांवों में प्रवेश किया है, संबंधों का धरातल खिसकता हुआ दिख रहा है। पारिवारिक रिश्तों में बिखराव आता जा रहा है। वृद्ध लोगों या सेवानिवृत्त व्यक्तियों का जीवन इस बिखराव से सर्वाधिक प्रभावित हो रहा है। एकल परिवारों में संस्कार, संस्कृति और परम्पराओं की विरासत छिन्न-भिन्न हो रही है। इस त्रासदी का अनुभव वृद्ध लोगों को भयभीत किये हुए हैं।

जहां संयुक्त परिवार का अस्तित्व आज भी कायम है, उन परिवारों की मूल्यवत्ता का बिन्दु है पारिवारिक सौहार्द या पारिवारिक सामंजस्य। आज सौहार्द या सामंजस्य का जहाज युगीन सभ्यता के सागर में डूब रहा है, यह सबसे अधिक वृद्धों के लिए चिन्ता का विषय है। इससे वृद्धों की मुस्कान फीकी होती जा रही है और उनका जीवन बोझिल बनता जा रहा है। ऐसा लगता है मानों सड़कों पर अंधेरे से मुकाबला करती डे-लाइटों का उजाला फैल रहा है किन्तु वृद्धों के जीवन में अंधेरों का मजमा लगा हुआ है। इस मजमे को बिखेरने के लिए वृद्धों को अपने आत्मविश्वास के दीवट में सौहार्द/सामंजस्य का तेल भरना जरूरी है।

परिवार के अनेक सदस्य एक साथ रहते हैं। उनको केवल रहना ही नहीं है, बल्कि उनमें सुविधा और गौरव का अनुभव भी होना चाहिए। परिवार में नीति-निर्धारण और व्यवस्था का पूरा दायित्व वृद्धों पर रहता है। वे अपनी इस जिम्मेदारी के प्रति पूर्ण जागरूक रहें और आधुनिक जीवन की अपेक्षाओं के अनुरूप अपने व्यवहार में लचीलापन लाए। उनके लिए जरूरी है- वे एक-दूसरे को सहना सीखें। सहिष्णुता के अभाव में दो व्यक्तियों का भी एक साथ निर्वाह होना कठिन होता है, समूचे परिवार की बात तो दूर है।

परिवार में सामंजस्य स्थापित करने की जिम्मेदारी बुजुर्गों पर है। परिवार में सामंजस्य स्थापित करने के साधनों की खोज से पहले एक बार गंभीर समीक्षा यह करनी चाहिए कि क्या वास्तव में सामंजस्य की अपेक्षा है? अपेक्षा है तो उसके न होने के क्या कारण है? मूल कारण का निवारण हुए बिना परिवार में सामंजस्य या सौहार्द का मूल्य स्थापित नहीं हो सकता।

बुजुर्गों को चाहिए कि वे परिवार में सामंजस्य स्थापित करें, क्योंकि यही सुखी परिवार का स्रोत है। इसके लिए उन्हें परिवार की सुरक्षा के लिए सक्रिय होना होगा, अपना मानसिक संतुलन कायम रखना होगा, परिवार के सभी सदस्यों की भावनाओं का ध्यान रखना होगा, रहन-सहन, खान-पान आदि में समय के अनुसार बदलाव का विरोध न करें एवं अपने अनुभव का लाभ दें।

परिवार में सामंजस्य बनाए रखने के लिए यह भी जरूरी है कि बुजुर्ग अपनी उम्र का एहसास न कराएं, अपनी आदतों के गुलाम न बनें एवं अपनी जिद्द को महत्व न दें।

पारिवारिक सौहार्द एवं सामंजस्य का एक प्रबल निमित्त है। विचारों का अनाग्रह। जहां आग्रह है वहां खिंचाव है, तनाव है और टूटन है। जिससे विचारों में लचक होती है, वह समय पर झुक जाता है और इसी से परिवार में सामंजस्य बन पाता है। परिवार में सामंजस्य स्थापित करने के लिए निम्न जीवन-सूत्रों को अपनाएं।

- सम्मानित जीवन जीएं
- परिवार में सम्मान पाने के लिए सबको साथ लेकर चलें।
- किसी को 'ज्यादा प्यार, किसी को कम प्यार' के बजाय सबको समान रूप से प्यार करें और उनके हितों का ख्याल करें।
- चारित्रिक और नैतिक अनुशासन से परिवार को स्वाभाविक रूप से प्रभावित करें।
- नियमानुसार जीवन जीएं लेकिन उसके लिए दूसरों को परेशान न करें।
- अपना काम स्वयं कर लेने में विश्वास करें।
- ऐसा कोई कार्य न करें, जिससे परिवार के सदस्य आपके सम्मान, आदर और श्रद्धा में कमी करना शुरू कर दें।
- क्रोध में भी परिवार के किसी सदस्य को अपशब्द के साथ न डांटें।
- अपनी गलतियों को दूसरों पर न मढ़ें।
- स्वयं अनुशासन में रहकर ही परिवार के अन्य सदस्यों को अनुशासन में रहने के लिए कहें।
- नशीली चीजों का सेवन करके परिवार के सदस्यों की नजरों में न गिरें।
- छोटों के सामने पत्नी को बुरा-भला न कहें।
- परिवार की सुरक्षा के लिए काम करें।
- मानसिक संतुलन बनाए रखें।
- उपदेश देने से बचें।
- उम्र का एहसास न कराएं।
- अपनी आदतों के गुलाम न बनें।
- परिवार के सभी सदस्यों की भावनाओं का ध्यान रखें।
- रहन-सहन, खान-पान आदि में समय के अनुसार बदलाव का विरोध न करें।
- परिवार की एकता को बनाए रखने के लिए सचेत रहें।
- अपनी जिद्द को महत्व न दें।
- अपने अनुभव का लाभ दें।

(साभार : 'कैसे जीएं पचास के बाद' पुस्तक से)

पुस्तक समीक्षा

जन आस्थाओं पर खरी उतरती कृति

डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी

पुस्तक रहस्य पूर्वजन्मों के
लेखक प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि किशनलाल
प्रकाशक अहा! जिन्दगी, जयपुर
पृष्ठ 198
मूल्य 200 रुपए

भारतीय चिन्तन, परम्परा अध्यात्म से मंडित है। ऐसा कहना प्रासंगिक इसलिए भी है कि प्राय: सभी भारतीय चिंतन परम्पराओं में आत्मा को केन्द्र में रखा गया है। आत्मा ही वह कड़ी है जो पूर्वजन्म एवं पुनर्जन्म का आधार है। अत: यह कहना प्रासंगिक है कि भारतीय आध्यात्मिक चिंतन के कारण ही पूर्वजन्मों के रहस्य साकार होते हैं।

प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिश्री किशनलाल की सद्य: प्रकाशित कृति 'रहस्य पूर्व जन्मों के' एक उपयोगी कृति है। लेखक ने छह अध्यायों में विभक्त कर विषय का सांगोपांग विवेचन किया है। प्रथम अध्याय पुनर्जन्म और पूर्वजन्म के ऐतिहासिक दस्तावेज के अंतर्गत विषय की ऐतिहासिकता का स्पष्ट विवेचन है। द्वितीय अध्याय जिज्ञासाओं के दो छोर के अंतर्गत जाति स्मृति ज्ञान पर प्रकाश डाला गया है। यहां यह भी स्पष्ट है कि भगवान महावीर ने जाति स्मृति के तीन मुख्य कारण बताए हैं- पहला स्वत: सहज स्मृति, दूसरा परव्याकरण से और तीसरा विशिष्ट ज्ञानियों से। कुछ भी हो इतना कहना प्रासंगिक होगा कि जाति स्मृति ज्ञान जैन परम्परा में पूर्वजन्मों का आधार है।

तृतीय अध्याय 'और यह आदि ग्रंथों के स्पर्श से' इसके अंतर्गत लेखक ने मेघकुमार को जाति स्मरण, नमिराजा को जाति स्मरण, चण्डकौशिक को जाति स्मरण, भृगु पुत्रों को जाति स्मरण, ब्रह्मदत्त और मित्र चित्र को जाति स्मरण को प्रस्तुत कर विषय को अत्यधिक रोचक बनाया है। पंचम अध्याय में मोहनीदेवी के इस जीवन के अभावों का मार्मिक चित्रण है। चूंकि पूर्वजन्म में उन्होंने एक राजकुमारी के रूप में पक्षी के घोंसले को न केवल तहस-नहस किया अपितु उस परिवार को नेस्तानाबूद किया जिसके कारण इस जन्म में उन्हें पुत्र एवं पति अभाव को भोगना पड़ा। छठे अध्याय में प्रेक्षाध्यान की पूर्वजन्मों के प्रयोगों की विधि इस प्रकार से उकेरी गई है कि आम व्यक्ति इस विधि का परायण सहज कर सकता है।

'रहस्य पूर्वजन्मों के' एक अप्रत्यक्ष विषय को प्रत्यक्ष करने की कोशिश कही जा सकती है। इस कोशिश में लेखक का श्रम तो स्तुत्य है ही साथ ही साथ 'अहा जिन्दगी' का प्रयास भी प्रशंसनीय कहा जायेगा। अहा जिन्दगी के संपादक यशवंत व्यास की पैनी दृष्टि की कसौटी पर खरा उतरना कृति की महत्ता को सिद्ध करता है। कुल मिलाकर पुस्तक अनुसंधान की प्रवृत्ति को आगे बढ़ाने में सहयोगी होगी, अस्तु पुस्तक पठनीय, मननीय एवं संग्रहणीय है।

(समीक्षक दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं (राजस्थान) में उपनिदेशक के पद पर कार्यरत हैं)

ज्वलंत मुद्दे की संवेदनशील प्रस्तुति

बरुण कुमार सिंह

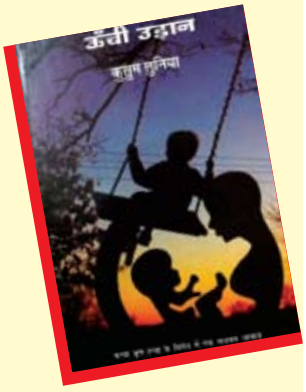

पुस्तक ऊंची उड़ान
लेखक डॉ. कुसुम लुनिया
प्रकाशक राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. 7/31, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
पृष्ठ 116
मूल्य 150 रुपए

हमारे देश में बेटे के मोह के चलते हर साल लाखों बच्चियों को इस दुनिया में आने से पहले ही हत्या कर दी जाती है। लड़कियों की इतनी अवहेलना, इतना तिरस्कार चिंताजनक और अमानवीय है। जिस देश में स्त्री की सेवा, त्याग और ममता की दुहाई दी जाती हो, उसी देश में एक कन्या के आगमन से पूरे परिवार में मायूसी और शोक छा जाना बहुत ही विडम्बना है।

जिस देश में कभी नारी को गार्गी, मैत्रयी जैसे विदुषी महिलाओं के रूप में सम्मान प्राप्त हुआ है, वहीं अब कन्या के जन्म पर परिवार और समाज में दु:ख व्याप्त हो जाता है। अच्छा हो मनुष्य जाति अपनी गरिमा पर प्रश्नचिन्ह लगाने वाली ऐसी गतिविधि से बचे और कन्या के जन्म को अपने परिवार में देवी अवतरण के समान माने।

कन्या भ्रूण-हत्या के कारण, निवारण तथा परिणाम को एक नाटक में एक साथ समेटकर डॉ. कुसुम लुनिया ने लेखकीय क्षमता का सजीव एवं जीवंत प्रस्तुतिकरण किया है। लेखिका ने कन्या भ्रूण-हत्या के साथ-साथ महिला सशक्तिकरण का मुद्दा भी जोर-शोर से उठाया है। इससे पूर्व लेखिका द्वारा लिखी गई पुस्तक 'श्रेष्ठ आहार शाकाहार' भी काफी चर्चित रही।

'ऊंची उड़ान' नाटक के कुछ पात्रों की विशेषताएं जीवंत संवाद रूप में स्वत: प्रकट होती हैं। कहीं पर परिस्थितिजन्य विवशता, कुछ में दृश्य की वास्तविकता, कुछ में अदृश्य की अनुभूति भी परिलक्षित होती है। नाटक का अंत अनेक भ्रमों को तोड़ता है। दिशा संकेत भी करता है कि अगर कोख के कत्लगाह से कन्या बच जाए और उसे इस दुनिया में आकर हुनर दिखाने का मौका मिले तो वह इतिहास गढ़ सकती है।

कन्या भ्रूण-हत्या के कारण ही न जाने कितनी ही इंदिरा गांधी, कितनी ही मदर टेरेसा, कितनी रानी लक्ष्मीबाई जैसी प्रतिभाओं की हत्या की है। ये अजन्मी कन्याएं न जाने किस प्रकार से इतिहास का निर्माण करतीं, देश को, विश्व-समाज को प्रकाश का नूतन संदेश देकर मानवता का कल्याण करती।

कन्या भ्रूण-हत्या का यह आंदोलन एक शहर या प्रदेश तक सीमित नहीं रहना चाहिए, इसका देशव्यापी होना आवश्यक है, क्योंकि आज यह समस्या देशव्यापी है। प्रस्तुत पुस्तक में प्रख्यात लेखक डॉ. वेद प्रताप वैदिक, साहित्यकार अशोक चक्रधर एवं दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के संदेश भी समाहित हैं।

'ऊंची उड़ान' नाटक की भाषा सरल व सुबोध है। कई स्थानों पर संवाद हृदयस्पर्शी व मार्मिक बन पड़े हैं। यह नाटक मंचन योग्य है। जहां तक एक ओर यह पुस्तक आम पाठक के लिए पठनीय है वहीं दूसरी ओर समाज सुधार के उद्देश्य से सक्रिय नाटक मंडलियों के लिए भी उपयोगी है। ■

साध्वी कनकश्री

बेटियां आत्मीयता की पराकाष्ठा हैं

अपेक्षा है समाज और परिवार में लड़कियों के प्रति सकारात्मक सोच और अनुकूल वातावरण का निर्माण हो, जिससे वे स्वयं अच्छे नागरिक के रूप में समाज और राष्ट्र को सेवाएं दे सकें तथा शक्तिशाली राष्ट्र के निर्माण में सहभागी बन सकें।

प्रश्न है, क्या संतान का भी कोई लिंग होता है? माता-पिता और संतान का संबंध अन्य संबंधों से श्रेष्ठ माना जाता है। यह संबंध जन्म से मृत्युपर्यंत एक जैसा रहता है। कहा तो यह जाता है कि संतान का कोई लिंग नहीं होता फिर भी इसे भारतीय-परंपरा कहें, अज्ञान कहें या समाज की संकुचित सोच कि माता-पिता लिंग के आधार पर अपनी ही संतान-पुत्र और पुत्री को भेदभावपूर्ण नजरिये से देखते हैं। पुत्र के जन्म पर खुशियों का इज़हार किया जाता है, उपहार बांटे जाते हैं। इसके विपरीत पुत्री का जन्म ऐसा माना

जाता है, मानो परिवार की आशाओं पर पानी फिर गया हो। ऐसा क्यों? शिक्षित और उदार विचारों वाले कुछेक परिवारों को छोड़कर अधिकांश परिवारों में यह अंतर स्पष्ट परिलक्षित होता है। इक्कीसवीं सदी में इंटरनेट के माध्यम से पूरी दुनियां को घर-परिवार की तरह समझने वाले लोग बेटी को दोयम दर्जे का प्राणी ही मानते हैं।

बेटे को घर का चिराग, संपत्ति का वारिस और बुढ़ापे की लाठी समझ कर उसके पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा पर पर्याप्त ध्यान दिया जाता है, वहां बेटी को पराया धन समझा जाता है। उसका पालन-पोषण कहीं मजबूरी तो कहीं जिम्मेदारी समझ कर किया जाता है। माता-पिता को अपनी लाडली बेटी में प्रारंभ से ही परायापन महसूस होने लगती है। बेटी को समय-समय पर अहसास भी कराया जाता है कि यह घर तुम्हारा नहीं है। तुम्हें तो एक दिन-दूसरे घर जाना है।

लड़की का असली घर कहां है?

लड़की को यह समझ में नहीं आता कि जन्म देने वाले मां-बाप का घर उसका अपना घर नहीं है तो शादी के बाद उन अनजान लोगों का घर उसका अपना कैसे हो सकता है? शादी से पहले माता-पिता अपनी बेटी को पराया-पराया कहते हैं और शादी के बाद ससुराल वाले। जन्म देने वाले मां-बाप उसे जमानत के रूप में रखते हैं ''अर्थो हि कन्या परकीय एव'' (कालिदास) कन्या पराया धन है, यह मानकर उसको जतन से रखते हैं, सुरक्षा करते हैं।

शादी के बाद ससुराल वाले पराए घर से आई हुई मान कर उसके साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार करते हैं। एक मासूम कली समझ नहीं पाती कि उसका असली घर कौन-सा है? मां का घर या पति का घर?

चार दिन की ज़िंदगी, आधी यहां गुजरी आधी वहां।
कौन उत्तर दे उसे, उसका असली घर है कहां।।

सच्चाई तो यह है कि वह दोनों घरों की अपनी है, आत्मीय है, उपयोगी है। बेटी दो-दो घरों की शोभा है। उसकी सद्गुण सुरभि से दो-दो परिवार गंधायित होते हैं। क्योंकि कन्याएं अलग-अलग परिवेश वाले दो परिवारों-परिहर और ससुराल का हित-साधन करती हैं, गौरव बढ़ाती हैं।

पुत्रियां दोयम नहीं हैं

इक्कीसवीं सदी की परिवर्तित मानसिकता में मात्र वंश-निरंतरता के एक पक्षीय आधार पर बेटी को नम्बर दो की श्रेणी में स्थापित करना तर्कसंगत नहीं लगता क्योंकि भारतीय संस्कृति में कन्या-जन्म पर भले ही उत्सव न मनाया जाता हो, पर कन्या की उपयोगिता किसी भी परिवार में कम नहीं है, आज लड़कियों को समाज के हर क्षेत्र में लड़कों के बराबर आगे बढ़ने और कार्य

करने के पर्याप्त अवसर प्राप्त हैं। सामाजिक परिवेश में भी नाम, रूप और आकृति के सिवाय बेटे-बेटी की तुलना और भेदपूर्ण मान्यता का कोई औचित्य प्रतीत नहीं होता।

संवेदनशील और स्नेहशील होती हैं बेटियां

भावनात्मक विश्लेषण से यह तथ्य उभर कर सामने आया है कि पुत्रियां अपेक्षाकृत अधिक संवेदनशील और भावुक होती हैं। माता-पिता के साथ रहती हुई वे घरेलु कार्यों में मां का सापेक्ष सहयोग करती हैं तो व्यापारिक क्षेत्र में पिता के कामों में भी हाथ बटाती हैं। विवाह के बाद भी वे उनके साथ आत्मीय जुड़ाव रखती हैं। वे अधिक स्नेहशील भी होती हैं। बेटियों की मानसिकता को कितनी मार्मिकता के साथ उभारा गया है कवि कि इन पंक्तियों में-

''बेटियां शीतल हवाएं हैं,
जो पिता के घर बहुत दिन तक नहीं रहतीं।
ये तरल जल की परातें हैं, लाज की उजलती कनातें हैं,
है पिता का घर हृदय-जैसा, ये हृदय की स्वच्छ बातें हैं।
बेटियां पावन ऋचाएं हैं,
बात जो दिल की कभी खुल कर नहीं कहतीं।।
है तरलता प्रीति पारे की, और दृढ़ता ध्रुव सितारे की,
कुछ दिनों इस पार हैं, लेकिन नाव हैं ये उस किनारे की।
बेटियां ऐसी घटाएं हैं,
जो छलकती हैं, नदी बनकर नहीं बहतीं।''

आज विश्व स्तर के विशिष्ट व्यक्तित्व भी बेटी की श्रेष्ठता के पक्षधर हैं। लंदन की जन-संपर्क परामर्शदात्री लिंडर डेविस का मानना है- ''बेटी की तुलना में स्नेह और ममतामय आंगन चिरकाल तक बेटी से ही रहता

है।'' लंदन विश्वविद्यालय की मनोचिकित्सक डॉ. मरीना बेटियों के पक्ष में तार्किक आधार प्रस्तुत करती हुई कहती है-मानसिक रोगों की परिधि को सीमित करने में बेटियों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। उनके अध्ययन का निचोड़ है-बेटे माता-पिता के मानसिक-उद्वेग के निमित्त बन जाते हैं। पढ़ाई में मन नहीं लगाना, बार-बार परीक्षा में अनुत्तीर्ण होना, रातभर बाहर घूमते रहना, अनुशासनहीनता, गलत-संगति, हिंसा और अपराध में लिप्त होना- इस तरह के लड़के माता-पिता को मानसिक उत्पीड़न देते हैं। इसलिए समाजशास्त्रियों की दृष्टि में भी बेटों की तुलना में बेटी कहीं अधिक दूरगामी, पारदर्शी व विकसित समाज की आधार स्तम्भ सिद्ध हो सकती है। अत: उनके अभिमत से बेटी को नंबर दो कभी नहीं मानना चाहिए, अपितु उसे नंबर वन प्लस की व्यावहारिकता प्रदान करने में भी कोई आपत्ति नहीं लगती।

बेटियों की विश्वस्तरीय साख के निर्माण में श्रीमती इन्दिरा गांधी, गोल्डा मायर, मदर टेरेसा, किरण बेदी, अरुन्धती राय, मेधा पाटेकर आदि की भूमिका सदियों तक कन्याओं के लिए अभिप्रेरक बनी रहेगी।

अपेक्षा है समाज और परिवार में लड़कियों के प्रति सकारात्मक सोच और अनुकूल वातावरण का निर्माण हो, जिससे वे स्वयं अच्छे नागरिक के रूप में समाज और राष्ट्र को सेवाएं दे सकें तथा शक्तिशाली राष्ट्र के निर्माण में सहभागी बन सकें। स्वयं कन्याएं भी आत्म-विश्वास, दृढ़संकल्प, सौहार्द सद्भावना, सहनशीलता, सृजनात्मक शक्ति आदि जीवन मूल्यों का विकास करती हुई अपने सत्संस्कारों की सुगंध से आस-पास के वातावरण को सुवासित करें। ■

परिवर्तन

डॉ. हीरालाल छाजेड़ 'जैन'

जैसा चाहो वैसा बन जाओ

मनुष्य केवल चेतन मन की शक्ति को ही काम में लेता है, यदि वह ध्यान के द्वारा अवचेतन मन की शक्ति का प्रयोग करने की विधि को हासिल करना सीख लेता है तो उसे अनंत उपलब्धियां प्राप्त हो सकती हैं, फिर वह जैसा चाहे वैसा बन सकने में सक्षम बन सकता है।

यह सुनकर आपको आश्चर्य लगेगा कि जैसा हम चाहते हैं या सोचते हैं वैसा ही हमें मिल सकता है, यह कैसे संभव है। किन्तु यह भी संभव है। मनुष्य के पास एक ऐसी शक्ति है- चेतन और अवचेतन मन।

हम जो भी बात दिन भर सोचते रहते हैं वह कार्य चेतन अवस्था में कौन्शस माइंड काम करता है, उसकी शक्ति सीमित है किन्तु सब-कौन्शस मन की शक्तियां असीमित होती है। अनुप्रेक्षा के द्वारा हम सब-कौन्शस मन में पहुंचकर जो भी विचार स्थापित करते हैं वह भावना हमारे अन्तर पटल पर जाकर विशेष प्रभाव उत्पन्न करती है। जब हम बार-बार उस भावना की अनुप्रेक्षा करते हैं, तब उसकी शक्ति इतनी बढ़ जाती है कि वे सकारात्मक विचार जैसा हम सोचते हैं वैसा ही फल देने लगते हैं। उदाहरण के लिए अगर किसी व्यक्ति के शरीर में किसी प्रकार की पीड़ा है और वह व्यक्ति पूरी तन्मयता से बाहर के चेतन मन से हटकर अवचेतन मन में अनुप्रेक्षा के द्वारा यह बात मन ही मन में दोहराता रहे कि मेरे शरीर की पीड़ा व्याधि शांत हो रही है। मैं स्वस्थ हो रहा हूं। एक समय ऐसा आयेगा कि पीड़ा शांत होती नजर आयेगी और पीड़ा का अनुभव फिर नहीं होगा।

विश्व में आज हिंसा, भय, क्रोध, तृष्णा, घृणा, ईर्ष्या और असुरक्षा व बदले की भावना दिखाई देती है। इसका कारण है अवचेतन में छिपे नकारात्मक विचार। अगर हम इन नकारात्मक विचारों को अवचेतन मन में ही दबाकर रखते हैं, तब शरीर की रासायनिक प्रक्रिया विषाक्त बनकर तनाव, चिंता, हृदय रोग व अनेक अन्य रोगों का कारण बनती है। आज के युग में व्यक्ति की

दु:खद स्थिति का प्रमुख कारण निगेटिव थिंकिंग है। कहते हैं चेतन मन की शक्ति अवचेतन मन की शक्ति से कई गुणा कम है।

मनुष्य केवल चेतन मन की शक्ति को ही काम में लेता है, यदि वह ध्यान के द्वारा अवचेतन मन की शक्ति का प्रयोग करने की विधि को हासिल करना सीख लेता है तो उसे अनंत उपलब्धियां प्राप्त हो सकती हैं, फिर वह जैसा चाहे वैसा बन सकने में सक्षम बन सकता है।

हमारा चेतन मन सोता है, विश्राम करता है किन्तु अवचेतन मन न तो कभी सोता है न आराम फरमाता है। शरीर के सारे कार्य दिल की धड़कन, पाचन और उत्सर्ग क्रिया, रक्त संचार सभी क्रियाओं में उसी की भूमिका होती है।

अवचेतन मन में ध्यान के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन की जो रेखाएं खींचता है, उसी स्वरूप को पा लेता है। जब ध्यान के ज्ञाता-विशेषत: ध्यान की गहराइयों में व्यक्ति को ले जाकर अवचेतन मन में सकारात्मक सोच लाने का निर्देश देते हैं यथा मैं पूर्ण स्वस्थ हो रहा हूं, मेरे जीवन में किसी प्रकार का दु:ख व संकट नहीं रह गया है, समृद्धि मेरे पांव चूम रही है आदि। अवचेतन मन की गहराइयों में जो भी निर्देश दिये जाते हैं, उसे वह तुरंत स्वीकार कर लेता है।

हमारे अवचेतन मन में असीमित अनंत शक्ति का प्रवाह बह रहा है उसका साक्षात्कार कर, इस पर व्यक्ति द्वारा छोड़े गये अच्छे विचारों का साकार रूप जीवन को सफल बना देता है और नकारात्मक विचार इसके विपरीत कार्य करते हैं। इसलिए ज्ञानी व्यक्ति हमेशा अपने विचार सकारात्मक रखते हैं।

नकारात्मक विचार हमेशा चिंता, भय, निराशा, तनाव व शरीर के प्रत्येक अवयव की सामान्य कार्यप्रणाली में बाधक बनते हैं। अच्छे विचारों से अवचेतन मन को भावित करने से मनचाहा स्वास्थ्य अर्जित किया जा सकता है। अच्छे विचारों से ही अच्छी सेहत पा सकने में सक्षम बन सकते हैं। जब हमें अच्छे सोचने से असीमित लाभ प्राप्त होता है तो फिर स्वयं के लिए व दूसरों के लिए बुरा क्यों सोचें।

-जय श्री टी. कंपनी
नन्दी शाही, कटक (उड़ीसा)

डॉ. अनामिका प्रकाश

खाद्य पदार्थों की पौष्टिकता बचाएं

अधिकतर परिवारों में खाद्य पदार्थों पर घर के बजट का एक बड़ा हिस्सा खर्च किया जाता है। बाजार से खरीदते समय हम खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता पर तो ध्यान देते हैं, किन्तु भोजन बनाते समय उनमें उपस्थित पोषक तत्वों की मात्रा को नजरअंदाज कर देते हैं। प्राय: भोजन पकाने से पूर्व तथा पकाने की प्रक्रिया के दौरान कई पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। जिन्हें जरा-सी सावधानी से नष्ट होने से बचाया जा सकता है।

चीनू की नानी हमेशा सब्जियों को छीलने तथा काटने के बाद ही पानी से धोती हैं। ऐसे ही रेखा भाभी जब भी दाल-चावल बनाती है, तो बनाने से पहले बहुत बार दाल-चावल को पानी से धोती है और भी कई घरों में भोजन इसी प्रकार की त्रुटिपूर्ण विधियों से बनाया जाता है। फलस्वरूप भोज्य पदार्थों के पोषक तत्व जैसे विटामिन, खनिज तत्व आदि नष्ट हो जाते हैं। यदि भोजन बनाते समय कुछ बातों पर ध्यान दिया जाए, तो खाद्य पदार्थों के पोषक तत्वों को नष्ट होने से रोका जा सकता है।

यदि सब्जियों को छीलने या काटने से पूर्व ही धो लिया जाए तो आप उनके विटामिन्स को नष्ट होने से बचा सकते हैं क्योंकि सब्जियों को छीलने तथा काटने के बाद धोने से उनमें उपस्थित विटामिन 'बी' तथा 'सी' 40 से 60 प्रतिशत तक व्यर्थ चले जाते हैं

इसी प्रकार दाल-चावल को बहुत बार धोने से उनके विटामिन बी-1 (थायमिन) तथा विटामिन बी-4 (नाइसनी) पानी में घुलकर बेकार चले जाते हैं। अत: उन्हें एक या दो बार पानी से धोकर पका लेना चाहिए। साथ ही उन्हें पकाने के लिए पानी का सीमित मात्रा में उपयोग करें।

सब्जियों को बहुत छोटे-छोटे टुकड़ों में नहीं काटना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से उपस्थित विटामिन्स एवं खनिज पदार्थ अधिक मात्र में ऑक्सीकृत होकर बेकार हो जाते हैं। सब्जियों को प्रेशर कुकर में पकाना चाहिएं ऐसा करने से उनमें उपस्थित विटामिन्स तथा खनिज पदार्थ उतनी मात्रा में नष्ट नहीं होते, जितने कि खुले बर्तनों में पकाने से होते हैं।

भोजन बनाने की परम्परागत आदतों के कारण भी पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। अधिकतर गृहिणियां गेहूं के आटे में से चोकर निकालने के बाद ही रोटी बनाती है परन्तु इसी चोकर में विटामिन-बी समूह उपस्थित होते हैं। अत: चोकर सहित आटे की रोटी बनाने से विटामिन 'बी' का उपयोग किया जा सकता है तथा बेरी-बेरी, छाले एवं चर्म रोगों से बचा जा सकता है। खाद्य पदार्थों को 70 डिग्री सेल्सियस ताप से अधिक ताप पर अधिक समय तक गर्म करने से उसका प्रोटीन कड़ा हो जाता है, जो पाचन के बाद भी उसी अवस्था में बना रहता है तथा हमारी आंतें ऐसे प्रोटीन का अवशोषण नहीं कर पाती। अत: भोजन बनाते समय या बने हुए भोजन को बार-बार अधिक देर तक गर्म नहीं करना चाहिए।

यह ध्यान रखें कि भोजन पकाने में खाने के सोडे का उपयोग न करें क्योंकि इससे भोज्य पदार्थों में उपस्थित विटामिन 'सी' (एसकॉर्बिक अम्ल) नष्ट हो जाता है। भोजन बनाने के दौरान इमली, अमचूर या टमाटर का उपयोग करना चाहिए। ऐसा करने से भोज्य पदार्थों के पोषक तत्व नष्ट नहीं होते हैं।

सब्जियां पकाने के बाद यदि पानी बच जाए तो उसे फेंकने के बजाए दाल के सूप में डालकर उपयोग करना चाहिए। इससे विटामिन्स एवं खनिज पदार्थ व्यर्थ होने से बच जायेंगे।

इस प्रकार भोजन बनाने के दौरान थोड़-सी सावधानी रखकर खाद्य पदार्थों के पोषक तत्वों को नष्ट होने से बचाया जा सकता है।

–विभावरी, जी-9, सूर्यापुरम
नन्दनपुरा, झांसी-284003 (म.प्र.)

लम्बी आयु के लिए जीवनशैली में बदलाव जरूरी

सुप्रिया

आधुनिक जीवन बहुत ही तेज, तनाव व भागदौड़ वाला हो गया है, यदि सावधानी न रखी जाए, स्वास्थ्य संबंधी नियमों का पालन न किया जाए तो जीवन की अवधि कम हो सकती है। अत: लापरवाही त्यागकर स्वास्थ्य संबंधी नियमों का पालन करें।

- आज के युग में हर व्यक्ति मानसिक तनाव से ग्रस्त है, व्यर्थ की चिंता व भविष्य की चिंता से आशंकित व आर्तकित है, जबकि चिंता तो किसी समस्या का समाधान हो ही नहीं सकती है।
- प्रात:काल जल्दी उठने का प्रयास करें तत्पश्चात घूमने जाना चाहिए, व्यायाम करें, यदा-कदा मालिश करें, फिर स्नान करना चाहिए।
- नाश्ता हटकर कीजिए, दो भोजन के बीच कुछ खाए। आहार साधारण किन्तु पौष्टिक व ताजा होना चाहिए।
- शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। दर्द निवारक व अन्य दवाइयां आवश्यकता होने पर ही इस्तेमाल करनी चाहिए। सर्दी, खांसी, जुकाम, सिरदर्द होने पर गोलियों का सेवन नहीं करना चाहिए, अपितु घरेलू नुस्खे ही अपनाने चाहिए।
- कार्य की अधिकता होने पर चाहे कार्यालय हो या घर या अन्य कोई भी जगह हो घबराने की आवश्यता नहीं है। एक-एक कार्य को उसकी आवश्यकता व प्राथमिकता के आधार पर करते जाएं।
- अवकाश के क्षणों में सुबह-शाम समाचार पत्र पढ़े समाचार सुनें। अच्छी पुस्तकें पढ़ें। इससे मन व मस्तिष्क चिंतामुक्त रहता है।
- पास पड़ोस में व्यर्थ की गपशप करने के बजाय अपने बच्चों पर ध्यान दें।

–विभावरी, जी-9, सूर्यापुरम
नन्दनपुरा, झांसी-284003 (म.प्र.)

अध्यक्षीय

मनीष जैन

नयी सोच के ढर्रे में ढलें

जीवन में कुछ अच्छा काम करना चाहता हूं। जो कुछ जिंदगी ने दिया है उसके बदले समाज को कुछ लौटाना चाहता हूं। अपने सामर्थ्य के भीतर ही सही थोड़ा बहुत दान भी करना चाहता हूं। जब हम किसी सेवामूलक जनकल्याणकारी योजना के लिए लोगों से मिलते हैं और उनसे सहयोग की अपेक्षा रखते हैं तो इस प्रकार की स्वीकारोक्ति सुनने को मिलती है।

प्रश्न है कि क्या सचमुच कुछ अच्छा करना, कुछ दे पाना जिंदगी से इतना लंबा इंतजार मानता है? क्या देने का यह सुख धनी या प्रसिद्ध होने पर ही प्राप्त हो सकता है? इसे प्राप्त करने के लिए क्या वाकई अतिरिक्त धनराशि होना जरूरी है? मेरी दृष्टि में देने का सुख पाने के लिए दोनों ही स्थितियां जरूरी नहीं है। इसके लिए जरूरी है आपकी सोच को नये ढर्रे में ढालने की। जैसे-जैसे हमारे जीवन में दूसरों को स्थान मिलेगा, वैसे-वैसे हमारी सोच इस ढ़र्रे में ढ़लती चली जायेगी।

लोग हमारी स्तुति करे तो अच्छा लगता है, हमारी बात सुने तो हमें अच्छा लगता है, हमारा अभिप्राय पूछे तो हमारा सीना फूलने लगता है, हमारा सहयोग मांगे तो हमें अपने महत्व का ख्याल एकदम आ जाता है। लेकिन नई सोच में स्वयं को ढ़ालने के लिए जरूरी है कि अब हम दूसरों का सहयोग लेना, दूसरों की बात सुनना, दूसरों का अभिप्राय जानना और प्रसंग आने पर पूरे दिल से दूसरों की प्रशंसा करना हमें सीखना चाहिए।

नये सोच के ढ़र्रे में ढ़लने के लिए जरूरी है कि हम सेवा के नाम पर स्वार्थ साधने की कुटिल वृत्ति कभी न रखे। स्वार्थ-त्याग प्रगति की आवश्यक शर्त है। इस बात पर धर्म, विज्ञान, शिष्टाचार और मनोविज्ञान सभी एकमत हैं। मनुष्य यदि अपने चारों ओर फिरता रहेगा तो वह चक्कर खाकर गिर पड़ेगा, लेकिन दूसरों के आस-पास फिरेगा तो प्रगति की ओर बढ़ता रहेगा।

वॉरेन बफेट से पूछा गया कि आपने अपना लगभग सारा धन दान में देना तय क्यों किया तो उन्होंने कहा, ''मेरा उपहार तो कुछ भी नहीं है। मेरे पास जरूरत के मुताबिक सब कुछ है। अपनी कुल संपत्ति का 10 प्रतिशत से भी कम हिस्सा पर्याप्त होगा। मुझे जरूरत से ज्यादा काफी फल मिला है। मैं अतिरिक्त संपत्ति लौटा रहा हूं, लेकिन इस दावे का मेरे लिए कोई महत्व नहीं है।'' देने की इससे बेहतर कोई कल्पना नहीं हो सकती। मेरी दृष्टि में यही विसर्जन है। वे सच्चे अपरिग्रही हैं। महावीर ने कहा है कि संसार में आत्मकल्याण के लिए एक-दूसरे का सहयोग परमावश्यक है। कोई भी प्राणी अकेला चल नहीं सकता, उसको दूसरे की सहायता अवश्य चाहिए। इसलिए सदा एक-दूसरे के सहायक बनें। वस्तुतः हम दूसरों की सहायता करते हुए या दूसरों के प्रश्नों को हल करते हुए अपनी सहायता स्वयं कर लेते हैं या अपने प्रश्नों का हल पा लेते हैं, जबकि स्वार्थ में या अपने ही प्रश्नों में उलझे रहने से दुनिया के प्रश्नों में एक और की बढ़ोतरी हो जाती है।

परोपकार करते हुए आप भौतिक के साथ बहुत कुछ आत्मिक भी देते हैं। आप जिस भाव के साथ देते हैं वही आपके लिए परोपकार की सच्ची आत्मा है। यह भाव उसकी ऊर्जा है। जब आप खुशी से देते हैं तो जो ऊर्जा आप आगे भेजते हैं वह सकारात्मक होती है, लेकिन यदि आप खुशी के अभाव या किसी सामाजिक दबाव में आकर परोपकार करते हैं तो यही शक्ति नकारात्मकता में तब्दील हो जाती है। ऐसे में आप परोपकार के नाम पर कुछ करने की औपचारिकता मात्र कर रहे होते हैं, सच्चा परोपकार नहीं। ''मेरी अपनी ही इतनी समस्याएं हैं कि दूसरों का विचार करने का मुझे अवकाश नहीं है।'' यह स्वार्थ का दर्शन है, नकारात्मक सोच है। ऐसे में जो परोपकार आप कुछ अच्छा करने के लालच में कर रहे होते हैं दरअसल वह अपने साथ नकारात्मकता लेकर जाता है। जबकि दुनिया में इतने अधिक महान और तात्कालिक प्रश्न हल हुए बिना पड़े हैं कि मेरे प्रश्न के विचार की बारी अभी आई ही नहीं—यह सकारात्मक सोच है, परोपकार के इर्द-गिर्द का दर्शन है। अपने किये परोपकार से जो ऊर्जा आप स्थानांतरित करते हैं वह उस भौतिक उपहार से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। परोपकार के कृत्य की खुशबू इसमें शामिल होने वाली खुशी है, रूप चाहे जो हो। जब आप प्रसन्नता व आनंद के साथ कुछ देते हैं, तो आप अपने उपहार को सौभाग्य व सुख के आशीष से ओत-प्रोत कर रहे होते हैं। ऐसे में जिसे यह प्राप्त होगा उसका समृद्ध होना निश्चित है। जो आप बोते हैं वही काटते भी हैं। जिस ऊर्जा को आप आगे भेजते हैं, वही आपके पास लौटकर आती है, इसलिए जब कभी परोपकार करें, उसे उसकी सम्पूर्णता के साथ कीजिए। परोपकार की दुनिया प्रेम और मैत्री, विश्वास और उदारता तथा जीवन और उल्लास की सृष्टि है। नये सोच के ढ़र्रे में ढ़लने के लिए जरूरी है कि हम दूसरों के लिए उपयोगी बनें। दूसरों के जीवन को धन्य बनाते हुए हमारा अपना जीवन तो स्वतः ही धन्य बन जायेगा। ■

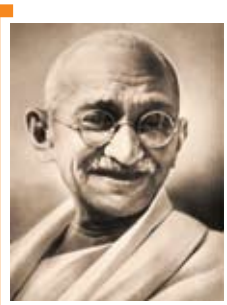

एक चोरी करता है, एक चोरी में मदद करता है, एक चोरी का इरादा करता है, तीनों चोर हैं।

यज्ञमय जीवन कला की पराकाष्ठा है। इसी में सच्चा रस और सच्चा आनंद है। जो यज्ञ बोझ रूप मालूम होता है, वह यज्ञ नहीं है।

—महात्मा गांधी

INDIAN CHARITY & WELFARE EXCHANGE

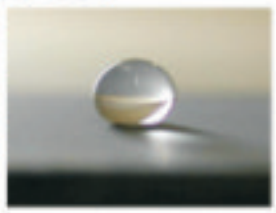

The mission of ICWE is to achieve Global Excellence in philanthropic services and to dedicate ourselves for worldwide Donor-Beneficiary Exchange, keeping in the view the needs and interests of the society.

ICWE is committed to:-

- The society by making a sustainable difference in the life of the less privileged children, women, aged, disabled people and of those who are living in poverty & injustice.
- Works as an Exchange between donor and beneficiary to facilitate their objectives and to support them in identifying the potential donor or beneficiary and the opportunities that each side offers to the other side.
- Provide philanthropic advisory services to donors and NGOs to help them in their aims & objectives and to perform their work properly so that they can achieve their ultimate goal of serving the underprivileged sections of the society.
- Maintain a worldwide accessible data bank of NGOs, Donors and Beneficiaries to make this field more collaborative.

Advisory Services

ICWE with its highly qualified and focused team of Professionals provides specialized and valuable advisory services to NGOs, Trusts, Corporate and other philanthropic organizations on the following areas :

- Legal
- Financial
- Management
- Project
- Fund Raising
- Event Management

ICWE Care for All

ICWE is committed to serving various social causes. It launches various programs for the underprivileged sections of the society. Its key areas are:

- Children
- Women
- Aged People
- Disabled
- Education
- HIV

Register with us

Donor: ICWE provides a global platform to Donors to identify a cause that is appropriate for their support.

Beneficiary : ICWE provides financial assistance to Individual and Institutional beneficiaries. It also provides a platform for them to search and approach potential donor for their cause.

Please register on our website and explore the world of philanthropy.

Contact Us

Indian Charity & Welfare Exchange

A56/A First Floor, Lajpat Nagar II,
New Delhi - 110024 [India]

Phone : +91-11-41720778
Fax : +91-11-29847741
www.indiancharityexchange.com
info@indiancharityexchange.com

Delhi Postal Regd No. DL(E)-20/5333/2010-2012
Date of Posting: 5 - 6 Every month

RNI No. DELBIL/2010/32807
February 2011

सुखी परिवार अभियान के प्रणेता
युवा मनीषी, चिंतक, साधक एवं समाज-सुधारक

गणि राजेन्द्र विजयजी म.सा.

के पांच सौ आयंबिल तप के पारणे एवं उन्हीं के सपनों के आकार लेते

एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय

के लोकार्पण के अवसर पर
हार्दिक शुभकामनाएं,
मंगल भावनाएं एवं
शत शत नमन!

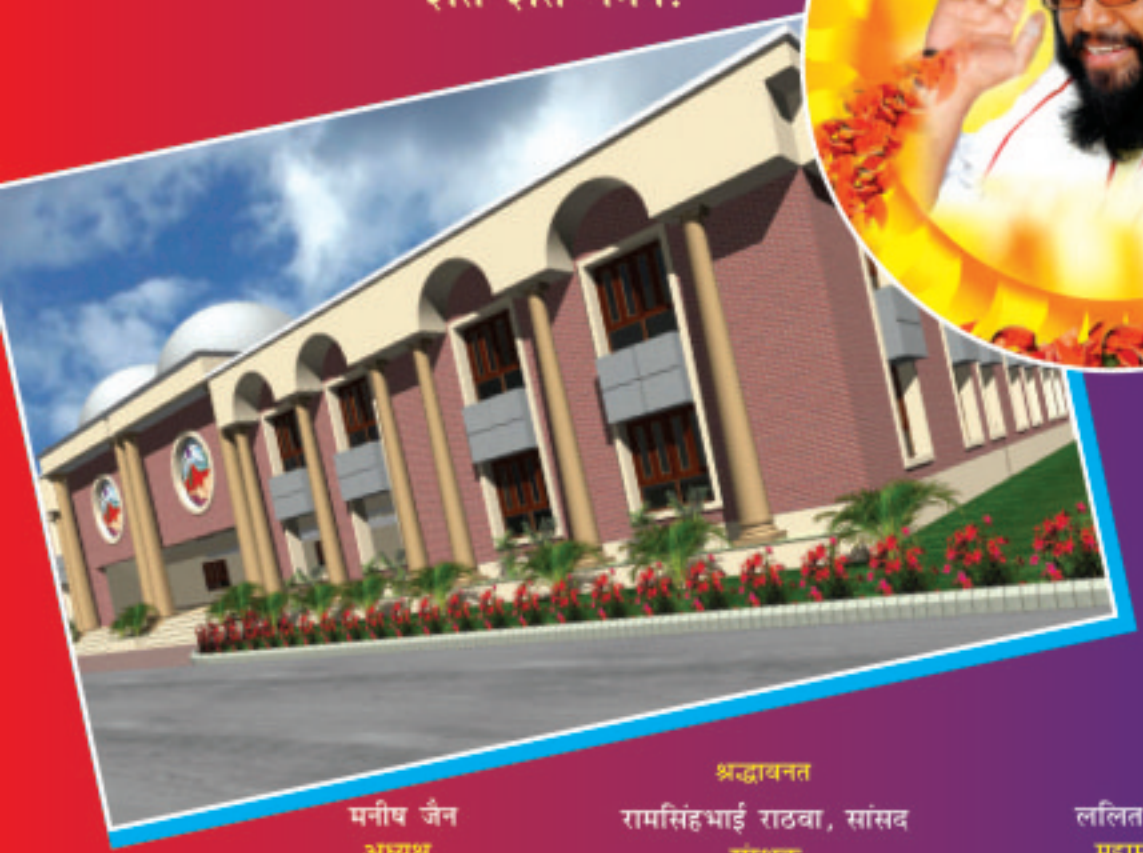

श्रद्धावनत

मनीष जैन
अध्यक्ष

रामसिंहभाई राठवा, सांसद
संरक्षक

ललित गर्ग
महामंत्री

सुखी परिवार फाउंडेशन नई दिल्ली

ईश्वरभाई राठवा
अध्यक्ष

विजयभाई राठवा
महामंत्री

सुखी परिवार फाउंडेशन गुजरात शाखा

तरसचंद जैन
अध्यक्ष

मुकेश अग्रवाल
महामंत्री

सुखी परिवार फाउंडेशन पूर्वी दिल्ली शाखा

विकेश जैन (मुम्बई), कानन भावसार (बड़ोदा), रमेशभाई, मयूरभाई, अमरसिंह भाई

संपादक "समृद्ध सुखी परिवार", ई–253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट, 25 आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली–110092 के लिए ललित गर्ग द्वारा प्रकाशित एवं बुकमैन प्रिन्टर्स, ए–121, विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली–110092 द्वारा मुद्रित।